प्रस्तावना।

सुखविपाक, विपाकसूत्र का दूसरा स्कन्ध है। इस के दश अध्ययनों में दश कुमारों की कथाओं द्वारा पुण्य का साक्षात् फल स्वर्गादि की प्राप्ति और परंपरा फल मोक्ष की प्राप्ति बताया गया है। इसकी पूर्णता ज्ञाता धर्मकथाङ्ग औपपातिक रायपसेनी भगवती आदि के पाठों से की गई है। इसलिये सुखविपाक सूत्र अब तक बहुत संक्षिप्त मिलता था। प्रायः सब प्रतियों में किस जगह का कितना पाठ लेना चाहिए, ऐसी सूचनामात्र रहती थी। इससे पाठकों को उतना लाभ न होता था जितना होना चाहिए। फलतः पाठकों को इसके पूर्ण लाभ से वंचित रहना पड़ता था। इस कमी की पूर्ति करने के लिये हमने एक प्राचीन प्रति के आधार से संस्कृत प्राकृत न जानने वाले पाठकों के लाभ के लिये हिंदी में अनुवाद कराकर प्रकाशित करने का विचार किया था। हर्ष है, आज हमारा विचार सफल हुआ और आपके सामने इसे रखने का अवसर प्राप्त हुआ।

पाठकों के सुभीते के लिये, जो पाठ जहां से लिये गये हैं, उनका टिप्पणी में उल्लेख कर दिया है। टिप्पणी में सूत्रों की पृष्ठ पंक्ति आगमोदय समिति के सूत्रों के अनुसार दी गई है।

अन्त में निवेदन है, कि यदि अनुवाद आदि में कोई त्रुटि रह गई हो, तो विज्ञ पाठक सुधार लेवें। और कृपया हमें सूचना देदेवें, ताकि अगली आवृत्ति में उनका सुधार कर दिया जाय। इत्यलम्

निवेदक—

सेठिया जैन ग्रंथालय
बीकानेर
28—7—26

भैरोंदान जेठमल सेठिया

## ॥ अथ श्री सुखविपाकसूत्र का विषयानुक्रमणिका। पृष्ठाङ्क

। इति प्रथम अध्ययन।

गव–



पुस्तक मिलने का पता—

अगरचन्द भैरोंदान सेठिया, बीकानेर

जैन शास्त्र भण्डार

बीकानेर (राजपूताना)।

श्रीवीतरागाय नमः

# श्री सुखविपाक—सूत्रम्

॥ अर्हं ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सोहम्मे समोसढे जंबू जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी— जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पण्णत्ते सुह-विवागाणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झ-यणा पण्णत्ता। तंजहा-सुबाहू १ भद्दनंदी य २, सुजाए य ३, सुवासवे ४। तहेव जिणदासे ५, धणपती य ६ महब्बले ७ ॥१॥ भद्दनंदी ८ महचंदे ९ वरदत्ते १० ॥

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं जाव के अट्ठे पण्णत्ते? तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था रिद्धित्थिमि-यसमिद्धे, तस्स णं हत्थिसीसस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसी-भाए एत्थणं पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वोउय०, तत्थणं कयवण-मालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था दिव्व०, तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू णामं राया होत्था महया० वण्णओ, तस्स णं अदीण-सत्तुस्स रण्णो धारिणीपामुक्ख देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था। तते णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुमिणे पासइ जहा मेहस्स जम्मणं तहा भाणियव्वं। सुबाहुकुमार

जाव अलं भोगसमत्थं वावि जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं करावेंति, अब्भुग्गय० भवणं एवं जहा महाबलस्स रण्णो, णवरं पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नासयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति, तहेव पंचसइओ दाओ जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा निग्गया अदीणसत्तू जहा कूणिओ तहेव निग्गओ सुबाहूवि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए जाव धम्मो कहिओ राया परिसा पडिगया । तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति जाव एवं वयासी–सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं० जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिइओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह । ततणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहति, जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव एवं वयासी–अहो णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते ५ पिए ५ मणुण्णे ५ मणामे २ सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे बहुजणस्सवि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे सोमे ४ साहुजणस्सवि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ जाव सुरूवे । सुबाहुणा भंते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमण्णागया ? के वा एस आसी पुव्वभवे ? । एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णगरे होत्था रिद्ध०, तत्थ णं हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे० । तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा णामं थेरा जातिसंपन्ना जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णगरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं

उगिगहित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। तेणं काले णं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव लेस्से मास मासेण खममाणे विहरति। तए णं से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति, जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे (सुहम्म) थेरे आपुच्छति जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावतिस्स गेहे अणुपविट्ठे। तए णं से सुमुहे गाहावती सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठे आसणातो अब्भुट्ठेति २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति २ त्ता पाउयाओ ओमुयति २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति २ त्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता वंदति णमंसति २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सयहत्थेणं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेस्सामाति तुट्ठे पडिलाभेमाणेवि तुट्ठे पडिलाभिएवि तुट्ठे। तते णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे, गेहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तंजहा-वसुहारा वुट्ठा १ दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिते २ चेलुक्खेवे कए ३ आहयाओ देवदुंदुहीओ ४ अंतरा वि य णं आगासंसि अहो दाणमहो दाणं घुट्ठे य ५। हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४- धन्ने णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावइ सुकयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धे णं मणुस्से जम्मे सुकयरिद्धी य जाव तं धन्ने णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई। तते णं से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे णगरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने। तते णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ सीहं पासति, सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासाए विहरति। तं एवं खलु गोयमा! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया। पभू णं भंते! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए? हंता पभू। तते णं से भगवं गोयमे समणं भगवं

१ सुम्मे थेरे ति धम्मघोषस्थविरान्तिके, धनशब्दमाधाम्र्यान्ब्रह्मस्यापकात्-वात्। इति टीका।

हावीर पदंति नमसति २ त्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावमाणे विह- ति । तते णं से समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ हत्थिसीसाओ णगराओ पुप्फकरंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खा- यणाओ पडिणिक्खमति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरति । तते णं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाते अभिगयजीवाजीवे जाव पडि- लाभेमाणे विहरति । तते णं से सुबाहुकुमारे अन्नया कयाइ चाउद्दसट्ठ- मुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति २ त्ता पोसहसालं पमज्जति २ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहति २ त्ता दब्भ- संथारं संथरइ २ त्ता दब्भसंथारं दुरूहइ २ त्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विह- रति । तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पज्जे-धन्ना णं ते गामागरणगर जाव सन्निवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे जाव विह- रति, धन्ना णं ते राईसरतलवर० जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयंति धन्ना णं ते राईसरतलवर० जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जंति धन्ना णं ते राईसर जाव जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सुणेंति, तं जति णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा जाव विहरिज्जा तते णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा। तते णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णगरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावमाणे विहरति, परिसा राया निग्गया। तते णं तस्स सुबा- हुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया । तते णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ जहा मेह तहा अम्मापियरो आपुच्छति , णिक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाते ईरियासमिए जाव बंभयारी तते णं से सुबाहू

अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारुवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जति २ त्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्टम० तवोविहाणेहिं अप्पाण भावित्ता बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अप्पाण झूसित्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, से ण ततो देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिति २ त्ता केवल बोहिं बुज्झिहिति २ त्ता तहारुवाण थेराण अतिए मुडे जाव पव्वइस्सति, से ण तत्थ बहूइ वासाइ सामण्ण परियाग पाउणिहिति आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते काल करिहिति सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति से ण तओ देवलोगाओ माणुस्स पव्वज्जा बभलोए ततो माणुस्स महासुक्के ततो माणुस्स आणते देवे ततो माणुस्स ततो आरणे देवे तता माणुस्स सव्वट्ठसिद्धे, से ण ततो अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाव अड्ढाइ जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति ५ जाव एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ॥ पढम अज्झयण समत्त ॥१॥

बितियस्स ण उक्खेवो—एव खलु जम्बू! तेण कालेण तेण समएण उसभपुरे णगरे थूभकरडउज्जाणे धन्नो जक्खो धणावहो राया सरस्सई देवी सुमिणदसण कहण जम्मण बालत्तण कलाओ य जुव्वणे पाणिग्गहण दाओ पासाद० भोगा य जहा सुबाहुस्स, नवर भद्दनदी कुमारे सिरि देवीपामोक्खाण पचसया सामी समोसरण सावगधम्म पुव्वभव पुच्छा महाविदेहे वासे पुडरीकिणी णगरी विजयते कुमारे जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए माणुस्साउए निबद्धे इह उप्पन्ने, सेस जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमत करेहिति ॥ बितिय अज्झयण समत्त ॥२॥

तच्चस्स उक्खेवो—वीरपुर णगर मणोरम उज्जाण वीरकण्हे जक्खे मित्ते राया सिरी देवी सुजाए कुमारे बलसिरिपामोक्खा पचसयकन्ना सामी समोसरण पुव्वभवपुच्छा उसुयारे नयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अणगार पडिलाभिए मणुस्साउए निबद्धे इह उप्पन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ५॥ तइय अज्झयण समत्त ॥३॥

चोत्थस्स उक्खेवो—विजयपुर णगर णदणवण [मणोरम] उज्जाण

असोगो जक्खो वासवदत्ते राया कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भद्दापामो-क्खा ण पचसया जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी धणपाले राया वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे ॥ चोत्थ अज्झयण समत्त ॥४॥

पचमस्स उक्खेवओ सोगंधिया णगरी नीलासोए उज्जाणे सुकालो जक्खो अप्पडिहओ राया सुकन्ना देवी महचदे कुमारे तस्स अरह-न्दत्ता भारिया जिणदासो पुत्तो तित्थयरागमण जिणदासपुव्वभवो मज्झ-मिया णगरी मेहरहो राया सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ ॥ पचम अज्झयण समत्त ॥५॥

छट्ठस्स उक्खेवओ— कणगपुर णगर सेयासोय उज्जाण वीरभद्दो जक्खो पियचदो राया सुभद्दा देवी वेसमणे कुमारे जुवराया सिरिदेवी पामोक्खा पचसया कन्ना पाणिग्गहण तित्थयरागमण धनवती जुवरा-यपुत्ते जाव पुव्वभवो मणिवया नगरी मित्तो राया सभूतिविजए अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ छट्ट अज्झयण समत्त॥ ६ ॥

सत्तमस्स उक्खेवो—महापुर णगर रत्तासोग उज्जाण रत्तपाओ जक्-खो बले राया सुभद्दा देवी महब्बले कुमारे रत्तवईपामोक्खाओ पचसया कन्ना पाणिग्गहण तित्थयरागमण जाव पुव्वभवो मणिपुर णगर णागदत्ते गाहावती इन्दपुत्ते अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ सत्तम अज्झयण समत्त ॥७॥

अट्ठमस्स उक्खेवो— सुघोस णगर देवरमणउज्जाण वीरसेणो जक्खो अज्जुणो राया तत्तवती देवी भद्दनन्दी कुमारे सिरिदेवीपामोक्खा पचसया जाव पुव्वभवे महाघोस णगर धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ अट्ठम अज्झयण समत्त ॥ ८ ॥

णवमस्स उक्खेवो—चपा णगरी पुण्णभद्दे उज्जाणे पुण्णभद्दो जक्खो दत्ते राया रत्तवई देवी महचदे कुमारे जुवराया सिरिकतापामोक्खा ण पच सया कन्ना जाव पुव्वभवो तिगिच्छी णगरी जियसत्तू राया धम्म-वीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ नवम अज्झयण समत्त ॥९॥

जति ण दसमस्स उक्खेवो—एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण साएए नाम नयर होत्था उत्तरकुरुउज्जाणे पासमिओ जक्खो मित्तनन्दी राया सिरिकता देवी वरदत्ते कुमारे वरसेणापामोक्खा ण पच-देवीसया तित्थयरागमण सावगधम्म पुव्वभवो पुच्छा सत्तदुवारे नगरे विमलवाहणराया धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए समाणे परित्तीकए

मणुस्साउए निबद्धे इह उप्पन्ने सेस जहा सुबाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पव्वज्जा कप्पतरम्मि जाव सव्वट्ठसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढप इणा जाव सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदु- क्खाणमंतं करेहिति॥ एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सेवं भंते! सेवं भंते! सुहविवागा ॥ ॥ दसमं अज्झयणं समत्तं ॥ १० ॥

नमो सुयदेवयाए-विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा दुहविवागो य सुह विवागो य, तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एकसरगा दससु चेव दिव- सेसु उद्दिसिज्जति, एवं सुहविवागो वि सेसं जहा आयारस्स ॥ इति एक्कारसमं अंगं समत्तं ॥

॥ श्रीरस्तु ॥

पुस्तक मिलने का पता—

अगरचंद भैरोंदान सेठिया,
मोहल्ला मरोटियों का
बीकानेर (राजपूताना)

श्रीवीतरागाय नमः

# सुख-विपाक-सूत्रम्

## (हिन्दी-भावार्थसहितम्)

**मूलम्**— तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णगरे गुणसीले चेइए होत्था । वण्णओ— ॥ १ ॥

**भावार्थ**— इस अवसर्पिणी कालके चौथे आरे में उस समय (जब कि भगवान् महावीर स्वामी, और वह राजा विद्यमान था) राजगृह नामका नगर था। उसमें गुणशील नामका चैत्यालय—व्यन्तरायतन था। उसका वर्णन आगे कहे अनुसार समझ लेना चाहिए ॥ १ ॥

**मूलम्**— * तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे णामं थेरे जातिसंपन्ने कुलसंपन्ने बलरूवविणयणाणदंसणचरित्तलाघवसंपन्ने ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियइंदिए जियनिद्दे जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे एवं करणचरणनिग्गहणिच्छयअज्जवमद्दवलाघवखंतिगुत्तिमुत्तिविज्जामंतबंभवेयनयनियमसच्चसोयणाणदंसणचरित्तउराले घोरे घोरव्वए घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेउलेस्से चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगते, पंचहिं अणगारसए

---

* ज्ञातासूत्र के सूत्र ८ से प्रारंभ

**हिं सद्धिं संपरिवुडे,पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगाम दूइज्जमाणे, सुहंसुहेण विहरमाणे जेणेव रायगिहे णगरे, जेणेव गुणसीले चेइए तेणामेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता अहा पडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। ॥ २ ॥**

**भावार्थ**—उस आरे के उस समय में, श्रमण भगवान् महावीर के शिष्य आर्य सुधर्माचार्य, जो कि उत्तम जाति और उत्तम कुलवाले,बल रूप -शरीर की आकृति विनय ज्ञान दर्शन चारित्र और लाघव– अर्थात् थोड़ी उपाधि रखनेवाले और तीन गारवों के त्याग–सहित थे। उनका मन सदा उन्नत, शरीर तेजस्वी और वचन बड़े प्रभावशाली थे। वे यशस्वी, क्रोध मान माया लोभ को जीतने वाले, पाचों इन्द्रियों को वशमें करने वाले, तथा निद्रा और परीषह को जीतने वाले थे। उन्हें न जीते रहने की लालसा थी न मरण का डर। तप ही उनका साध्य या तपके द्वारा प्रधान, और संयमादि गुणों के द्वारा प्रधान थे। पिण्डशुद्धि आदि तथा मनिधर्म (महाव्रत) के अनुष्ठान और विनय में तत्पर थे। आर्जव–निष्कपटता, मार्दव— निरभिमानता, लाघव, क्षमा, गुप्ति और मुक्ति– निर्लोभता–से युक्त थे। विद्या, मंत्र और ब्रह्मचर्य से युक्त, वेद–लौकिक और लोकोत्तर आगम, तथा नय आदि को जानने वाले, अभिग्रह आदि नियमों को पालने वाले, सत्य, शौच— द्रव्य से निर्लेप तथा भाव की अपेक्षा समाचारी—का पालन करने वाले,ज्ञान दर्शन चारित्र में प्रधान,राग द्वेष परिषह आदि को जीतने वाले, घोर व्रतों को पालने वाले, घोर तपस्या करने वाले, घोर ब्रह्मचर्य पालन वाले, शरीर की शुश्रूषा आदि न करने वाले, अपनी विस्तृत तेजोलेश्या को संक्षिप्त करने–काम में न लाने–वाले, चौदह पूर्वों के ज्ञाता, मति श्रुत अवधि और मन पर्याय ज्ञानों से युक्त, पांचसौ शिष्यों से घिरे हुए, एक दूसरे के आगे पीछे चलते हुए, आनन्द से क्रमशः

अनेक गावों में विहार करते हुए,उस राजगृह नगर के उसी गुणशील नामक चैत्यालय में पधारे । पधार कर, मुनियों के योग्य स्थान पाकर संयम और तप से आत्म-भावना करते हुए सुख से विहार करने लगे ॥ २ ॥

**मूलम्— ततेणं रायगिहे नगरे परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ,परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया, तामेव दिसं पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजंबू णामं अणगारे कासवगोत्ते णं सत्तुस्सेहे, जाव अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगते संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तते णं से अज्जजंबू णामं अणगारे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले संजातसड्ढे संजातसंसए संजातकोउहल्ले,उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले,समुप्पन्नसड्ढे समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेति॥३॥**

**भावार्थ—** इसके अनन्तर, राजगृह नगर से एक जनसमुदाय (परिषद्) सुधर्मास्वामी की वन्दना करने के लिए आया। सुधर्मास्वामी ने उसे धर्म का उपदेश दिया। वह समुदाय जिस दिशासे— जिस तरफ से आया था, उसी दिशा— उसी तरफ चला गया। उसी काल के उसी समय में आर्य सुधर्माचार्य मुनिराज के सब से बड़े शिष्य, काश्यपगोत्रीय ७हाथके(यावत्)आर्य जम्बूस्वामी नामक स्थविर,सुधर्माचार्य के न बहुत दूर ही बैठे थे न बहुत पास ही,अर्थात् थोड़ी सा दूर बैठे थे,तथा ऊपर को घुटना और नीचा शिर करके—गोदुहासन से ध्यान रूपी कोठे में प्राप्त थे और संयम तथा तप के द्वारा आत्मा का ध्यान करते हुए विचरते थे। इसके बाद स्थविर जम्बूस्वामी को पदार्थों के जानने की इच्छा हुई। क्योंकि उन्हें यह सन्देह हुआ कि भगवान् महावीर ने जिस तरह दस अंगों का उपदेश दिया है, उसी तरह ग्यारहवें अंगका उपदेश दिया है, या और किसी प्रकार ? इस

तरह उन्हें संशय हुआ से उत्सुकता पैदा हुई। इस लिए वे (जम्बूस्वामी) वहां से उठ खड़े हुए ॥ ३ ॥

**मूलम्**— उट्ठाए उट्ठित्ता जेणामेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जसुहम्मे थेरे तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करइत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता अज्जसुहम्मस्स थेरस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासमाणे एवं वयासी— जइ णं भंते! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण सयंसंबुद्धेण पुरिसुत्तमेण पुरिससीहेण पुरिसवरपुंडरीएण पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगुत्तमेण लोगनाहेण लोगहिएण लोगपईवेण लोगपज्जोयगरेण अभयदएण सरणदएण चक्खुदएण मग्गदएण बोहिदएण धम्मदएण धम्मदेसएण धम्मनायगेण धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेण विअट्टछउमेण जिणेण जावएण तिण्णेण तारएण बुद्धेण बोहएण मुत्तेण मोयगेण सव्वण्णेण सव्वदरिसिणा सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तिय सासयं ठाणं मुवगतेण दुहविवागाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, सुहविवागाणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?॥४॥

**भावार्थ**— इस पर, जहां सुधर्माचार्य स्थविर थे वहां गये। जाकर सुधर्माचार्य की दक्षिण दिशा से तीन बार प्रदक्षिणा ( परिक्रमा )

१ जायसड्ढे उप्पन्नसड्ढे सभु [illegible] का [illegible] भिन्न अर्थ नहीं है, किन्तु हेतुहेतुमद्भाव बताने के लिए इनका भिन्न प्रयोग किया गया है। जम्बू स्वामी को श्रद्धा उत्पन्न हुई, इस कारण वह श्रद्धा प्रवृत्त हुई। श्रद्धा [illegible] जानने की इच्छा हुई क्योंकि संशय हुआ, संशय इस कारण हुआ कि उत्सुकता है।

२ दोनों का पाठ समान।

की। प्रदक्षिणा करके स्तुति और नमस्कार किया। स्तुति और नमस्कार करके आर्य सुधर्माचार्य स्थविर से थोड़ी सी दूर पर, सेवा करते हुए और नमस्कार करते हुए सामने बैठे। सुनने की इच्छा करके और हाथ जोड़कर विनयपूर्वक इस प्रकार बोले—हे भगवन्! श्रुत धर्म की आदि करने वाले अर्थात् आचार आदि सूत्रों के आदि उपदेशक, तीर्थङ्कर, अपने आप ही ज्ञान प्राप्त करने वाले, समस्त पुरुषों में रूपादि अतिशयों की अपेक्षा उत्तम, वीरता आदि गुणों में पुरुषों में सिंह के समान, पुरुषों में पाप आदि से रहित होने में पुण्डरीक—श्वेत कमल के समान, पुरुषों में गन्धहस्ती के समान, (जिस तरह गन्धहस्ती की गन्ध से सब हाथी भाग जाते हैं उसी तरह जहां भगवान् जाते, वहां से ईति भीति तथा मिथ्यामतवादी के भाग जाने से भगवान् को गन्धहस्ती की उपमा दी जाती है) लोक में सब से श्रेष्ठ, लोक के नाथ, लोक (छह जीव निकाय) का हित करने वाले, श्रद्धावान् पञ्चेन्द्रिय जीवों को धर्म का उपदेश देने के कारण दीपक के समान, सूर्य के समान लोक में ज्ञान का प्रकाश करने वाले, जीवों को अभयदान देने वाले, नाना आपत्तियों में फँसे हुए जीवों को मोक्ष रूपी शरण देने वाले, श्रुतज्ञान रूपी चक्षु को देने वाले, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप मोक्षमार्ग को देने वाले, सम्यक्त्व तथा चारित्र रूपी बोधि को देने वाले, सामायिक आदि चारित्र-धर्म को देने वाले, श्रुत-चारित्र रूपी धर्म का उपदेश देने वाले, धर्म के नेता, धर्म रथ को चलाने के लिए सारथी के समान, जैसे चक्रवर्ती चारों दिशाओं में विजय पाता है उसी तरह, चारों गतियों पर विजय प्राप्त करने वाले, केवल ज्ञान और दर्शन को धारण करने वाले, शठता रहित, राग द्वेष को जीतने वाले, छद्मस्थों को राग द्वेष जिताने वाले, स्वयं तिरने वाले और दूसरों को तारने वाले तत्वज्ञान प्राप्त करने और कराने वाले, अनादि बाह्य परिग्रह और क्रोधादि अन्तरंग

परिग्रह को छोड़ने वाले, तथा दूसरों से छुड़ानेवाले, सर्वज्ञ और सर्वदर्शी, कल्याण स्वरूप अचल नीरोग अनन्त अक्षत बाधा रहित जिससे फिर नहीं लौटते ऐसे नित्यस्थान (मोक्ष) को प्राप्त होने वाले, श्रमण भगवान् महावीरने दुखविपाक का अर्थ कहा है, किन्तु हे पूज्य! उन श्रमण भगवान्ने मोक्ष को जाते हुए सुख विपाक का क्या अर्थ कहा है? ॥४॥

**मूलम्**—तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबूअणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। तं जहा—सुबाहु १ भद्दनंदी २ सुजाए ३ सुवासवे ४ तहेव जिणदासे ५ धणपती य ६ महब्बलो ७ भद्दनंदी ८ महचंदे ९ वरदत्ते १० ॥ ५ ॥

**भावार्थ**— जम्बू स्वामी का प्रश्न सुनकर सुधर्मास्वामी अनगार बोले–हे जम्बू! [यावत्] मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीरने सुखविपाक के दश अध्ययन बताए हैं। वे इस प्रकार हैं– १ सुबाहु २ भद्रनन्दी ३ सुजात ४ सुवासव ५ जिनदास ६ धनपति ७ महाबल ८ भद्रनन्दी ९ महचन्द्र तथा १० वरदत्त ॥ ५ ॥

**मूलम्**— जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स सुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥ ६ ॥

**भावार्थ**—[ जम्बू स्वामी बोले ]भगवन्! (यावत्)मुक्ति को प्राप्त हुए भगवान् ने सुखविपाक के दश अध्ययन कहे हैं। किन्तु हे भगवन्! उन मुक्ति को प्राप्त हुए भगवान ने उनमें से, पहिले अध्ययन में क्या बताया है? ॥ ६ ॥

**मूलम्**—तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबूअणगारं एवं वयासी–एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे

णामं णगरे होत्था। रिद्धित्थिमियसमिद्धे, पमुइयजणजाणवए, आइण्णजणमाणुस्से , हलसयसहस्ससंकिट्ठविकिट्ठलट्ठपण्णत्तसेउसीमे, कुक्कुडसंडेयगामपउरे, उच्छुजवसालिकलिए, गोमहिसगवेलगप्पभूते, आयारवन्तचेइयजुवइविविधसंणिविट्ठबहुले, उक्कोडियगायगंठिभेदयभडतक्करखंडरक्खरहिए, खेमे, णिरुवद्दवे, सुभिक्खे,वीसत्थसुहावासे, अणेगकोडीकोडुंबियाइण्णणिव्वुयसुहे, णडणट्टगजल्लमल्लमुट्ठियवेलंबगकहगपवगलासगआइक्खगलंखमंखतूणइल्लतुंबवीणियअणेगतालायराणुचरिए , आरामुज्जाणअगडतलागदीहियवप्पिणिगुणोववेए नंदणवणप्पगासे उव्विद्धविउलगंभीरखातफलिहे , चक्कगयमुसुंढिओरोहसयग्घीजमलकवाडघणदुप्पवेसे, धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्ते, कविसीसयवट्टरइयसंठियविरायमाणे, अट्टालयचरियदारगोपुरतोरणउण्णयसुविभत्तरायमग्गे , छेयायरियरइयदढफलिहइंदकीले , विवणिवणिच्छेत्तसिप्पियाइण्णणिव्वुयसुहे, सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरपणियावणविविहवत्थुपरिमंडिए, सुरम्मे, णरवइपविइण्णमहिवइपहे, अणेगवरतुरगमत्तकुंजररहपहकरसीयसंदमाणीआइण्णजाणजुग्गे विमउलणवणलिणिसोभियजले, पंडुरवरभवणसण्णिमहिए, उत्ताणणयणपेच्छणिज्जे, पासादीए, दरिसणिज्जे, अभिरूवे पडिरूवे। तस्स णं हत्थिसीसस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभागे एत्थ णं पुप्फकरंडे णाम उज्जाणे होत्था । सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे, रम्मे, नंदणवणप्पगासे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे, पडिरूवे, तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था ॥ ७ ॥ (१ उ० प्रारम्भ)

परिग्रह को छोडने वाले, तथा दूसरों से छुडाने वाले, सर्वज्ञ और सर्व दर्शी, कल्याण स्वरूप अचल नीरोग अनन्त अक्षय बाधा रहित जिससे फिर नहीं लौटते ऐसे सिद्धस्थान ( मोक्ष ) को प्राप्त होने वाले, श्रमण भगवान् महावीर ने दुखविपाक का अर्थ कहा है, किन्तु हे पूज्य ! उन श्रमण भगवान् ने मोक्ष को जाते हुए सुख विपाक का क्या अर्थ कहा है ? ॥४॥

**मूलम्—तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबूअणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता । तं जहा—सुबाहु १ भद्दनंदी २ सुजाए ३ सुवासवे ४ तहेव जिणदासे ५ धणपती य ६ महब्बलो ७ भद्दनंदी ८ महचंदे ९ वरदत्ते १० ॥ ५ ॥**

**भावार्थ—** जम्बू स्वामी का प्रश्न सुनकर सुधर्मास्वामी अनगार बोले–हे जम्बू ! [यावत्] मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने सुखविपाक के दश अध्ययन बताए हैं । वे इस प्रकार हैं– १ सुबाहु २ भद्रनन्दी ३ सुजात ४ सुवासव ५ जिनदास ६ धनपति ७ महाबल ८ भद्रनन्दी ९ महचन्द्र तथा १० वरदत्त ॥ ५ ॥

**मूलम्— जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता , पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ ६ ॥**

**भावार्थ—**[ जम्बू स्वामी बोले ]भगवन् !(यावत्)मुक्ति को प्राप्त हुए भगवान् ने सुखविपाक के दश अध्ययन कहे हैं । किन्तु हे भगवन् ! उन मुक्ति को प्राप्त हुए भगवान ने उनमें से, पहिले अध्ययन में क्या बताया है ? ॥ ६ ॥

**मूलम्—तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबूअणगारं एवं वयासी–एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे**

णाम णगरे होत्था। रिद्धेत्थिमियसमिद्धे, पमुइयजणजाणवए, आइण्णजणमाणुस्से , हलसयसहस्ससंकिट्ठविकिट्ठलट्ठपण्णत्तसेउसीमे, कुक्कुडसंडेयगामपउरे, उच्छुजवसालिकलिए, गोमहिसगवेलगप्पभूते, आयारवन्तचेइयजुवइविविधसंणिविट्ठबहुले, उक्कोडियगायगठिभेदयभडतक्करखंडरक्खरहिए, खेमे, णिरुवद्दवे, सुभिक्खे,वीसत्थसुहावासे, अणेगकोडीकोडुंबियाइण्णणिव्वुयसुहे, णडणट्टगजल्लमल्लमुट्ठियवेलंबगकहगपवगलासगआइक्खगलखमखतूणइल्लतुंबवीणियअणेगतालायराणुचरिए , आरामुज्जाणअगडतलागदीहियवप्पिणिगुणोववेए नंदणवणप्पगासे उव्विद्धविउलगंभीरखातफलिहे , चक्कगयमुसुढिओरोहसयग्घीजमलकवाडघणदुप्पवेसे, धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्ते, कविसीसयवट्टरइयसंठियविरायमाणे, अट्टालयचरियदारगोपुरतोरणउण्णयसुविभत्तरायमग्गे , छेयायरियरइयदढफलिहइंदकीले , विवणिवणिच्छेत्तसिप्पियाइण्णणिव्वुयसुहे, सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरपणियावणविविहवत्थुपरिमंडिए, सुरम्मे, णरवइपविइण्णमहिवइपहे, अणेगवरतुरगमत्तकुंजररहपहकरसीयसंदमाणीआइण्णजाणजुग्गे विमउलणवणलिणिसोभियजले, पंडुरवरभवणसण्णिमहिए, उत्ताणणयणपेच्छणिज्जे, पासादीए, दरिसणिज्जे, अभिरूवे पडिरूवे। तस्स णं हत्थिसीसस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभागे एत्थ णं पुप्फकरंडे णामं उज्जाणे होत्था। सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे, रम्मे, नंदणवणप्पगासे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे, पडिरूवे, तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था ॥ ७ ॥ (१ उ० प्रारम्भ)

**भावार्थ—**( जम्बु स्वामी के प्रश्न पर ) सुधर्माचार्य जम्बूस्वामीसे इस प्रकार कहने लगे हे जम्बु ! इस अवसर्पिणी के चौथे आरे के उस समय में हस्तिशीर्ष नाम का नगर था। वह नगर, अनेक भवनों से भूषित, भय रहित तथा धन धान्यादि से भरपूर था। वहा के रहने वाले लोग सदा प्रसन्न रहते थे। वह जन समूह से भरा था। किसानों ने लाखों हलों से अधिक सीमा वाली दूर तथा पास की सब जगह की जमीन को जोतकर बीज बोने योग्य बना लिया था। उस नगर में साड और मुर्गों के पालने वालों के बहुत से टोले रहते थे। वहा ईख जौ चावल आदि अनाजों की कमी न थी। बहुतसी गाय भैंसें और भेड थीं। वहा सुन्दर २ चैत्यालय और वेश्याओंके मुहल्ले भी बहुत थे। किंतु उस नगरमें लांच (घूस)लेने वालों उचक्कों लुटेरों चोरो चुंगीवालों का और राजाका उपद्रव नहीं था। किसीका बुरा नहीं होता था। भिक्षुकोंको भिक्षा बड़ी सुगमता से मिलती थी। इसलिए वहा विश्रामपात्र और निर्भय लोगों का शुभ निवास था। अनेक प्रकारके समान समृद्ध कुटुम्बियों और सन्तुष्ट लोगोंसे भरा था, इसलिए सुखरूप था। वहा नाटक करने वाले, नाच करनेवाले, राजाकी स्तुति करनेवाले ( चारण ) मल्ल, विदूषक, कथा कहने वाले, तैराक, भाण्ड, ज्योतिषी, अथवा स्वप्न शास्त्र आदि जाननेवाले, बांस पर खेलने वाले, चित्र दिखाकर भिक्षा मागने वाले, तम्बू—एक प्रकार का बाजा— बजाने वाले, वीणा बजाने वाले, तालो बजाकर नाचने वाले— इत्यादि लोग रहते थे। फुलवाड़ी बाग बगीचे, कुआ, तालाब, बावड़ी और उपजाऊ खेतों से युक्त और नन्दन वन के समान शोभमान था। ऊची चौड़ी और गहरी खाई थी, जो कि ऊपर चौड़ी और नीचे सकड़ी थी। चक्र, गदा मुसुण्ढी अवरोध (बीच का कोट) तथा सैंकड़ों आदमियों को नाश करने वाली ऊपर लगाई हुई महाशिलामय शतघ्नी ( तोप ) तथा छिद्र रहित किवाड़ों के कारण उस मे घुसना बड़ा कठिन था। टेढे

मनुष्य से भी ज्यादा टेढ़े परकोटे से घिरा हुआ था। अनेक सुन्दर २ कंगुरों से मनोहर था। ऊंची अटारियों, परकोटा के भीतर के आठ हाथ के मार्ग, ऊंचे २ परकोटा के द्वारों गोपुरों तोरणों और चौड़ी चौड़ी सड़कों से युक्त था। चतुर शिल्पकारों द्वारा बनाए हुए आगल और इन्द्रकील (नगर द्वार का एक भाग) से युक्त था। बाजार और वणिकों के बहुत स्थान थे। कुमार आदि से वहा के निवासियों को बड़ा आराम रहता था। तिरस्तों चौरस्तों चत्वरों (बहुत रास्तों का संगम स्थान) और नाना तरह के बर्तन आदि के बाजारों से शोभित था। अति रमणीय था। वहा का राजा इतना प्रभावशाली था कि उसने अन्य, समस्त राजाओं के तेजको फीका करदिया था। अनेक अच्छे अच्छे घोड़ों, मस्त हाथियों, रथों, गुमटी वाली पालखियों, स्यन्दमान(पुरुष प्रमाण पालखी)गाड़ी आदि और युग्यों (एकप्रकार की सवारी) से युक्त था। उस नगर के जलाशय, नवीन कमल कमलिनियों से शाभित थे। वह नगर चन्द्रमा जैसे स्वच्छ उत्तम उत्तम महलों से युक्त था। वह इतना स्वच्छ था कि बिना पलक मारे (एक टक) देखने को जी चाहता था। देखते ही चित्त प्रसन्न हो जाता और आखों को आराम मिलता था। बड़ा ही मनोज्ञ था। देखने वालों को उसका जुदा २ हा रूप मालूम होता था।

इसी हस्तिशीर्ष नामक नगर के बाहर ईशान कोण में पुष्पकरंडक नाम का उद्यान था। वह सर्व ऋतुओं के फूल और फलों से सम्पन्न था। नन्दन वन की तरह रमणीय था। देखते ही चित्त को प्रसन्न कर देता और आखों को बड़ा आनन्द आता था। बड़ा ही मनोज्ञ था। देखने वालों को जुदा जुदा ही रूप दिखाई देता था। इसी उद्यान में कयवण-मालपिय (कृतवनमालप्रिय) नाम के एक यक्ष का यक्षायतन था ॥७॥

**मूलम्— चिराइए, पुव्वपुरिसपण्णत्ते, पोराणे, सद्दि-**

१ उ० प्रथम ० पृ० २ पं० १ से प्रारंभ।

ए, विसिए, णाए, सच्छत्ते, सज्भए, सघंटे, सपडागे, पडागाइपडागमंडिए, सलोमहत्थे, कयवेयड्डिए, लाउल्लोइयमहिए, गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचगुलितले, उवचियचंदणकलसे, चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभाए, आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावे, पंचवण्णसरससुरहिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए, कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे, सुगंधवरगंधगंधिए, गंधवट्टिभूए, णडणट्टगजल्लमल्लमुट्ठियवेलंबयपवगकहगलासगआइक्खगलंखमंखतूणइल्लतुंबवीणियभुयगमागहपरिगए, बहुजणजाणवयस्स विस्सुयकित्तिए, बहुजणस्स आहुस्स आहुणिज्जे, पाहुणिज्जे, अच्चणिज्जे वंदणिज्जे, नमंसणिज्जे, पूयणिज्जे, सक्कारणिज्जे, सम्माणणिज्जे, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे, दिव्वे सच्चे सच्चोवाए, सण्णिहियपाडिहेरे जागसहस्सभागपडिच्छए, बहुजणो अच्चेइ आगम्म पुण्णभद्दचेइयं पुण्णभद्दचेइयं (?) कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणं ॥ ८ ॥

भावार्थ—वह यक्षायतन, प्राचीन कालीन पूर्व पुरुषों द्वारा सन्मानित, पुराना, प्रसिद्ध, आराधन करने वालों को जीविका देने वाला, न्याय का निर्णय करने वाला, छत्र सहित, ध्वजा और ध्वजा के ऊपर की ध्वजाओं से मंडित और रोम की पूजनी से युक्त था। उसमें वेदी बनी हुई थी। गोबर से लीपा हुआ था। खड़िया मिट्टी से पोता हुआ था वहाँ ताजे घिसे हुए मलयागिर और लाल चंदन से पांच अङ्गुलियों का हाथ (थापा) बनाया हुआ था। चैत्यालय के बाहर मांगलिक घट बने हुए थे। अच्छे २ तोरण हरएक द्वार पर लगे हुए थे। वहां भूमि को और

ऊपरी भाग को छूती हुई, विपुल विस्तार वाली गोल और लम्बी २ मालाएं थीं। पांचों रंगों के फूलों से युक्त था। महकती हुई अगर आदि की सुगन्ध से सुगंधित, तथा चीड़ और लोबान आदि उत्तमोत्तम गन्ध वाले द्रव्यों से युक्त था। बहुत सुगन्ध वाला होनेसे ऐसा मालूम होता, था जैसे गन्ध द्रव्य की गोली हो। वहां नट, नाचने वाले, रस्से पर खेल करने वाले, मल्ल, मुष्टियुद्ध करने वाले, विदूषक, तैराक, कथक, रास को गाने वाले, शुभाशुभ को कहने वाले, ऊंचे बांस पर खेलने वाले, चित्र दिखाकर भिक्षा मांगने वाले, तूण और वीणा बजाने वाले, भोजक और भाट आदि लोगों से युक्त था। बहुत नगर निवासियों में उसकी कीर्ति प्रसिद्ध थी। अनेक लोग मन्त्रोच्चारण करके वहां आहुति देते और आराधन करते थे। चन्दन गन्ध आदि से, स्तुति से, नमस्कार से, फूलों से और, वस्त्रों से पूजनीय था। इष्टसिद्धि, अनिष्टके निवारण के लिए, देव तथा देव की प्रतिमा प्रधानरूप में सेवन करने योग्य है ऐसा समझ कर पूजनीय था। सत्य आदेश करने से सत्य, और सत्य प्रभाव महिमा वाला था। अधिष्ठायक देवों ने उसकी महिमा बढ़ा रक्खी थी। हजारों यज्ञों का भाग उसे प्राप्त होता था। उसमें बहुत लोग आकर पूजा करते थे। इस प्रकार का पुष्पकरण्डक चैत्य कृतवनमालप्रिय नाम के यक्ष का यक्षायतन था॥८॥

**मूलम्**— से णं पुप्फकरंडे चेइए कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे एक्केणं महया वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, से णं वणसंडे किण्हे किण्होभासे नीले नीलोभासे हरिए हरिओभासे सीए सीओभासे णिद्धे णिद्धोभासे तिव्वे तिव्वोभासे किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीए सीयच्छाए णिद्धे णिद्धच्छाए तिव्वे तिव्वच्छाए घणकडियकडिच्छाए रम्मे महामेहणिकुरंबभूए ॥९॥

**भावार्थ—** पुष्पकरण्ड उद्यान में, वह छत्रातनपाडम्प्रिय नामक यक्ष का यक्षायतन, एक बड़े वनखण्ड ( अनेक जाति के वृक्षों के समूह को वन-खण्ड कहते हैं) से चारों तरफ घिरा हुआ था। वह वनखण्ड कहीं काला और काली प्रभा वाला था, कहीं नीला और नीली प्रभावाला था, कहीं हरा और हरी प्रभा वाला था। किसी जगह शीतल और शीतल प्रभ था। किसी स्थान पर स्निग्ध और स्निग्धप्रभ था। तीव्र-वर्ण और तीव्र प्रभा वाला था। किसी जगह वह कृष्ण होने से कृष्ण छाया वाला था। किसी जगह मोर के गले की तरह नीला होने से नील छाया वाला था। अन्यत्र तोते के पंख के समान हरा था, अतएव हरी छाया वाला था। कहीं शीत था, अत शीत छाया वाला था। कहीं स्निग्ध था, अतएव स्निग्ध छाया वाला था। कहीं तीव्र वर्ण था, अत तीव्र छाया वाला था। वह शाखा प्रशाखाओं सहित था, इसलिए वहां सदा छाया रहा करती थी। वह ऐसा मालूम होता था, जैसे बड़े २ बादलों का समूह हो॥ ६ ॥

**मूलम्— ते णं पायवा मूलमंतो कंदमंतो खंधमंतो तयामंतो सालमंतो पवालमंतो पत्तमंतो पुप्फमंतो फलमंतो बीयमंतो अणुपुव्वसुजायरुइलवट्टभावपरिणया एक्कखंधा अणेगसाला अणेगसाहप्पसाहविडिमा अणेगनरवामसुप्पसारिअअगेज्झघणविउलवट्टखंधा अच्छिद्दपत्ता अविरलपत्ता अवाईणपत्ता अणईइपत्ता निद्धूयजरढपंडुपत्ता णवहरियभिसंतपत्तभारंधकारगंभीरदरिसणिज्जा उवणिग्गयणव-**

---

१ वाचनान्तर में— पाईणपडीणाययसाला उदीणदाहिणविस्थि-ण्णा ओणयनमियपविभत्त[illegible]पिण्डाइ[illegible]साह[illegible]विडिमा अवाईणपत्ता अणुईसणपत्ता— इतना पाठ अधिक है।

[illegible] अर्थ— इनकी शाखाएं पूर्व और पश्चिम में लम्बी [illegible] दक्षिण दिशा में चौड़ी थीं, नमाभुग्न होकर नीचे का मुड़ी हुई थीं। [illegible] थीं। [illegible] थीं तथा नीचे की धार [illegible] नहीं रहू थीं।

तरुणपत्तपल्लवकोमलउज्जलचलंतकिसलयसुकुमालपवाल • सोहियवरंकुरग्गसिहरा णिच्चं कुसुमिया णिच्चं माइया णिच्चं लवइया णिच्चं थवइया णिच्चं गुलइया णिच्चं गोच्छिया णिच्चं जमलिया णिच्चं जुवलिया णिच्चं विणमिया णिच्चं पणमिया णिच्चं कुसुमियमाइयलवइयथवइयगुलइयगोच्छियजमलियजुवलियविणमियपणमियसुविभत्तपिंडमंजरिवडिंसयधरा, सुयवरहिणमयणसालकोइलकोरंगकभिंगारककोंडलकजीवंजीवकणंदीमुहकविलपिंगलक्खकारंडचक्कवायकलहंससारसअणेगसउणगणमिहुणविरइयसदुण्णइयमहुरसरणाइए, सुरम्मे, संपिंडियदरियभमरमहुकरिपहकरपरिलितमत्तछप्पयकुसुमासवलोलमहुरगुमगुमतगुंजतदेसभागे, अब्भंतरपुप्फफले बाहिरपत्तोच्छण्णे पत्तेहि य पुप्फेहि य उच्छण्णपडिवलिच्छण्णे साउफले निरोयए अकंटए णाणाविहगुच्छगुम्ममंडवगरम्मसोहिए विचित्तसुहकेउभूए वावीपुक्खरिणीदीहियासु य सुनिवेसियरम्मजालहरए पिंडिमणीहारिमसुगंधिसुहसुरभिमणहर य महया गंधद्धणिं मुयंता णाणाविह गुच्छगुम्ममंडवकघरकसुहसेउकेउबहुला अणेगरहजाणजुग्गसिवियपविमोयणा सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ १० ॥

**भावार्थ—** उस वनखण्डके वृक्षोंमें उत्तम जड़ें। कंद तने छाल शाखाएं अंकुर पत्ते फूल फल और बीज थे। व गोल गोल वृक्ष, क्रमसे लगे हुए बड़े मनोहर मालूम होते थे। उनमें एक ही एक स्कन्ध और अनेक शाखाए और प्रशाखाएं थी। अनेकों मनुष्यों के बाँहु फैलाने पर भी उनका तना बाम (बाँहों) में नहीं आसक्ता था। उन वृक्षों के पत्तों में छेद न थे, तथा वे खूब घने थे, नीचे झुके हुए थे, व ईति रहित थे। उनमें पुराने

और पीले पत्ते नहीं थे। नवीन और हरे हरे पत्तों के समुदाय के अन्धकार से गंभीर दीखते थे। निकले हुए चचल नवीन २ पत्तों से, नम्र नम्र और उज्वल किशलयों से तथा सुन्दर कोंपलों से उनके अकुर और अग्रभाग शोभायमान थे। हमेशा फूले रहते थे। हमेशा मौरे ——बौर—— वाले रहते थे। सदा पत्तों वाले रहते थे। सदा झूमके वाले रहते थे। सदा गुल्म वाले रहते थे। सदा गुच्छे वाले रहते थे। सदा एक ही श्रेणी में रहते थे। सदा दो दो साथ रहते थे। सदा फल फूलों से नमे हुए रहते थे। कोई सदा नमते जा रहे थे। इसलिए वे वृक्ष सदा फूले रहते, मौर युक्त रहते, पल्लवित रहते, झूमके वाले रहते, गुच्छे वाले रहते, श्रेणीबद्ध रहते, दो दो साथ में रहते, फलों के भार से नमे रहते और कोई नमते जा रहे थे। तथा अच्छी तरह उत्पन्न हुए गुच्छे और मञ्जरी रूपी शिखर को धारण करने वाले वृक्ष उस वनखण्ड में थे। उस वनखण्ड में तोता मैना मोर कोयल कोहगक (कोभगक) भिंगार कोंडलक चकोर नन्दामुख कपिल पिंगलाक्ष कारंड चक्रवाक (चकवा) कलहंस सारस आदि अनेक पक्षियों के जोड़ों के द्वारा मधुर शब्द और आलाप हुआ करता था। वह अतिशय रमणीय था। वहां मदोन्मत्त भ्रमर और भ्रमरियों के समूह के समूह इकट्ठे रहते थे। और दूसरी दूसरी जगहों से आने वाले फूलों के रस के लोभी भौंरे उस प्रदेश में 'गुन गुन' शब्द (गूंज) किया करते थे। उस वनखण्ड के वृक्षों के अन्दर फल फूल थे और बाहर पत्तों से ढके हुए रहते थे। वे वृक्ष पत्तों और फूलों से बिल्कुल ढके रहते थे। उनके फल बड़े मीठे नीरोग और कांटों से रहित थे। नाना प्रकार के गुच्छों (बेल आदि के) गुल्मों (मालती आदि लताओं) और लता-मण्डपों से रमणीय थे। यहां (वनखण्ड में) जगह जगह मांगलिक ध्वजाएं थीं। वहां बावड़ी (चौकोर) पुष्करिणी और दीर्घिकाओं पर झरोखे वाले मकान बने हुए थे। बहुत दूर तक फैलने वाली शुभ गंध को छोड़ने वाले अनेक वृक्ष थे। उनके अने

के गुच्छ गुल्म और मण्डप गृह थे। उनके नीचे अनेक वेदिकायें और ऊपर छतरियां थीं। वहां अनेक रथ गाड़ी पालकी आदि सवारियां रक्खी जा सकती थीं। बड़े रमणीय थे। देखते ही चित्त प्रसन्न हो जाता था। दर्शनीय और मनोहर थे। देखने वालों को उनका जुदा जुदा सा ही रूप दीखता था ॥१०॥

**मूलम्— तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे असोगवरपायवे पण्णत्ते, कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूले मूलमंते कंदमंते जाव पविमोयणे सुरम्मे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥ ११ ॥**

**भावार्थ**—उस वनखण्ड के बीचोंबीच एक उत्तम अशोकवृक्ष था। उसके आसपास से दूब घास और अन्यान्य झाड़ियां निकाल दी गई थीं। वह जड़ वाला था, कन्द (जड़ से ऊपर और तने से नीचे के भाग) वाला था, (यावत्) उसके नीचे रथ आदि रक्खे जा सकते थे। वह बड़ा रमणीय था। उसे देखते ही चित्त प्रसन्न हो जाता था। देखने से आंखों को कुछ भी कष्ट नहीं होता था। अत्यन्त मनोहर था। देखने वालों को उसका रूप नया और जुदा जुदा ही दिखाई देता था ॥११॥

---

* पाठान्तर— सुजायवरकन्दमूलवट्टलट्ठसंठियसिलिट्ठघणमसिणसिणिद्धसुजायनिरुवहयउव्विद्धपवरखंधी, अणेगनरपवरभुयागेज्झे, कुसुमभरसमोणमंतपत्तलविसालसाले, महुकरिभमरगणगुमगुमाइयनिलिंतउड्डिंतसस्सिरीए, णाणासउणगणमिहुणसुमहुरकण्णसुहपलत्तसद्दमहुरे ॥

अर्थ—उस अशोकवृक्ष की जड़ धरती में घुसी थी। उसका तना गोल, मनोज्ञ, सुन्दर आकार वाला सीधा मोटा नरम चिकना विकार रहित, खूब ऊंचा और उत्तम था। अनेक मनुष्यों की लम्बी लम्बी बांहों में भी नहीं आता था। उसकी डालियां फूलों के बोझ से झुकी हुई, पत्ते वाली और बड़ी थीं। उन पर भ्रमरी और भ्रमर 'गुनगुन' शब्द करते हुए बैठे थे और कोई उड़ रहे थे, इससे उसकी शोभा बढ़ गई थी। इसके सिवाय नाना तरह के पक्षियों के जोड़ों की कानों को आनन्द देने वाली मधुर चहचहाहट से वह और भी मनोज्ञ जान पड़ता था।

मूलम्-से ण असोगवरपायवे अण्णेहिं बहूहिं तिलएहिं लउएहिं छत्तोवेहिं सिरीसेहिं सत्तवण्णेहिं दहिवण्णेहिं लोद्धेहिं धवेहिं चंदणेहिं अज्जुणेहिं णीवेहिं कुडएहिं सव्वेहिं फणसेहिं दाडिमेहिं सालेहिं तालेहिं तमालेहिं पियएहिं पियंगूहिं पुरोवगेहिं रायरुक्खेहिं णंदिरुक्खेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, ते णं तिलया लवइया जाव णंदिरुक्खा कुसविकुसविसुद्ध-रुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो एएसिं वण्णओ भाणियव्वो, जाव सिविवियपविमोयणा सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, ते णं तिलया जाव णंदिरुक्खा अण्णाहिं बहूहिं पउमलयाहिं णागलयाहिं असोयलयाहिं चंपगलयाहिं चूयलयाहिं वणलयाहिं वासंतियलयाहिं अइमुत्तयलयाहिं कुंदलयाहिं सामलयाहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, ताओ णं पउमलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ जाव वडिंसयधरीओ पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥ १२ ॥

भावार्थ—यह अशोक वृक्ष बहुत से तिलक लोधी बड़हर शिरीष सप्तपर्ण (सात सात पत्तों के गुच्छे वाला वृक्ष) दधिपर्ण लोध्र धव चन्दन अर्जुन कदम्ब कुज (कूड़ा) सभ्य पनस दाड़िम शाल ताड़ श्यामतमाल प्रियक फूलफेन पुरोग खिरनी (रायण) और नदि वृक्षों से, सब तरफ से सब जगह घिरा हुआ था। उन तिलक बड़हर आदि से लेकर नदि वृक्ष पर्यन्त सब वृक्षों की जड़ें भी घास तथा अन्यान्य झाड़ियों से रहित थीं। उनकी जड़ें धरती में तिर्छी चली गई थीं। वे वृक्ष उत्तम कन्द वाले थे।

---

१वाचनान्तर में इतना पाठ अधिक है—तस्स णं असोगवरपायवस्स उवरिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता।

अर्थ—उस अशोक वृक्ष के ऊपर बहुत से आठ आठ स्वस्तिक आदि मांगलिक थे।

इसके सिवाय पहले वर्णन की हुई सब बातें उन वृक्षों में समझना चाहिए। (यावत्) वहां भी पालखी वगैरह वस्तुएं रक्खी जा सकती थीं (क्योंकि वे वृक्ष भी बहुत लम्बे चौड़े थे)। वे बहुत ही रमणीय थे। चित्त को प्रसन्न करने वाले थे। दर्शनीय थे। मनोहर थे। देखने वालों को उन के जुदे जुदे ही रूप दिखाई देते थे। तथा वे (तिलक आदि वृक्ष) अनेक पद्मलताओं से नागलताओं से अशोक लताओं से चंपक लताओं से आम लताओं से वन लताओं से वासंती लताओं से अतिमुक्तक लताओं से कुंद लताओं से और श्याम लताओं से चारों तरफ घिरे हुए थे। वे लताएं सदा फूली रहती थीं। शिखर को धारण करने वाली और चित्तको प्रसन्न करने वाली थीं। हर्ष को पैदा करती और मनोहर थीं। दर्शकों को उनका रूप अलग २ ही दीखता था ॥ १२ ॥

**मूलम्— तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा ईसिं खंध-समल्लीणे एत्थ णं महं एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते, विक्खंभायामउस्सेहसुप्पमाणे किण्हे अंजणघणकिवाणकुवलयहलधरकोसेज्जागासकेसकज्जलंगीखंजणसिंगभेदरिट्ठयजम्बूफल-असणकसणबंधणणीलुप्पलपत्तनिकरअयसिकुसुमप्पगासे मरकतमसारकलित्तणयणकीयरासिवण्णे णिद्धघणे अट्ठसिरे आयंसयतलोवमे सुरम्मे ईहामियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिण्णररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ते आइणगरूयबूरणवणीततूलफरिसे सीहासणसंठिए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। तत्थ णं हत्थिसीसे णगरे अदीणसत्तू नाम राया होत्था ॥१३॥**

**भावार्थ—** उस उत्तम अशोक वृक्ष के नीचे, तने के पास एक बड़ी पत्थर की शिला थी। वह उचित प्रमाण में चौड़ी लम्बी और ऊंची थी। उसका प्रकाश अञ्जनक (वनस्पति विशेष) मेघ, तलवार, नीले कमल,

बलदेव के वस्त्र, आसमान, शिर के बाल, पानी की कोठरी, खंजन (पक्षि का कीट) सींग, अरिष्ट (रत्न विशेष) जामुन का फल, बीजक वृक्ष, सन के फूल, नील कमल के पत्ता के समूह और अलसी के फूल के समान नीला, तथा उसका वर्ण इन्द्रनील मणि, कसौटा, चमड़े के कमरपट्टे और आंखों की पुतली के समान काला था। वह बहुत चिकनी, आठ कोन वाली और दर्पण के समान चमकीली थी। बड़ी रमणीय थी। उस पर भेड़िया बैल घोड़ा मनुष्य मगर पक्षी सर्प किन्नर मृग अष्टापद चमरीगाय हाथी वनलता और पद्मलता आदि के चित्र बने हुए थे। उसका स्पर्श कमाये हुए चमड़े की तरह, रुई की तरह, बूर नामक वनस्पति की तरह, मक्खन की तरह और आक की रुई की तरह कोमल था। सिंहासन सरीखा आकार था। बड़ी सुन्दर, दर्शनीय, और मनोहर— इतनी मनोहर कि देखने वालों को जुदे जुदे रूप वाली दीखती थी।

उस हस्तिशीर्ष नामक नगर में अदीनशत्रु नामका राजा था॥ १३॥

**मूलम्—महया हिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे अच्चं तविसुद्धदीहरायकुलवंससुप्पसूए णिरंतरं रायलक्खणविरा इअंगमंगे बहुजणबहुमाणे पूजिए सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुइए मुद्धाहिसित्ते माउपिउसुजाए दयपत्ते सीमंकरे सीम- धरे खेमंकरे खेमंधरे मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणव यपुरोहिए सेउकरे केउकरे णरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरि सवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णे बहुधणबहुजायरूवरयते आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डिअ पउरभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूते पडिपुण्ण जंतकोसकोट्ठागाराउधागारे बलवं दुब्बलपच्चामित्ते ओहय कंटयं निहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं ओह**

**यसत्तु निरयसत्तु मलियसत्तु उद्धियसत्तु निज्जियसत्तु पराइयसत्तु ववगयदुब्भिक्खं मारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं पसन्तडिंबडमरं रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥ १४ ॥**

**भावार्थ—** वह राजा महाहिमवान पर्वत की तरह, तथा मलय, मेरु और महेन्द्र पर्वतकी तरह प्रधान था। सबसे निर्दोष और प्राचीन राजवंश में पैदा हुआ था। उसका शरीर साथिया आदि राजलक्षणों से सर्वत्र शोभित था। अनेक जनसमूहों से सम्मानीय और पूज्य था। सर्व गुण सम्पन्न था। क्षत्रिय था। सदा खुश रहता था और निर्दोष माता से उत्पन्न हुआ था। उसके बाप दादाओं ने उस का राज्य अभिषेक किया था। माता पिताका विनय करने वाला (सत्पुत्र) था। दयालु था। सीमा (कानून आदि का मर्यादा) बनाने वाला, और अपने बनाए हुए नियमों को स्वयं पालन वाला था। क्षेम (निरुपद्रवता) करने वाला और स्वयं क्षेम रूप था। मनुष्यों का स्वामी था। प्रजा को पिता समान था, क्योंकि उसकी रक्षा करता था। प्रजा को पुरोहित सरीखा था, क्योंकि शान्ति करने वाला था। सन्मार्ग का बताने वाला था। अद्भुत कार्य करने वाला था। श्रेष्ठ मनुष्यों वाला था और वह स्वयं मनुष्यों में उत्तम था। अपराधियों को दण्ड देने में क्रूर होने से वह पुरुषों में सिंह के समान था। शत्रुओं को भयकारी होने से पुरुषों में व्याघ्र के समान था। पुरुषों में पुंडरीक (सफेद कमल) के समान था। क्योंकि सुख चाहने वालों के द्वारा सेवनीय था पुरुषों में गन्धहस्ती के समान था। क्योंकि शत्रु राजा रूपी हाथी उसका सामना नहीं कर सकते थे। सब तरह से सम्पन्न था। आत्म गौरव वाला था। विनय आदि गुणों से प्रसिद्ध था। उसके भवन, शयन (सेज) आसन यान वाहन आदि बहुत थे। अथवा उसके विशाल भवन, शयन आसन यान(रथ आदि) वाहन (घोड़ा आदि) से भरे रहते थे। उसके सोना चांदी भूमि आदि सम्पत्ति बहुत थी। वह आमदनी के उपा-

थी में सदा लगा रहता था। उसने बहुत आदमियों को भोजन आदि का इतना दान दिया था कि उनसे खाया न जाता था। उसके दास दासी गाय बैल भेड़ भैंसादि बहुत थे। बहुतसे खजाने कोठार और आयुधशालाएँ थीं। पर्याप्त सेना थी। उसके शत्रु निर्बल थे। उसने अपने कण्टकों (विरोध करने वाले गोत्रजों) का विनाश कर दिया था। कण्टकों की सम्पत्ति छीन ली थी। कण्टकों को देश निकाला दे दिया था। अतः वह कण्टकों से रहित था। तथा शत्रुओं का भी नाश कर दिया था। उन की सम्पत्ति लूटली थी। गर्व छिन्न दिया था। उन्हें देश निकाला दे दिया था। उन्हें सौन्दर्य आदि गुणों से जीत लिया था। शत्रुओं को निःसत्व कर दिया था।

वहा (नगर में) दुष्काल कभी न पड़ता था। महामारी आदिका भय न था। सब तरह कुशल था। उपद्रव नहीं थे। सदा सुभिक्ष (सुकाल) रहता था। राजाने राजकुमार आदि द्वारा होने वाले उपद्रवों को शान्त कर दिया था। वह राजा इस प्रकार राज्य का शासन करता था ॥ १४ ॥

**मूलम्— तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था।**

**तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणी णामं देवी सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्णपचिंदियसरीरा लक्खण वंजणगुणोववेया माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वग सुंदरंगी ससिसोमाकारकंतपियदंसणा सुरूवा करयलपरिमियपसत्थतिवलियवलियमज्झा कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुइयरयणियरविमलपडिपुण्णसोमवयणा सिंगारागारचारुवेसा संगयगयहसियभणियविहियविलाससललियसंलावणिउणजुत्तोवयारकुसला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा**

१ उववाइ के सूत्र ७ से प्रारम्भ।

**पडिरूवा, अदीणसत्तुणं रण्णा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणी विहरति ॥ १८ ॥**

**भावार्थ—** उस अदीनशत्रु नामक राजा के अन्त पुर ( रनवास ) में धारिणी आदि एक हजार स्त्रियां थीं। उनमें धारिणी पटरानी थी।

अदीनशत्रु राजा की धारिणी नामकी पटरानी के हाथ पैर बड़े ही कोमल थे। उसका शरीर सब लक्षणों से सहित और परिपूर्ण पांचों इन्द्रियों से युक्त था। साथिया चक्र आदि लक्षण और तिल आदि व्यंजनों से युक्त था। मान (एक पुरुष प्रमाण जल का कुंड भरे, उसमें उसी पुरुष को बैठानेसे यदि एक द्रोण प्रमाण (३२ सेर) पानी कुंडसे बाहर निकल जाय, उसे मान प्राप्त कहते हैं) उन्मान (मनुष्य को तराजू पर तौलनेसे जो आधा भार— परिमाण विशेष— होता हो उसे उन्मान प्राप्त कहते हैं) प्रमाण (अपने अंगुलों से जो १०८ अंगुल हो, वह प्रमाणप्राप्त कहलाता है) के अनुसार ही उसके सब अंग बने थे। इस लिए वह सुन्दरी थी। चन्द्रमा जैसा सौम्य और मनोहर अंग होने से, देखने वालों को उसका रूप बड़ा ही प्यारा लगता था। मतलब यह है कि वह बहुत सुन्दरी थी। उसकी बीच में रही हुई शुभ त्रिवलियुक्त कमर मुट्ठी में आजाती थी। उसके गालों पर की गई पत्र रचना ( बेल बूटा ) कानों के कुण्डलों से चमकदार होगई थी। उसका मुख कार्तिक में उदय होने वाले स्वच्छ चन्द्रमाकी चन्द्रिका सरीखा था। उसका वेष सिंगार-रसका स्थान सा होगया था। या उसका आकार सिंगार से सहित और वेष सुन्दर था। उसका चलना, हँसना, चेष्टा और कटाक्ष उचित था। नम्रता पूर्वक परस्पर भाषण करने में कुशल, तथा लोकव्यवहार में चतुर थी। देखने वालोंका चित्त देखते ही प्रसन्न होजाता था। वह दर्शनीय थी। मनोहर थी। देखने वालों को उसका नवीन नवीन रूप मालूम होता था। अदीनशत्रु राजा

में अनुरक्त थी– विरक्त न थी। उसका शब्द रूप रस गंध और स्पर्श प्रिय था। वह मनुष्यों के पांच प्रकार के काम भोगों को भोगती हुई रहती थी ॥ १४ ॥

**मूलम्—*** ततेणं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरतो सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे विचित्तउल्लोगचिल्लिगतले मणिरयणपणासियंधकारे बहुसमसुविभत्तभूमिभाए पंचवण्णसरससुरहिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए उभओ बिब्बोयणे दुहओ उन्नए मज्झेणयगंभीरे गंगापुलिणवालुयउद्दालसालिसए उवचियखोमियदुगुल्लपट्टपडिच्छन्ने सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणगरूयबूरणवणीयतूलफासे सुगंधवरकुसुमचुन्नसयणोवयारकलिए अद्धरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी एगं महं सत्तुस्सेहं रययकूडसन्निहं... अयमेयारूवं उरालं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा ॥ १५ ॥

**भावार्थ—** इसके अनन्तर किसी समय वह धारिणी महारानी पुण्यवानों के रहने योग्य घर में, (जिस में एक ऐसा था) वह घर भीतर चित्रों से युक्त और बाहर चिकने पत्थर से सुन्दर किया गया था। उसके ऊपर का भाग विविध विचित्र चित्रों से युक्त और नीचे का भाग देदीप्यमान था। मणियों और रत्नों से वहां का अन्धकार नष्ट हो गया था। वह एकदम समतल (ऊंचा नीचा नहीं) था। पांचों रंगों के सरस सुगन्धित फूलों से सजा हुआ था। अगर चीड़ लोबान इत्यादि उत्तम उत्तम सुगन्ध

*भगवती श. ११ उ. ११– पत्र ५२५ ५४० (आगमोदय स.) से प्रारम्भ।

वाले द्रव्यों से बनी हुई धूप की लहलहाती हुई सुगन्ध से रमणीय था। अच्छी और उत्तम गन्ध से सुगन्धित था। सुगन्ध की अधिकता होने से वह गन्ध की गुटिका (गोली) सा मालूम होता था। उस पुण्यात्माओं के रहने योग्य घर में (एक शय्या थी) वह शय्या शरीर के बराबर तकिया से युक्त थी। शिर गाल और पैरों के नीचे भी तकिया लगा हुआ था। वह शय्या दोनों तरफ ऊंची और बीच में नीची थी। जैसे गंगा नदी के तट की रेत पर चलने से पैर नीचे चला जाता है, इसी तरह शय्या पर पैर रखने से पैर नीचे धँस जाता था, क्योंकि वह बहुत कोमल थी। कसीदा किए हुए सूती और अलसीमय वस्त्रों का चादर बिछा हुआ था। धूल आदि से रक्षा करने के लिए एक वस्त्र था, वह अन्य समय शय्या पर ढका रहता था। वह मच्छरदानी से ढकी थी। अतिशय रमणीय थी। उसका स्पर्श चर्म के वस्त्र(मांभरी जैसे) रुई, बूर (वनस्पति विशेष) मक्खन और आक की रुई सरीखा था। सुगंधि-युक्त उत्तमोत्तम फूलोंसे चूर्णों से तथा शय्या को शोभित करने वाला अन्य उत्तम वस्तुओं से युक्त थी। उस सेज पर आधी रात के समय— जब कि रानी न तो गाढ़ निद्रा में थी और न जाग ही रही थी— बड़ा कल्याणकारी, उपद्रव रहित, सौभाग्य करने वाला, मंगलमय और सश्रीक (सुन्दर) एक महास्वप्न देखकर जागी।१६।

**मूलम्— रयरययखीरसागरससंककिरणदगरययमहासेल- पडुरतरोरुरमणिज्जपेच्छणिज्ज थिरलट्ठपउट्ठवट्टपीवरसुसिलि ट्ठविसिट्ठतिक्खदाढाविडंबियमुहं परिकम्मियजच्चकमलको मलमाइयसोभतलट्ठउट्ठं रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुजीहं**

[1] पाठान्तर में अधिक पाठ-रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुनिल्ला- लियग्गजीहं, महुगुलियाभिसंतपिंगलच्छं।

अर्थ— लाल कमल के पत्ते के समान अत्यन्त कोमल जीभ को निकाला है जिसने ऐसे, और मधु की गोली के समान आंखों वाले।

मूसागयपयरकणगतावियआवत्तायतवट्टतडियविमलसरसन
यण विसालपीवरोरु पडिपुन्नविउलखंध मिउविसयसुहु
मलक्खणपसत्थविच्छिन्नकेसरसडोवसोभिय ऊसियसुनि
म्मियसुजायअप्फोडियलगूल सोम सोमाकार लीलायत
जंभायन नहयलाओ ओययमाण नियगवयणमतिवयत
सीह सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धा ॥ १७ ॥

भावार्थ— रानी ने स्वप्न में हार, चादी, क्षीर समुद्र, चन्द्रमा की किरण, रजतमहाशैल (वैताढ्य पर्वत) और पानी की बुद की तरह बहुत सफेद, लम्बे चौड़, रमणीय, अत दर्शनीय, स्थिर और मनोहर कलाई वाले, तथा गाढ स्थूल मिला हुइ उत्तम और तेज दाढ़ों युक्त मुखवाले सत्कार किये गये उत्तम जाति क कमल के समान कामल, यथाप्रमाण और अत्यन्त मनाज्ञ होठों वाले, लाल कमल की तरह कोमल तालु और जिह्वा वाले, मूस में रक्खे हुए और घूमते हुए तपाए हुए उत्तम साने और विजली जैसी निर्मल, बराबर और गोल गोल आखों वाल, माटी और मजबूत जाघ वाले, पूर्ण और माट कध वाले, कोमल स्वच्छ सूक्ष्म और फैले हुए सुन्दर गर्दन के बालों (केसर) का छटा से शोभित, धरती पर फटकार कर ऊपर कर के फिर नीचे को झुकी है पूछ जिसकी एसे, तथा सौम्य, सौम्याकार, क्रीड़ा करते हुए, जभाइ लेते हुए सिंह का आकाश से उतरकर अपने मुह में घुमते हुए देखा ॥ १७ ॥

मूलम्—तए ण सा धारिणी देवी अयमेयारूव उराल जाव सस्सिरीय महासुमिण पासित्ता या पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठजावहियया धाराहयकलवपुप्फगपि व समूससियरोम कूवा त सुविण ओगिण्हति , ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, सयणिज्जातो अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभताए

**अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव अदीणसत्तुस्स रन्नो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ ॥ १८ ॥**

**भावार्थ—** इसके पश्चात् वह धारिणी नामकी महारानी इस प्रकार के उदार ( यावत् ) सश्रीक महान् स्वप्न को देखकर ( जागी और ) जागकर उसका हृदय हर्षित सतुष्ट हो गया । मेघ की धारा से जैसे कदम्ब वृक्ष का फूल खिल जाता है, उसी तरह रोमाञ्चित होती हुई महारानीने स्वप्न का अवग्रह किया । अवग्रह करके शय्या से उठी । शय्या से उठकर चपलता रहित शीघ्र और स्थिर मन होकर, राजहंस की तरह मन्द मन्द गमन करती हुई जहां राजा अदीनशत्रु का सेज था, वहां पहुँची ॥१८॥

**मूलम्-- तेणेव उवागच्छित्ता अदीणसत्तु रायताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मियमहुरमंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी संलवमाणी पडिबोहेति । पडिबोहेत्ता अदीणसत्तुणा रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी नानामणिरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि णिसीयति । णिसीइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया अदीणसत्तु रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव संलवमाणी संलवमाणी एवं वयासी— ॥ १९ ॥**

**भावार्थ—** वहां पहुंचकर अदीनशत्रु राजाको इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, अभिराम, उदार, कल्याणकारी, शिवकारी, धन्य, मंगलकारी, सश्रीक, मृदु, मधुर और मंजुल वचनों से बोलकर जगाया । जगाकर राजा अदीन शत्रु के आज्ञा देने पर अनेक मणि और रत्नों से विचित्र उत्तम आसन पर बैठ गई । बैठकर चलने के श्रम और क्षोभ को मिटा कर सुख कर आसन पर बैठी हुई , अदीनशत्रु राजा को इष्ट और मनोहर वचन बोलती हुई, इस प्रकार कहने लगी— ॥ १९ ॥

मूलम्--एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए त चेव जाव नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा। तण्णं देवाणुप्पिया! एयस्स उरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?॥ २०॥

भावार्थ—हे देवानुप्रिय! आज मैं उस प्रकार की सेज पर—जिसमें कि शरीर की बराबर तकिया लगा हुआ था और पूर्वोक्त विशेषणों से युक्त थी— अपने मुह में घुसते हुए सिंह को सपने में देखकर जागी हूं। हे देवानुप्रिय! इस तरह के उस उदार महास्वप्न का मुझे क्या विशेष फल होगा ?॥ २०॥

मूलम्—तए णं से अदीणसत्तू राया धारिणीए देवीए अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए धाराहय नीवसुरभिकुसुमचचुमालइयतणुयऊसवियरोमकूवे तं सुविणं ओगिण्हइ। ओगिण्हित्ता ईहं पविसइ, ईहं पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविन्नाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ। तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करित्ता धारिणिं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव मंगल्लाहिं मियमहुरसस्सिरीयाहिं गिराहिं संलवमाणे संलवमाणे एवं वयासी—॥ २१॥

भावार्थ— उस समय धारिणी रानी के मुख से इस विषय को सुनकर और हृदय में धारण करके राजा अदीनशत्रु का चित्त (यावत्) हर्षित और सन्तुष्ट हुआ। जैसे मेघ (जल)की धारा के गिरने से सुगन्धित कदम्ब वृक्ष खिल जाता है, उसी तरह राजा का शरीर पुलकित होगया और रोंगटे खड़े होगये। इस प्रकार राजा को स्वप्न का अवग्रह हुआ, अवग्रह ज्ञान होने पर ईहा-ज्ञान की प्रवृत्ति हुई। ईहा की प्रवृत्ति होकर मतिज्ञान से

उत्पन्न हुई स्वाभाविक प्रतिभा से उस स्वप्न का अर्थ जाना । उस स्वप्न का अर्थ जानकर इष्ट कान्त (यावत्) मांगलिक मृदु मधुर और सश्रीक आदि वचनों से बोलता हुआ, इस प्रकार कहने लगा— ॥ २१ ॥

मूलम्— उराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, कल्लाणे णं तुमे जाव सस्सिरीए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणमंगल्लकारए णं तुमे देवी सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिए ! भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो देवाणुप्पिए ! एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं विइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडेंसयं कुलतिलगं कुलकित्तिकरं कुलनन्दिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुन्नपंचिंदियसरीरं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिसि । से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कन्ते वित्थिन्नविउलबलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ । तं उराले णं तुमे जाव सुमिणे दिट्ठे, आरोग्गतुट्ठिजावमंगल्लकारए णं तुमे देवी सुविणे दिट्ठेत्तिकट्टु धारिणिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुवूहति ॥ २२ ॥

भावार्थ— हे देवी ! तुमने उदार स्वप्न देखा है । तुमने कल्याणकारी स्वप्न देखा है । हे देवी ! तुमने सश्रीक स्वप्न देखा है । हे देवी ! तुमने आरोग्य सन्तोष दीर्घ आयु कल्याण और मंगल करने वाला स्वप्न देखा है । हे देवानुप्रिये ! अर्थ-लाभ होगा । हे देवानुप्रिये ! भोग का लाभ होगा । हे देवानुप्रिये ! पुत्र का लाभ होगा । हे देवानुप्रिये ! राज्य

का लाभ होगा। इस प्रकार हे देवानुप्रिये! पूरे नव महीने और साढे सात दिन बीत जाने पर, हमारे कुल की ध्वजा के समान, कुल के दीपक, कुल में पर्वत के समान, कुल के मुकुट, कुल के तिलक, कुल की कीर्ति बढाने वाले, कुल की समृद्धि करने वाले, कुल का यश करने वाले, कुल के आधार, कुल को आश्रय देने मे वृक्ष के समान, कुल को बढाने वाले, कोमल हाथ पैर वाले, सुन्दर और पाचों इन्द्रियों से पूर्ण शरीरवाले (यावत्) सौम्य आकृति वाले, मनोहर, देखने में प्रिय, चन्द्रमा की तरह सुरूप, देवकुमार सरीखी प्रभावाले बालक का उत्पन्न होगा–जन्म होगी। वह बालक बाल्यावस्था का त्याग कर विज्ञ कलाओं का विशेष जानकार होगा। यौवन अवस्था में दानवीर रणवीर, पराक्रमी, विस्तीर्ण और विपुल सेना तथा वाहनों (सवारियों) वाला राजराजेश्वर होगा॥ २२ ॥

**मूलम्— तए ण सा धारिणी देवी अदीणसत्तुस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म हट्ठतुट्ठजावहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी— एवमेयं देवाणुप्पिया! तहमेयं देवाणुप्पिया! अवितहमेयं देवाणुप्पिया! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! से जहेयं तुज्झे वदह त्तिकट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अदीणसत्तुणा रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी णाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलजावगईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ ॥२३॥**

**भावार्थ—** तुमने उदार (यावत्) स्वप्न देखा है। हे देवि! तुमने आरोग्य सन्तोष और (यावत्) मंगल करने वाला स्वप्न देखा है।

इस तरह धारिणी महारानी को इष्ट (यावत्) वचनों से राजा ने दो तीन वार कहा। उसी समय वह धारिणी रानी अदीनशत्रु राजा से इस विषय को सुनकर और हृदय में धारण करके हर्षित और सन्तुष्ट होकर, हाथ जोड़कर आवर्तन करके मस्तक से अंजलि लगाकर इस प्रकार बोली– हे देवानुप्रिय! यह ऐसा प्रकार है। हे देवानुप्रिय! यह उसी प्रकार है। हे देवानुप्रिय! यह सत्य है, निस्सन्देह है, इष्ट है, अभीष्ट (प्रतीच्छित) है, इष्ट अभीष्ट है। आप जो कहते हैं, उसे मैं अच्छी तरह अंगीकार करती हूं। (इस प्रकार) अंगीकार करके अदीनशत्रु राजा की आज्ञा मिलने पर नाना मणियों और रत्नों से चित्रित उस आसन (सिंहासन) से उठी। उठकर धीरे धीरे चपलता रहित (यावत्) राजहंस की गति से जहां अपनी सेज थी, वहां आगई ॥२३॥

**मूलम्— तेणेव उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयति, निसीइत्ता एवं वयासी–मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुविणे अन्नेहिं पावसुविणेहिं पडिहम्मिस्सइत्ति कट्टु देवगुरु जणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुविणजागरियं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरति ॥ २४ ॥**

**भावार्थ—** वहां आकर सेज पर बैठ गई। बैठ कर इस प्रकार बोली 'मेरा यह उत्तम प्रधान और मांगलिक स्वप्न किसी दूसरे पाप स्वप्न से नष्ट न हो जाय' इसलिए वह देव गुरु और जन सम्बन्धी अच्छी, मांगलिक धर्मकथाओं से अपने स्वप्न के फल को बनाए रखने के लिए बार २ नींद का भंग कर जागती रही ॥ २४ ॥

**मूलम्—***ततेणं से अदीणसत्तू राया पच्चूसकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ। सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पा-

* ज्ञाता अध्य० १ सू० १२ से प्रारम्भ।

मेव भो देवाणुप्पिया बाहिरियं उवट्ठाणसालं अज्ज सविसेसं परमरम्मं गंधोदगसित्तसुइयसमज्जिओवलित्तं पंचवन्नसर-ससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागुरुपवरकुंदुरुक्क तुरुक्कधूवडज्झंत मघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य, कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा, अदीणसत्तुणा रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव पच्चप्पिणंति। तते णं से अदीणसत्तू राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलु म्मीलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगप्पगासकिंसुयसुयमुह गुंजद्धरागबंधुजीवगपारावयचलणनयणपरहुयसुरत्तलोयण-जासुयणकुसुमजलियजलणतवणिज्जकलसहिंगुलयनिगर रूवाइरेगरेहंतसस्सिरीए दिवागरे अह कमेण उदिए, तस्स दिणकरकरपरंपरावयारपारद्धम्मि अंधयारे बालातव कुंकुमेण खचियव्व जीवलोए लोयणविसयाणुयासविगसं तविसददंसियम्मि लोए कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते मयणिज्जाओ उट्ठेति, उट्ठेत्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ ॥ २८ ॥

भावार्थ— इस के अनन्तर प्रातःकाल उस अदीनशत्रु राजा ने अपने सेवकों को बुलाया। बुला कर इस प्रकार बोला— भो देवानुप्रिय! आज शीघ्र ही बाहर की उपस्थानशाला–सभास्थान को विशेष रूप से परम रमणीय, गंधोदक से सींच कर पवित्र और साफ करो, लीपो, पांचों रंगों के सरस सुगन्धित फूलों से युक्त करो, कृष्णागरु चीड़ लोबान आदि की मघमघायमान गंध से शोभित, अतएव गंध की गोली के समान सुगंधित करो और दूसरों से कराओ। मेरी इस आज्ञा को पूरी करके मुझे सूचित करो। इसके बाद उन सेवकों ने अदीनशत्रु राजा के ऐसा कहने पर हर्षित

होते हुए आज्ञानुसार कार्य करके सूचित किया। पश्चात् जिसमें खिले हुए पद्म और कमलों (एक प्रकार के हरिणों) के नेत्र खुल गये थे ऐसे— स्वच्छ प्रभात होने पर, लाल अशोक के प्रकाश, ढाक के फूल, तोते की चोंच, चिरमठी के आधे लाल हिस्से, दुपहरिया के फूल, कबूतर के पांव, कोयल की लाल लाल आंखों, जपा कुसुम, जलती हुई अग्नि, सोने के कलश और हिंगुल के समूह की प्रभा से भी अधिक प्रभा वाले सूरज के क्रमशः उदित होने पर, और उस की किरणों के गिरने से अन्धकार का नाश प्रारंभ होने पर बालसूर्य रूपी कुंकुम से जीवलोक के रंग जाने पर लोक में देखे जा सकने वाले विषयों ( पदार्थों )का स्पष्ट प्रतिभास होने पर, कमलों को विकसित करते हुए एक हजार किरणों वाला सूर्य तेज से चमकने लगा। उसी समय राजा अदीनशत्रु शय्या से उठा। उठकर जहां व्यायामशाला (अखाड़ा) थी वहाँ गया ॥ २५ ॥

**मूलम्— उवागच्छइत्ता अट्टणसालं अणुपविसइ। अणुपविसित्ता अणेगवायामजोग्गवग्गणवामद्दणमल्लजुद्धकरणेहिं संते परिसंते सयपागसहस्सपागेहिं सुगंधवरतेल्लमाइएहिं पीणणिज्जेहिं दीवणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मदणिज्जेहिं विंहणिज्जेहिं सव्विंदियगायपल्हायणिज्जेहिं अब्भंगेहिं अब्भंगिए समाणे तेल्लचम्मंसि पडिपुण्णपाणिपायसुकुमालकोमलतलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहावीहिं निउणेहिं निउणसिप्पोवगएहिं जियपरिस्समेहिं अब्भंगणपरिमद्दणुव्वलणकरणगुणनिम्माएहिं, अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए चउव्विहाए संवाहणाए संवाहिए समाणे अवगयपरिस्समे नरिंदे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समंत-**

(मूल) जालाभिरामे विचित्तमणिरयणकोट्टिमतले रमणिज्ज ण्हाणमडवंसि णाणामणिरयणभत्तिचित्तसि ण्हाणपीढंसि सुहनिसन्ने सुहोदगेहिं पुप्फोदगेहिं गंधोदगेहिं सुद्धोदगेहिं य पुणो पुणो कल्लाणगपवरमज्जणविहीए मज्जिए तत्थ कोउ यसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे पम्हलसुकु मालगंधकासाइयलूहियंगे अहतसुमहग्घदूसरयणसुसंवुडे सरससुरभिगोसीसचंदणाणुलित्तगत्ते सुइमालावन्नगविलेवणे आविद्धमणिसुवन्ने कप्पियहारद्धहारतिसरयपालंबपलंबमाण-कडिसुत्तसुकयसोहे पिणद्धगेविज्ज अंगुलिज्जगललियंगल-लियकयाभरणे णाणामणिकडगतुडियथंभियभुए अहियरूव सस्सिरीए कुंडलुज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए हारोत्थयसु कयरइयवच्छे पालंबपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जे मुद्दियापिंग लंगुलीए णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवियमि-सिमिसंतविरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थआविद्धवीर-वलए किं बहुणा, कप्परुक्खए चेव सुअलंकियविभूसिए नरिंदे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उभओ चउ चामरवालवीइयंगे मंगलजयसद्दकयालोए अणेगगणनाय गदंडनायगराईसरतलवरमाडंवियकोडुंवियमंतिमहामंतिगण गदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दनगरनिगमसेट्ठिसेणावइसत्थवा हदूयसंधिवालसद्धिं संपरिवुडे धवलमहामेहनिग्गए विव गहगणदिप्पंतरिक्खतारागणाण मज्झे ससिव्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमति ॥ २६ ॥

**भावार्थ—** राजा ने अखाड़े में प्रवेश किया। प्रवेश करके कसरत के योग्य उछलना कर एक दूसरे की आपस में बांह आदि को मोड़कर और कुश्ती आदि कसरत करके थक जाने पर शतपुट और सहस्रपुट

वाले सुगंधित तल आदि से, तथा रुधिर आदि धातुओं को सम करने वाले, जठराग्नि को दीप्त (तेज) करने वाले, काम का बढ़ाने वाले, मास को बढ़ाने वाले, पांचो इन्द्रियों और शरीरको प्रसन्न करनेवाले, तेल आदिके लेपसे अविरल हाथ पैर वाले, सुन्दर और कोमल तलुवे वाले, अवसर को जानने वाले, ७२ कलाओं को जानने वाले, दक्ष, वाग्मी या आगे आगे चलने वाले, कुशल, मेधावी, निपुण, मर्दनके तत्वको जानने वाले, परिश्रम से न थकने वाले, लेप मालिश और उबटन के अभ्यासी पुरुषों द्वारा मालिश कराई और तैलचर्म (चमड़े के भामे) से रगड़ाया। हड्डियों को सुख देने वाली, मांस को सुख देने वाली, चमड़े को सुखदेने वाली, रोमों को सुख देने वाली, चार प्रकारकी संवाहना द्वारा आराम लेने से जब राजा की थकावट दूर होगई, तब वह मर्दनशाला से निकला। निकलकर स्नानागार में आया। आकर स्नानागार में घुसा। घुसकर सब तरफ से जालियों से सुन्दर चित्र विचित्र रत्न और मणियों से जड़े हुए तले वाले रमणीय स्नान मंडप में मणियों और रत्नों से खचित चौकी पर बैठकर, शुभोदक (पवित्र स्थानों से लाये हुए जल) गंधोदक (चन्दनादि मिश्रित जल) पुष्पोदक (फूलकी गंध मिले हुए जल) और शुद्धोदक(स्वाभाविक जल) से स्नानस्थानक विधि से कौतुक पूर्वक बार २ स्नान किया। स्नान कर चुकने पर रुएँदार सुन्दर सुगंधित सुकोमल वस्त्र से शरीर पोंछा और बहुमूल्य नवीन वस्त्र पहना। उसी समय घिसा हुआ सुगन्धयुक्त गोशीर्ष चन्दन का शरीर पर लेप किया। पवित्र फूल माला धारण की और केसर आदि का लेप किया। मणियों और सोने के गहने पहने। हार (अठारह लड़ों का) अर्द्धहार (नव लड़ा) और तीन लड़ा हार पहना। कमर में लम्बी और लटकते हुए झूमक वाली करधनी पहनी। गले में आभूषण और अंगुलियों में अंगूठियां पहिना। इनके सिवाय और भी बहुत से सुन्दर २ आभूषण धारण किए। अनेक तरह के हार और भुज

एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठजावहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो तहत्ति, आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेन्ति। पडिसुणेत्ता, अदीणसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति ॥ २८ ॥

भावार्थ—यह टालकर, महारानी धारिणी के लिए यहां एक अच्छा सा सिंहासन रखवाया। सिंहासन पर कोमल गलीचा और गलीचे पर एक सफेद वस्त्र बिछाया गया। सिंहासन अच्छा और कोमल होनेसे शरीर को आराम पहुँचाने वाला था। सिंहासन रखवाकर सेवकोंको बुलाया। बुलवाकर कहा — हे देवानुप्रिय ! शीघ्र ही अष्टांग ज्योतिष शास्त्र के पाठकों को— जो कि अनेक शास्त्रों में कुशल हैं— और स्वप्नशास्त्रियों को बुलाओ। बुलाकर शीघ्र ही मुझे सूचित करो। अदीनशत्रु राजा के यह कहने पर, सेवकों का हृदय हर्षित और सन्तुष्ट होगया। वे लोग, दोनों हाथ जोड़कर, दसों नखों (अंगुलियों) को इकट्ठा करके, मस्तक के पास अंजलि करके बोले—देव ! आपकी आज्ञा प्रमाण है—ऐसा ही होगा। इस प्रकार कहकर आज्ञा को स्वीकार किया। स्वीकार करके राजा अदीनशत्रु के पास से चल दिये ॥ २८ ॥

मूलम्—पडिनिक्खमित्ता हत्थिसीसस्स नगरस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव सुमिणपाढगाणं गिहाणि, तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता सुमिणपाढए सद्दावेंति । तते णं ते सुमिणपाढगा अदीणसत्तुस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठजावहियया ण्हाया कयबलिकम्मा जावपायच्छित्ता अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा हरियालियसिद्धत्थकयमुद्धाणा सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता हत्थिसीसस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव अदीणसत्तुस्स रण्णो भवणवडिंसगदुवारे तेणेव उवागच्छंति,

उवागच्छित्ता एगयओ मिलयंति, एगयओ मिलइत्ता अदीणसत्तुस्स रण्णो भवणवडिंसगदुवारेण अणुपविसति। अणुपविसित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अदीणसत्तुं राय जएणं विजएणं वद्धावेंति। अदीणसत्तुणा रण्णा अच्चिया वंदिया पूइया माणिया सक्कारिया सम्माणिया समाणा पत्तेय पत्तेय पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ॥२६॥

**भावार्थ—** जाकर हस्तिशीर्ष नगर के बीचों बीच होकर, जहां स्वप्न शास्त्रियों के घर थे, वहाँ पहुँचे। पहुँचकर स्वप्नशास्त्रियों को बुलाया। अदीनशत्रु राजा के आमन्त्रण द्वारा बुलाए जाने पर स्वप्नज्ञ भी बहुत सन्तुष्ट हुए—प्रसन्न चित्त हुए। स्नान करके, गृह देवतों की पूजा करके, ललाट पर मांगलिक तिलक और मस्तक पर दही चावल आदि छिड़ककर, थोड़े किन्तु बहुमूल्य आभरणों से शरीर को अलंकृत करके, मस्तक पर दूब और सरसों आदि रखकर अपने अपने घरों से निकले। निकलकर हस्तिशीर्ष नगरके बीच में होकर, जिस तरफ अदीनशत्रु राजा के मुख्य महल का दर्वाजा था, उसी तरफ गये। जाकर, सब इकट्ठे हुए। इकट्ठे होकर, मुख्य महल के द्वार में घुसकर जहां बाहरी सभा और राजा अदीनशत्रु थे, वहां गये। जाकर 'जय हो' 'विजय हो' कहकर राजा को बधाई दी। राजा अदीनशत्रु ने भी उन सब की अर्चना की, वन्दना की, पूजा की, मान किया, सत्कार और सन्मान किया। वे पहले रक्खे हुए उन भद्रासनों पर अलग अलग बैठ गये ॥ २६ ॥

**मूलम्—** तते णं से अदीणसत्तू राया जवणियन्तरियं धारिणिं देविं ठवेइ। ठवेत्ता पुप्फफलपडिपुन्नहत्थे परेण विनएणं ते सुमिणपाढए एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! धारिणी देवी अज्ज तंसि तारिसयंसि सयणिज्जंसि—

जाव महासुमिण पासित्ता ण पडिबुद्धा । त एयस्स ण देवाणुप्पिया ! उरालस्स जाव सस्सिरीयस्स महासुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? ॥ ३० ॥

**भावार्थ—** पश्चात् अदीनशत्रु राजाने पर्दे के अन्दर धारिणी महारानी को बैठाया । बैठाकर फल फूल हाथ में लेकर, विनयपूर्वक, उन स्वप्नों से इस प्रकार कहने लगा—भो देवानुप्रिय ! आज उस पहले वर्णन की गई शय्या पर सोते समय धारिणी महारानी (यावत्) महास्वप्न देखकर उठी हैं । भो देवानुप्रिय ! इस महान् उदार और सश्रीक स्वप्न का क्या मंगलमय फल होगा ? ॥ ३० ॥

मूलम्— तते ण ते सुमिणपाढगा अदीणसत्तुस्स रण्णो अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जावहियया त सुमिणं सम्म ओगिण्हति, ओगिण्हित्ता ईह अणुपविसति, अणुपविसित्ता अन्नमन्नेण सद्धिं संचालेति, संचालित्ता तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा अदीणसत्तुस्स रन्नो पुरओ सुमिणसत्थाइ उच्चारेमाणे उच्चारेमाणे एव वदासी— एव खलु अम्ह सामी ! सुमिणसत्थसि बायालीस सुमिणा तीस महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा । तत्थ ण सामी ! अरिहतमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा अरिहतसि वा चक्कवट्टिसि वा गब्भ वक्कममाणसि एएसि तीसाए महासुमिणाण इमे चउद्दस-महासुमिणे पासित्ता ण पडिबुज्झति

तं जहा—

गयउसभसीहअभिसेयदामससिदिणयर झय कुंभ ।
पउमसरसागरविमाणभवणरयणुच्चयसिहिं च ॥ १ ॥

वासुदेवमायरो वा वासुदेवसि गब्भ वक्कममाणसि एएसिं

चउद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नयरे सत्तमहासुमिणे पासित्ता णं पडिवुज्झंति। बलदेवमायरो वा बलदेवंसि गब्भं वक्कम-माणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नयरे चत्तारि महासुमिणे पासित्ता णं पडिवुज्झंति। मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासु-मिणाणं अन्नयरं एगं महासुमिणं पासित्ता णं पडिवुज्झंति। इमे य णं सामी! धारिणीए देवीए एगे महासुमिणे दिट्ठे, तं उराले णं सामी! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे, जाव आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणमंगल्लकारए णं सामी! धारि-णीए देवीए सुमिणे दिट्ठे, अत्थलाभो सामी! सोक्खलाभो सामी! भोगलाभो सामी! पुत्तलाभो रज्जलाभो, एवं खलु सामी! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव दारगं पयाहिसि॥ ३१ ॥

भावार्थ— स्वप्नशास्त्री अदीनशत्रु राजा से इस विषय को सुनकर, हृदय में धारण करके संतुष्ट हुए। हृदय हर्ष से भर गया। उन्होंने उस स्वप्न का अवग्रह किया। अवग्रह करके स्वयं ईहा विचार करने लगे। ईहा करके आपस में चर्चा करने लगे। चर्चा करने से जब उसका फल मालूम होगया, गृहीत होगया, आपस में पूछताछ करने से निश्चित होगया, विनिश्चित होगया और पूर्ण निश्चित होगया, तब वे राजा अदीनशत्रु के साम्हने शास्त्रों के वाक्य उच्चारण कर करके बोले— स्वामिन्! हमने स्वप्न- शास्त्र में सब बहत्तर स्वप्न देखे हैं— बयालीस साधारण और तीस महान् स्वप्न। हे राजन्! इनमें से जब अर्हन्त और चक्रवर्ती अपनी माताके गर्भ में आते हैं, तब उनकी माताएं इन तीस महास्वप्नों में से चौदह महास्वप्न देखकर जागती हैं। वे चौदह स्वप्न इस प्रकार हैं— हाथी १ बैल २ सिंह ३ लक्ष्मी का अभिषेक ४ फूलों की माला ५ चन्द्रमा ६

सूर्य ७ ध्वजा ८ कलश ९ कमल सहित सरोवर १० समुद्र ११ वैमानिक देवों का विमान या भवनपति देवों का भवन १२ रत्नों की राशि और १४ अग्नि की ज्वाला।

जब वासुदेव गर्भ में आते है, तब उनकी माताए, इन चौदह महास्वप्नों में से कोई सात महास्वप्न देखकर जागती हैं। जब बलदेव गर्भ में आते हैं, तब उनकी माताए इन चौदह महास्वप्नोंमें से कोई चार सपने देखकर जागती हैं। जब माण्डलिक राजा गर्भ में आते हैं, तब उनकी माताए इन चौदह स्वप्नों में से एक स्वप्न देखकर जागती है। इन स्वप्नों में से धारिणी महारानी ने एक महान स्वप्न देखा है। वह स्वप्न उदार है। हे स्वामिन्! (यावत्) आरोग्य सन्तोष दीर्घायु कल्याण और मंगलकारी स्वप्न धारिणी देवी ने देखा है। स्वामिन्! अर्थ लाभ होगा, सुख लाभ होगा, भोग लाभ होगा, पुत्र लाभ होगा और राज्य लाभ होगा। हे स्वामिन्! इस तरह धारिणी महारानी पूरे नव महीने बीत जाने पर (यावत्) पुत्र को प्रसव करेगी ॥ ३१ ॥

**मूलम्— से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कन्ते विच्छिन्नविपुलबलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ अणगारे वा भाविय्पा, तं उराले णं सामी! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे, जाव आरोग्गतुट्ठि जाव दिट्ठेत्ति कट्टु भुज्जो भुज्जो अणुवूहेति। तते णं अदीणसत्तू राया तेसिं सुमिणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए करयल जाव एवं वदासी एवमेयं देवाणुप्पिया! जाव जण्णं तुब्भे वदहत्ति कट्टु, तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते सुमिणपाढए विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुलं जी**

वियारिए पीतिदाण दलयति , दलइत्ता पडिविसज्जेइ । तते ण से अदीणसत्तू राया सीहासणाओ अब्भुट्ठेति,अब्भुट्ठित्ता जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धारिणीदेविं एव वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिए! सुमिणसत्थंसि बायालीस सुमिणा तीसं महासुमिणा जाव एग महासुमिणं जाव भुज्जो भुज्जो अणुवूहति ॥ ३२ ॥

**भावार्थ—** स्वामिन् ! यह बालक बाल्यावस्था का त्याग कर कलाओं का ज्ञाता होगा । यौवन में प्रवेश करके दानी और विक्रमवान्, सेना और वाहन आदि का बढ़ाने वाला, राज्य का स्वामी राजा होगा । अथवा आत्मा में लीन होनेवाला मुनि होगा । इस प्रकार का उत्तम स्वप्न धारिणी देवी ने देखा है । इस स्वप्न के देखने से (यावत्) आरोग्य होगा, सन्तोष होगा, इस प्रकार स्वप्नज्ञ लोग बारबार कहने लगे।

अदीनशत्रु राजा स्वप्नज्ञों से यह फल सुनकर और हृदय में धारणकर (यावत्) हर्षित और सन्तुष्ट हुआ । (यावत्)हाथ जोड़कर इस प्रकार बोला, हे देवानुप्रिय ! यह ऐसा ही है, आप लोगों ने स्वप्न का जो फल कहा है, वह मैंने अच्छी तरह समझ लिया है । समझकर उन स्वप्नशास्त्रियों को बहुत सा अशन पान खाद्य स्वाद्य और वस्त्र सुगंधित मालाओं तथा अलङ्कारों से सत्कार किया, सन्मान किया । सत्कार और सन्मान करके आजीविका के योग्य प्रीति पूर्वक दान दिया । दान देकर उन्हें अपने अपने घर विदा किए । पश्चात् अदीनशत्रु राजा सिंहासन से उठा। उठकर धारिणी देवी के पास आया । आकर इस प्रकार बोला— हे देवानुप्रिये ! स्वप्न शास्त्र में बयालीस साधारण स्वप्न और तीस महास्वप्न हैं । (यावत्) उन में से तुमने एक स्वप्न देखा है । ऐसा बार बार कहने लगा ॥ ३२ ॥

**मूलम्—** तते ण सा धारिणी देवी अदीणसत्तुस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियया त सुमिण सम्म

रहित हुई, रोग मोह और भय रहित होगई । इस तरह वह सुखपूर्वक गर्भ को धारण करने लगा ॥ ३३ ॥

**मूलम्**— तते ण सा धारिणी देवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुन्नाण अद्धट्ठमाणराइदियाण वीतिक्कताण सुकुमालपाणिपाय अहीनपडिपुन्नपचिदियसरीर लक्खणवजणगुणोवेय जाव ससिसोमाकार कत पियदसण सुरूव दारग पयाया । तए णं तीसे धारिणीए देवीए अगपडियारियाओ धारिणिं देविं पसूय जाणित्ता जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छंति । उवागच्छित्ता करयलपडिग्गहियं जाव अदीणसत्तु रायं जएण विजएण वद्धावेंति । जएण विजएण वद्धावेत्ता एव वदासी— एव खलु देवाणुप्पिया ! धारिणी देवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुन्नाण जाव दारग पयाया । त एयण्ण देवाणुप्पियाण पियट्ठयाए पिय निवेदेमो । पिय भे भवतु । तए ण से अदीनसत्तू राया अगपडियारियाण अतिए एयमट्ठ सोचा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयणीव जाव रोमकूवे तासिं अगपडियारियाण मउडवज्ज जहामालिय ओमोय दलयति, दलइत्ता सेत रययामय विमलसलिलपुन्न भिंगार च गिण्हति । गिण्हित्ता मत्थए धोवइ । धोवित्ता विउल जीवियारिहं पीतिदाण दलयति । दलइत्ता सक्कारेति सम्माणेति ॥३४॥

**भावार्थ**— पश्चात् नव महीने और साढे सात दिन अर्थात् सवा नौ महीने पूरे होने पर धारिणी देवी ने सुकोमल हाथ पैर वाले सुडौल और पूर्ण पचेन्द्रियशरीर वाले, लक्षण और तिलक आदि चिन्हों से युक्त (यावत्) चन्द्रमा की तरह सौम्य, कान्त, देखने में सुन्दर और सुरूप वाले बालक को जन्म दिया । धारिणी देवी की परिचारिकाएं उसे प्रसूता जानकर अदीनशत्रु राजा की ओर चलीं । जाकर हाथ जोड़कर 'जय हो,

पडिच्छइ, पडिच्छित्ता जेणेव सए वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सय भवणमणुप्पविट्ठा । तए णं सा धारिणी देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकारविभूसिया तं गब्भं णातिसीतेहिं नातिउण्हेहिं नातितित्तेहिं नातिकडुएहिं नातिकसाएहिं नातिअंबिलेहिं नातिमहुरेहिं उउभयमाणसुहे हिं भोयणच्छायणगंधमल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हितं मितं पत्थं गब्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विविक्तमउएहिं सयणासणेहिं पतिरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुन्नदोहला सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वोच्छिन्नदोहला ववणीयदोहला ववगय रोगमोहभयपरित्तासा तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति ॥३३॥

**भावार्थ—** तत्पश्चात् वह धारिणी महारानी अदीनशत्रु राजा से इस विषय को सुनकर बहुत ही सन्तुष्ट हुई । स्वप्न को अच्छी तरह समझकर जिधर निवास गृह था, उधर चली गई । जाकर अपने महल में घुस गई। वहां जाकर स्नान किया, पूजाकी (यावत्) सर्व अलङ्कारों को धारण किया। न अधिक शीत, न अधिक उष्ण, न अधिक तीखे, न अधिक कडुवे, न अधिक कसायले, न अधिक खट्टे, न अधिक मीठे, अर्थात् ऋतु के अनुसार खाने ओढ़न और सुगन्धित मालाओं का— जो कि गर्भ के लिए हित मित और पथ्य थीं और गर्भ को पुष्ट करने वाली थीं— देश काल के अनुसार आहार और उपयोग करने लगी। एकान्त और कोमल शय्या तथा आसनों द्वारा वचनागोचर सुख मिलने से, इच्छानुकूल घूमने की जगह होने से, उसे उत्तम इच्छा उत्पन्न हुई । वह पूरी हुई और इच्छानुकूल भोग मिलने पर लेशमात्र भी अपूर्ण न रही, तब दूर हो गई, अत एव वह इच्छा

१ अ० रा० ११ उ० ११ प० ५३६ पृ० १ प १३ से प्रारम्भ

रहित हुई, रोग मोह और भय रहित होगई । इस तरह वह सुखपूर्वक गर्भ को धारण करने लगी ॥ ३३ ॥

मूलम्— तते णं सा धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्टमाणराइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीनपडिपुन्नपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणगुणोववेयं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया । तए णं तीसे धारिणीए देवीए अंगपडियारियाओ धारिणिं देविं पसूयं जाणेत्ता जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छंति । उवागच्छित्ता करयलपडिग्गहियं जाव अदीणसत्तुं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति । जएणं विजएणं वद्धावेत्ता एवं वदासी— एवं खलु देवाणुप्पिया ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव दारगं पयाया । तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं निवेदेमो । पियं भे भवतु । तए णं से अदीनसत्तू राया अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयणीव जाव रोमकूवे तासिं अंगपडियारियाणं मउडवज्जं जहामालियं ओमोयं दलयति, दलइत्ता सेतं रययामयं विमलसलिलपुन्नं भिंगारं च गिण्हति । गिण्हित्ता मत्थए धोवइ । धोवित्ता विउलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति । दलइत्ता सक्कारेति सम्माणेति ॥३४॥

भावार्थ— पश्चात् नव महीने और साढे सात दिन व्यतीत होने पर धारिणी देवी ने सुकोमल हाथ पैर वाले सुडौल और पूर्ण पंचेन्द्रियशरीर वाले, लक्षण और व्यंजन आदि चिन्हों से युक्त (यावत) चन्द्रमा की तरह सौम्य, कान्त, देखने में सुन्दर और सुरूप वाले बालक को जन्म दिया । धारिणी देवी की परिचारिकाएं उसे प्रसूता जानकर अदीनशत्रु राजा के पास चलीं । वहां हाथ जोड़कर (जय हो,

विजय हो, कहकर बधाई दी। बधाई देकर बोली—"हे देवानुप्रिय! पूरे नव महीने बीत जानेपर धारिणी देवीने पुत्र का प्रसव किया है। हे देवानुप्रिय! आप की प्रीति के लिए यह प्रिय निवेदन (सूचना) किया है। आप को प्रिय हो"। राजा अदीनशत्रु, अगसेविकाओं से यह बात सुनकर और हृदय में धरकर (यावत्) हर्षित और सन्तुष्ट हुआ। ऐसा रोमाञ्चित हो गया, जैसे कदम्ब पर जलधारा पड़ने से रोम उठ आए हों। यह जो आभूषण पहिने था, मुकुट के सिवाय सब दासियों को दे दिये। दान देकर चांदी के बने हुए सफेद, और जल से भरे हुए भृगार (झारी) को उठाया। उठाकर दासियों का सिर धोया, सिर धोकर आजीविका के योग्य विपुल प्रीतिदान दिया, प्रीतिदान देकर सत्कार किया सन्मान किया ॥ ३४ ॥

**मूलम्— सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता * पडिविसज्जेति। ततेणं से अदीणसत्तू राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिसीसं णयरं आसित्त जाव परिगयं करेह, करेत्ता चारगपरिसोहणं करेह करेत्ता माणुम्माणवद्धणं करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, जाव पच्चप्पिणंति। ततेणं से अदीणसत्तू राया अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! हत्थिसीसे नगरे अब्भिंतरबाहिरिए उस्सुक्कं उक्करं अभडप्पवेसं अदंडिमं कुडंडिमं अधरिमं अधारणिज्जं अणुद्धूयमुइंगं अमिलायमल्लदामं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं पमुइयपक्कीलियाभिरामं जहारिहं ठिइवडियं दसदिवसियं करेह। करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि करेंति, करेत्ता तहेव पच्चप्पिणंति ॥ ३५ ॥**

* ज्ञाता अ०१ सू०१८ प०३७ पृ १ प०२ से प्रारम्भ

**भावार्थ—** सत्कार और सन्मान करके उन्हें (दासियों को) विदा किया। तदनन्तर राजा अदीनशत्रु ने सेवकों को बुलवाया, बुलवाकर बोले— हे देवानुप्रिय! हस्तिशीर्ष, नगर को शीघ्र साफ कराओ, और (यावत्) छिड़काव कराओ। सफाई करा कर कैदियों को छुड़ा दो। छुड़ा कर बजारभाव सस्ता करो। सस्ता करके मुझे सूचित करो। सेवकों ने यह सब कार्य समाप्त करके राजा को सूचित कर दिया। पश्चात् अदीनशत्रु महाराज ने कुम्हार आदि अठारह जातियों और अठारह उपजातियों को बुलवाया। बुलवाकर बोले— हस्तिशीर्ष, नगर के बाहर और नगर में जाकर ऐसा (प्रबन्ध) करो कि कोई दश दिन पर्यन्त चुंगी न ले, कर आदि न ले, राजा का कोई मनुष्य जनता को सन्ताप न दे, कोई अपराध का उचित या कम दंड नहीं देने पावे, अर्थात् अपराध का कुछ भी दण्ड न दिया जाय। कोई ऋण का तगादा न करे। कोई धरना देकर न बैठे। दूसरी जगह मृदंग आदि बाजे न बजाने पावें, तथा नगर को ताजा फूलमालाओंसे शोभमान करो। उत्तम गणिकाओं का नाच कराओ। बहुत से तालाचरों (नाटककारों) से नाटक कराओ। प्रमोद और क्रीड़ा करने वालों से नगर सुशोभित करो। इसके सिवाय पुत्रजन्म सम्बन्धी कुल की मर्यादा के अनुसार दश दिन तक और २ कार्य कराओ, कराकर हमें सूचित करो। उन छत्तीस श्रेणियों के लोगों ने भी सब कार्य करके महाराज को खबर दी॥३५॥

**मूलम्—** तते णं से अदीणसत्तू राया बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने सइएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य जाएहिं दाएहिं भोगेहिं दलमाणे दलमाणे पडिच्छेमाणे पडिच्छेमाणे एवं च णं विहरति। तते णं तस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जातकम्मं करेंति, करेत्ता बितिए दिवसे जागरियं करेंति, करेत्ता ततियदिवसे चंदसूरदंसणिं करेंति, करेत्ता एवा

मेव निव्वत्ते सुइजातकम्मकरणे संपत्ते बारसाहे दिवसे विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेंति, उवक्ख डावेत्ता मित्तणाइनियगसयणसंबंधिपरिजण बल च बहवे गणणायगदंडनायग जाव आमंतेंति ततो पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय जाव सव्वालंकारविभूसिया महतिमहालयंसि भोयणमंडवंसि त विपुल असण पाण खाइम साइम मित्तणाइनियगसयणसंबंधि परियण जाव सद्धिं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमा णा एव च ण विहरंति ॥ ३६ ॥

**भावार्थ—** पश्चात् अजातशत्रु राजा बाहर की सभा में पूर्वदिशा की ओर मुंह करके सिंहासन पर विराजे। देवपूजा के लिए और आहार अभय आदि दान के लिए सैकड़ों हजारों लाखों द्रव्यों का दान दिया। तदनन्तर उस बालक के माता पिता ने पहिले दिन जातकर्म (जन्म के समय की क्रियाएं) किया। दूसरे दिन रात्रिजागरण किया, और तीसरे दिन चन्द्रमा और सूर्य के दर्शन के लिए उत्सव किया। छठे दिन जागरण किया। इन कार्यों से निवृत्त होकर शुचि जातकर्म करनेपर बारहवें दिन बहुतसा अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य भोजन बनवाया। और मित्र जाति (माता पिता भाई वगैरह) निजी (पुत्रादि) स्वजन (पिता के सम्बन्धी काका

ज्यादा व्यर्थ जाय थोड़ा खाया जाय, पूरा खा लिया जाय, इस प्रकार के आहारों को प्रीति पूर्वक ग्रहण करने लगे ॥ ३६ ॥

**मूलम्—** जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइब्भूया तं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणगणनायग० विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं वयासी-- अम्हं इमस्स दारगस्स नामेणं सुबाहुकुमारे, तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं गोण्णं गुणणिप्फन्नं णामधेज्जं करेंति सुबाहुत्ति, तते णं से सुबाहुकुमारे पंचधाई परिग्गहिए तंजहा खीरधाईए मंडणधाईए मज्जणधाईए कीलावणधाईए अंकधाईए अन्नाहि य बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणिवडभिबब्बरीबउसिजोणियपल्हविणईसिणियाधाधोरुगिणिलासियलउसियदमिलिसिंहलिआरबिपुलिंदिपक्कणिबहलिमुरुंडिसबरिपारसीहिं णाणादेसीहिं विदेसपरिमंडियाहिं इंगितचिंतियपत्थियवियाणियाहिं सदेसणेवत्थगहितवेसाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं चेडियाचक्कवालवरिसधरकंचुइज्जमहयरगवंदपरिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे परिगिज्जमाणे चालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे रम्मंसि मणिकोट्टिमतलंसि परिमिज्जमाणे परिमिज्जमाणे णिव्वायणिव्वाघायंसि गिरिकंदरमल्लीणेव चंपगपायवे सुहंसुहेणं वड्ढइ ॥३७॥

**भावार्थ—** भोजन करने के पश्चात् राजा और रानी सिंहासन पर विराजे। विराज कर निर्मल जल से परम पवित्र होकर, मित्र, ज्ञाति, निजी स्वजन, सम्बन्धी, परिजन और गणनायकों का फूल, वस्त्र सुगन्धित माला और अलंकारों से सत्कार और सन्मान किया। सत्कार और

सन्मान करके बोले— हमने इस बालक का गुण निष्पन्न 'सुबाहुकुमार' यह नाम रक्खा है। तदनन्तर सुबाहुकुमार का पाच धायों ने ग्रहण किया। वे इस प्रकार हैं— १ दूध पिलाने वाली, २ शृंगार कराने वाली, ३ स्नान कराने वाली, ४ खेल कराने वाली, ५ गोद में खिलाने और पलने में झुलाने वाली तथा और भी अनेक टढी जाघ वाली चिलात देश की, बौना शरीर वाली, बड़े पेट वाली, बर्बर देश की बकुश देशकी, योनक (जायिय) देश की, पल्हव देश की, इसिनिक देश की, धोरुकिन देश की, ल्हासक देश की, लकुसिक देश की, द्रविड देशकी, सिंहल देशकी, अरबदेशकी, पुलिंददेशकी, पक्कणदेशकी, बहलदेशकी, मुरुंडदेशकी, शबर देश की, पारस देश की इत्यादि बहुत से अनार्य देशों की स्वदेश और परदेश से प्राप्त होने वाली, चेष्टा से अभिप्राय को जानने वाली इशारे से मन में सोचे हुए को जानने वाली, बचन से न कहने पर भी आवश्यकता को समझने वाली, अपने २ देश का वेश पहनने वाली, बहुत ही चतुर और विनीत, दासियों के समूह और कचुकी (रनवासके रखवाले) तथा अन्तःपुर की रक्षा की चिन्ता करनेवालों से घिरा हुआ, हाथों हाथ रहने लगा। वह एक की गोद से दूसरे की गोद में जाता, दासियां गाना सुनातीं, झुलातीं और प्यार करती थीं। इस प्रकार अति रमणीय मणियों से विभूषित आगन में अनेक प्रकार के आनन्द करता हुआ बाधा रहित होकर खेलता हुआ सुबाहुकुमार पवन के मंडप में रहने वाले चम्पक वृक्ष के समान सुख से बढ़ने लगा ॥३७॥

**मूलम्—+ तए णं तस्स सुबाहुस्स दारगस्स अम्मा पियरो अणुपुव्वेण ठितिवडियं वा चंदसूरदंसावणियं वा जागरियं वा नामकरणं वा परंगामणं वा पयचंकमणं वा जे मामणं वा पिंडवद्धणं वा पजपावणं वा कण्णवेहणं वा**

+ भगवती श-११उ ११

सञ्चङ्कमणगं वा चोलोवणगं वा उवणयणं वा अण्णा-णि य बहूणि गब्भाधाणजम्मणमादियाइं कोउयाइं करेंति। * तते णं तं सुबाहुकुमारं अम्मापियरो सातिरेगअट्ठवासजातगं चेव गब्भट्ठमे वासे सोहणंसि तिहिकरणमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति। तते णं से कलायरिए सुबाहुकुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेति सिक्खावेति ॥३८॥ तं जहा—

**भावार्थ—** तत्पश्चात् उस सुबाहुकुमार बालक के माता पिता, [illegible] स्थितिपतित (पुत्र जन्म का उत्सव विशेष) तथा चन्द्रसूर्य दर्शन, रात्रि जागरण, नामकरण, घुटनों से चलना, पैरों के बल खड़े करना, भोजन कराना, ग्रास का बढ़ाना, उच्चारण कराना, कानों का छिदाना, वर्षगांठ मनाना, चोटी रखाना, उपनयन संस्कार (कला ग्रहण करवाना) आदि अनेक गर्भाधान और जन्म आदिक कौतुक करने लगे। इस प्रकार जब आठ वर्ष और कुछ दिन बीत गए, तब सुबाहुकुमार के माता पिताने उसे शुभतिथि शुभकरण और शुभमुहूर्त में कलाचार्य (पण्डितजी) को सौंप दिया। सौंपने के अनन्तर पण्डितजी ने सुबाहुकुमार को लिखना, गणित से लेकर पक्षी आदिक जानने का शकुन ज्ञान तक बहत्तर कलाएँ, सूत्र अर्थ (व्याख्यान) और करण (प्रयोग) द्वारा सिखाईं ॥३८॥ वे निम्न प्रकार हैं—

**मूलम्—** तंजहा—लेहं गणियं रूवं णट्टं गीयं वाइयं सरग(य)यं पोक्खरगयं समतालं जूयं १०, जणवायं पासयं अट्ठावयं पोरेक (च्च) च दगमट्टियं अन्नविहिं पाणविहिं वत्थविहिं विलेवणविहिं सयणविहिं २०, अज्जं पहेलियं मागहियं गाहं गीतियं सिलोयं हिरण्णजुत्तिं सुवण्णजुत्तिं चुण्णजुत्तिं

* ज्ञाता अ० १ सू० १८ पत्र ८८ पृ० १

३६ गाय बैल के लक्षणों का ज्ञान ३७ मुर्गों के लक्षणों का ज्ञान ३८ छत्र के लक्षण का ज्ञान ३९ दाम आदि के दण्ड के लक्षण का ज्ञान ४० तलवार के लक्षण का ज्ञान ४१ काकणी (रत्न हाथी आदि) के लक्षण का ज्ञान ४२ मणियों के लक्षण का ज्ञान ४३ वास्तु शास्त्र (घर आदि बनाने की विधि) का ज्ञान ४४ अक्षौहिणी आदि सेना के निर्माण (रचना) करने की कला ४५ नगर प्रमाण के परिमाण का ज्ञान ४६ व्यूह रचना करने का ज्ञान ४७ शत्रुसेना के व्यूह का भेदन की कला ४८ सेना का सञ्चार करने का ज्ञान ४९ विरोधी सेना के विरुद्ध सेना सञ्चार करने का ज्ञान ५० चक्र के आकार की व्यूह रचना करने का ज्ञान ५१ गरुड़ाकार व्यूह-रचना करने का ज्ञान ५२ शकट (गाडी) के आकार व्यूह रचना करने का ज्ञान ५३ संग्राम (युद्ध) करने का ज्ञान ५४ विशेष युद्ध करने का ज्ञान ५५ धारा मारकर संग्राम करने का ज्ञान ५६ अस्थि (हड्डी) से युद्ध करने का ज्ञान ५७ मुष्टि (मुट्ठियों से) युद्ध करने का ज्ञान ५८ बाहु युद्ध करने का ज्ञान ५९ लतायुद्ध करने का ज्ञान ६० बाण शास्त्र का ज्ञान अथवा थोड़ा चावल को बहुत और बहुत को थोड़ा दिखाने की कला ६१ खड्ग मणि से शस्त्र चलाने का ज्ञान ६२ धनुर्विद्या का ज्ञान ६३ हिरण्यपाक (चांदी शुद्ध करना) का ज्ञान ६४ सुवर्णपाक (सोना शुद्ध करना) का ज्ञान ६५ सूत्रछेदन कला ६६ प्रतिसरण करना ६७ कमल के दंड को भेदन की कला ६८ पत्ता का छेदन की कला ६९ कट (चटाई) के समान वस्तुओं को छेदन का ज्ञान ७० मरे हुए का मन्त्र से जिन्दा करने का ज्ञान ७१ जिन्दे का मरा सा दिखाने की कला और ७२ पक्षियों का शब्द सुनकर शुभाशुभ फल का ज्ञान ॥ ३९ ॥

मूलम्— तते ण से कलायरिए सुबाहुं कुमारं लेहा-इयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेति सिक्खा-

आभरणविहिं ३०, तरुणीपडिकम्म इत्थिलक्खण पुरिसलक्खण हयलक्खण गयलक्खण गोणलक्खण कुक्कुडलक्खण छत्तलक्खण डंडलक्खण असिलक्खण ४०, मणिलक्खण कागणिलक्खण वत्थुविज्ज खंधारमाण नगरमाण वूह पडिवूह चार पडिचार चक्कवूह ५०, गरुलवूह सगडवूह जुद्ध णिजुद्ध जुद्धातिजुद्ध अट्ठिजुद्ध मुट्ठिजुद्ध बाहुजुद्ध लयाजुद्ध ईसत्थ ६०, छुरप्पवाय धणुव्वेय हिरन्नपाग सुवन्नपाग सुत्तखेड्ड वट्टखेड्ड नालियाखेड्ड पत्तच्छेज्ज कडच्छेज्ज सज्जीव ७०, निज्जीव सउणरुयमिति ॥ ३० ॥

**भावार्थ—** १ अक्षर लिखने की कला २ गणितकला ३ रूपकला (चित्रकारी) ४ नाटक करने की कला ५ गानकला ६ बाजा बजाने का ज्ञान ७ स्वर के आलाप का विज्ञान ८ मर्दल बाजा कला ९ समताल बजाना १० जुआ खेलने का ज्ञान ११ जनवाद (वादविवाद करना) १२ पासा खेलने का ज्ञान १३ शतरंज या चौपड़ खेलने का ज्ञान १४ ग्राम नगर आदि की रक्षा करना १५ जल और मिट्टी के संयोग से बनने वाली वस्तुओं का ज्ञान १६ अन्न पकाने की कला १७ जल के संस्कार करने की कला १८ वस्त्र सम्बन्धी सब तरह का ज्ञान १९ शरीर पर तैल आदि का मर्दन— लेप करने का ज्ञान २० शयन का ज्ञान २१ आर्या छन्द में रचना करने का ज्ञान २२ पहेली बनाने की कला २३ मागधी भाषा की कविता बनाने का ज्ञान २४ गाथा रचना करने का ज्ञान २५ गीत बनाने का ज्ञान २६ श्लोक बनाने का ज्ञान २७ चांदी बनाने की विधि का ज्ञान २८ सुवर्ण बनाने की विधि का ज्ञान २९ चूर्ण (अबीर आदि) बनाने का ज्ञान ३० आभूषण घड़ने का ज्ञान ३१ तरुण स्त्री का शृंगार सम्बन्धी ज्ञान ३२ स्त्रियों के लक्षणों का ज्ञान ३३ पुरुषों के लक्षणों का ज्ञान ३४ घोड़ों के लक्षणों का ज्ञान ३५ हाथियों के लक्षणों का ज्ञान

वेति, सेहावेत्ता सिरसावेत्ता अम्मापिऊण उवणेइ। तते णं सुबाहुकुमारस्स अम्मापियरो तं कलायरियं महुरहिं वयणेहिं विपुलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण सक्कारेति सम्माणेति। सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयति। दलइत्ता पडिविसज्जेति। तते णं से सुबाहुकुमारे बावत्तरिकलापण्डिए णवंगसुत्तपडिबोहिए, अट्ठारसविहिप्पगारदेसी भासाविसारए गीयरई गन्धव्वनट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलंभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाए यावि होत्था। तते णं तस्स सुबाहुकुमारस्स अम्मापियरो सुबाहुकुमारं बावत्तरिकलापण्डियं जाव वियालचारी जायं पासंति। पासित्ता पंचसयपासायवडेंसगे करेंति, अब्भुग्गयमूसियपहसियं विव मणिकणगरयणभत्तिचित्ते वाउद्धुयविजयवेजयन्तीपडागाछत्ताइछत्तकलिए तुंगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे जालंतररयणपंजरुम्मिलियव्व मणिकणगथूभियाए वियसियसयवत्तपुंडरीए तिलयरयणद्धचंदच्चिए णाणामणिमयदामालंकिते अंतो बहिं च सण्हे, तवणिज्जरुइलवालुयापत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, तेसिं णं पासादवडिंसगाणं बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महेगं भवणं करेंति, अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं अब्भुग्गयसुकयवइरवेइयातोरणं वररइयसालभंजियासुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थवेरुलियखंभं णाणामणिकणगरयणखचियउज्जलं बहुसमसुविभत्तनिचियरमणिज्जभूमिभागं ईहामियउसभतुरगणरमगरविहगवालगकिण्णररुरुसरभचमरकुंजर

१ चेव। २ भग० श० ११ उ० ११ पत्र ५४८ पृ० २ पं० ३ से। ३ ज्ञाता चालू।

बल्पर प्रकार म हा विचरण करता था।

सुबाहुकुमार के माता पिता ने सुबाहुकुमार का बहत्तर कलाओं में प्रवीण (पावत) अकाल ही में विचरण करने वाला जानकर पाचसौ उत्तम उत्तम महल बनवाए। वे महल बहुत ऊँचे थे और स्वच्छ प्रभा से ऐसे मालूम होते, मानो हँस रहे हैं। मणि, सुवर्ण, और रत्नों से रचित होने से अचम्भा पैदा करते थे। विजय का सूचना करने वाला वायु से हिलती हुई पताकाओं और पताकाओं के ऊपर की पताकाओं तथा छत्र और छत्रों के ऊपर के छत्रों से युक्त थे। बहुत ऊँचे थे, अतः ऐसे मालूम होते थे, मानो उन के शिखर आकाशतल को लांघ रहे हों। जालियों के मध्य भाग में अथवा खिड़कियों में लगे हुए रत्न चमकते थे। स्तम्भ, मणि और सुवर्ण से जड़े हुए थे। उन में शतपत्र (सौ पत्ते वाले) कमल खिले हुए थे। तिलक रत्न और सीढ़ियों से युक्त थे। नाना मणिमय मालाओं से शोभमान थे। भीतर बाहर से चिकने थे। तपे हुए सोने की सुन्दर रेत के बने हुए फर्शवाले महलों के आंगन बड़े भले मालूम होते थे। छूने में अच्छे, सुन्दर रूपवाले चित्तको प्रसन्न करने वाले, दर्शनीय मनो- हर और देखने वालों को भिन्नभिन्न रूप वाले मालूम होते थे। उन उत्तम महलों के बीचोंबीच एक बड़ा भवन बनवाया उसमें सैंकड़ों स्तम्भ बने थे, जिसमें लीला करती हुई पुतलियां बनी हुई थीं। वज्रमय वेदिकाओं पर तोरण बने थे। तोरणों के ऊपर भी सुन्दर सुन्दर पुतलियां बनाई गई थीं। विशेष आकार वाले सुन्दर और स्वच्छ बने हुए वैडूर्य मणि के खम्भों पर पुतलियाँ बनी हुई थीं। अनेक मणि सुवर्ण रत्नों से वह भवन प्रकाशित था। वहाँ की भूमि समतल अच्छी तरह रची हुई और अतिशय रमणीय थी। उसमें भेड़िया बैल घोड़ा मनुष्य मगर पक्षी सर्प किन्नर मृग अष्टापद चमरी गाय हाथी वनलता और पद्मलताओं के चित्र बने थे। खम्भों के ऊपर हीरे की बनी हुई वेदिकाओं से मनोहर था। एकसी पंक्ति में विद्याधरों के

जोड़ाकी चलती फिरती प्रतिमायें बनी थीं। उनमें से हजारों किरणें निकल रहीं थीं। उस में हजारों रूप थे। दैदीप्यमान था अतिशय देदीप्यमान था। उसे देखते ही नेत्र उस में गड़ जाते थे। स्पर्श सुखकर, रूप मनोहर था। नीचे की भूमि सोना, मणि और रत्नों की बनी थी। उसका शिखर अनेक तरहके पांचवर्ण वाले घण्टा और पताकाओं से मंडित था। सफेद किरण रूप कवच को धारण कर रहा था, लिपा पुता था। घिसे हुए ताजे गोशीर्ष (मलियागिरि चन्दन) और रक्तचन्दनके थापे (हाथे) लगे हुए थे। दरवाजे पर मांगलिक कलश स्थापन किये गए थे। चन्दन लिप्त घट, तोरण और प्रतिद्वारों पर स्थापित किए थे। नीचे से ऊपर तक लम्बी चौड़ी फूलों की मालाएं लटकी हुई थी। पांच वर्णों के ताजे सुगन्धित फूलों के ढेर लगे थे। कृष्णागर चन्दन लोबान और दशांग धूप की लहराती हुई सुगन्ध से युक्त उत्तमोत्तम सुगन्धि से सुगन्धित, अत एव गन्धकी गोली जैसा किया गया था। उस भवन को देखते ही चित्त प्रसन्न हो जाता था। उसे देखने में नेत्रों को कुछ श्रम न पड़ता था, और देखने वाले को भिन्नभिन्न रूप दिखाई देते थे। मतलब यह कि वह भवन अत्यन्त मनोहर था ॥४०॥

**मूलम्—*तए णं तं सुबाहुकुमारं अम्मापियरो अन्नया कयाइ सोभणंसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पमक्खणगण्हाणगीयवाइयपसाहणट्ठंगतिलगकंकणअविहववहूउवणीयं मंगलसुजंपिएहि य वरकोउयमंगलोवयारकयसंतिकम्मं सरिसियाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाणं सरिसेएहिंतो राय**

---

* भगवती शतक ११ उद्देश ११ सूत्र ४३० पत्र ५४६ पृ० १ प० १
† ज्ञाता अ० १ सू० २० पत्र ३९ पृ० १ प० ५ से ६ तक।

कुलेहिंतो आणीइच्छियाण पसाण्णटुगअविहवबहु ओरयणा मगलसुजपियाहिं पुप्फचूलापामोक्खाहिं पचमयाहिं रायव रकण्णगाहिं सिद्धिं एगदिवसेणा पाणि गिण्हाविंसु। तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स अम्मापियरा अयमेयारूवं पी इदाण दलयति।

तजहा— पचसयहिरणणकोडीओ पचसयसुवन्नकोडी ओ पचसयमउडे मउडप्पवरे पचसयकुंडलजुए कुडलजुयप्प वरे पचसयहारे हारप्पवरे पणसयअद्धहारे अद्धहारप्पवरे पणसयएगावलीओ एगावलिप्पवराओ एव मुत्तावलीओ एव कणगावलीओ एव रयणावलीओ पचसयकडगजोए कडगजोयप्पवरे एव तुडियजोए पणसयखोमजुयलाइ खो मजुयलप्पवराइ एव वडगजुयलाइ एव पट्टजुयलाइ एव दु गुल्लजुयलाइ पणसयसिरीओ पणसयहिरीओ एव धिती ओ कित्तीओ बुद्धीओ लच्छीओ पणसयनन्दाइ पणसयभद्दाइ पणसयतले तलप्पवरे सव्वरयणामए णियगवरभवणकेऊ पणसयज्झए झयप्पवरे पणसयवए वयप्पवरे दसगोसा हस्सिएण वएण पणसयनाडगाइ नाडगप्पवराइ बत्तीसबद्धेण नाडएण पणसयआसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघर पडिरूवए पणसयहत्थी हत्थिप्पवर सव्वरयणामए सिरिघर पडिरूवए पणसयजाणाइ जाणप्पवराइ पणसयजुग्गाइ जुग्गप्पवराइ एव सिवियाओ एव सदमाणीओ एवगिल्लीओ थिल्लीओ पणसयवियडजाणाइ वियडजाणप्पवराइ पणस यरहे पारिजाणिए पणसयरहे सगामिए पणसयआसे आस प्पवरे पणसयहत्थी हत्थिप्पवरे पणसयगामे गामप्पवरे

२ भगवती चाहू

दसकुलसाहस्सिएणं गामेणं पणासयठामे दासप्पवरे एव चेव
दासीओ एवं किंकरे एवं कंचुइज्जे एवं वरिसधरे एवं महत्तरए
पणासयसोवन्निए ओलंबणदीवे पणासयरुप्पामए ओलंबण-
दीवे पणासयसुवन्नरुप्पामए ओलंबणदीवे पणासयसोवन्निए
उक्कंचणदीवे एवं चेव तिन्नि वि, पणासयसोवन्निए पंजरदीवे
एवं चेव तिन्नि वि, पणासयसोवन्निए थाले पणासयरुप्पामए थाले
पणासयसुवन्नरुप्पामए थाले पणासयसोवन्नियाओ पत्तीओ
पणासयरुप्पामयाओ पत्तीओ पणासयसुवन्नरुप्पामयाओ पत्ती-
ओ पणासयसोवन्नियाइं थासगाइं पणासयरुप्पामयाइं थासगा-
इं पणासयसुवन्नरुप्पामयाइं थासगाइं पणासयसोवन्नियाइं
मल्लगाइं पणासयरुप्पामयाइं मल्लगाइं पणासयसुवन्नरुप्पाम-
याइं मल्लगाइं पणासयसोवन्नियाओ तलियाओ पणासयरुप्पा-
मयाओ तलियाओ पणासयसुवन्नरुप्पामयाओ तलियाओ
पणासयसोवन्नियाओ कइवियाओ पणासयरुप्पामयाओ
कइवियाओ पणासयसुवन्नरुप्पामयाओ कइवियाओ पणासय-
सोवन्निए अवएडए पणासयरुप्पामए अवएडए पणासयसुवन्न-
रुप्पामए अवएडए पणासयसोवण्णियाओ अवयक्काओ
पणासयरुप्पामयाओ अवयक्काओ पणासयसुवण्णरुप्पामयाओ
अवयक्काओ पणासयसोवण्णिए पायपीढए पणासयरुप्पामए
पायपीढए पणासयसुवण्णरुप्पामए पायपीढए, पणासयसोव-
ण्णियाओ भिसियाओ पणासयरुप्पामयाओ भिसियाओ
पणासयसुवण्णरुप्पामयाओ भिसियाओ पणासयसोवण्णि-
याओ करोडियाओ पणासयरुप्पामयाओ करोडियाओ
पणासयसुवण्णरुप्पामयाओ करोडियाओ, पणासयसोवण्णिए
पल्लंके, पणासयरुप्पामए पल्लंके पणासयसुवण्णरुप्पामए प-

ल्लके,पणासयसोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ पणासयरुप्पामया ओ पडिसेज्जाओ पणासयसुवण्णरुप्पामयाओ पडिसेज्जाओ, पणासयहंसासणाइं पणासयकोंचासणाइं एव गरुलासणाइं उन्नयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं पणासयपउमासणाइं पणासयदिसासोवत्थियासणाइं पणासयतेल्लसमुग्गे जहा रायपसेणिज्जे जाव पणासय सरिसवसमुग्गे पणासयखुज्जाओ जहा उववाइए जाव पणास यपारिसाओ पणासयछत्ते पणासयछत्तधारीओ चेडीओ पण सयचामराओ पणासयचामरधारीओ चेडीओ पणासयतालि यंटे पणासयतालियंटधारीओ चेडीओ पणासयकरोडियाधारीओ चेडीओ पणासयखीरधाईओ जाव पणासयअंकधाईओ पणासयअंगमद्दियाओ पणासयउम्मद्दियाओ पणासयण्हावियाओ पणासयपसाहियाओ पणासयवण्णगपेसीओ पणासय चुण्णगपेसीओ पणासयकीडागारीओ पणासयदवकारीओ प णासयउवत्थाणियाओ पणासयनाडइज्जाओ पणासयकोडुंबि णीओ पणासयमहाणसिणीओ पणासयभंडागारिणीओ पण- सयअज्झाधारिणीओ पणासयपुप्फधारिणीओ पणासयपाणि अधारिणीओ पणासयबलिकारियाओ पणासयसेज्जाकारिया ओ पणासयअब्भिंतरियाओ पडिहारीओ पणासयबाहिरपडि हारीओ पणासयमालाकारीओ पणासयपेसणकारीओ अण्णं वा सुबहुं हिरण्णं वा सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा विउलध णकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणसंतसार- सावइज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं परिभोत्तुं पकामं परिभाएउं ॥४१॥

**भावार्थ—** इसके बाद (सुबाहुकुमारके) माता पिताने शुभ तिथि शुभ करण शुभ दिन शुभ नक्षत्र और शुभ मुहूर्तमे सुबाहुकुमारको, जो कि स्नान कर चुका था । देव पूजा कर चुका था । मांगलिक तिलक आदि किये हुए था । सब अलँकार से भूषित था । सुहागिन स्त्रियों से मर्दन (मालिश) स्नान, गीत वादित्र मंडन और आठो अंगों पर तिलक लगवाया तथा कंकण बंधाया, मांगलिक वचन बोलकर प्रधान कौतुक, मंगलोपचार और शान्तिकर्म किया । फिर एक-सरीखा, समान त्वचावाली, समान वय वाली, समान रूप लावण्य और यौवन वाली, विनीत, कौतुक मंगल प्रायश्चित्त कर लिया है जिन्हों ने ऐसी, समान राजकुलों से बुलाई गई, 'पुष्पचूला' वगैरह उन पांच सौ राजकन्याओं को, सुहागिनी स्त्रियों से आठों अंगों में भूषण पहनाकर और मांगलिक गान पूर्वक, उन कन्याओं के साथ एक ही दिन पाणि-ग्रहण (विवाह) करा दिया, पश्चात् सुबाहुकुमार के माता पिता ने नीचे लिखा हुआ दान प्रेम पूर्वक दिया, वह इस प्रकार है—

पांच सौ चांदी के सिक्के, पांच सौ सोने के सिक्के, पांच सौ मुकुट, पांच सौ उत्तम मुकुट, पांच सौ कुण्डलों के जोड़, पांच सौ उत्तम कुंडलों के जोड़, पांच सौ हार, पांच सौ उत्तम हार, पांच सौ अर्द्धहार, पांच सौ उत्तम अर्द्धहार, पांच सौ एकावली हार, पांच सौ उत्तम एकावली हार, पांच सौ मुक्तावली हार, पांच सौ उत्तम मुक्तावली हार, पांच सौ कनकावली हार, पांच सौ उत्तम कनकावली हार, पांच सौ रत्नावली हार, पांच सौ उत्तम रत्नावली हार, पांच सौ जोड़ कड़े, पांच सौ उत्तम जोड़ कड़े, पांच सौ जोड़ भुजबंध, पांच सौ जोड़ उत्तम भुजबंध, इसी तरह अलसी के वस्त्र युगल, रेशम के वस्त्र युगल, पांच सौ पट्टसूत्र के युगल, पांच सौ दुकूल, पांच सौ श्रीदेवी की प्रतिमाएं, पांच सौ ह्रीदेवी की प्रतिमाएं, पांच सौ धृतिदेवी की प्रतिमाएं, पांच सौ कीर्तिदेवी की प्रतिमाएं, पांच सौ बुद्धिदेवी की प्रतिमाएं, पांच सौ लक्ष्मीदेवी की प्रतिमाएं,

विहवरतरुणीसंपउत्तेहिं उवनच्चिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे पाउस १ वासारत्त २ सरद ३ हेमंत ४ वसंत ५ गिम्ह ६ पज्जंते छप्पि उऊ जहाविभवेण माणमाणे माणमाणे कालं गालेमाणे गालेमाणे इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरति ॥४३॥

भावार्थ— अनन्तर सुबाहुकुमार ऊपर के महल में रहता हुआ अनेक तरुणी रमणियों से युक्त तथा मृदंगों की ध्वनि सहित, बत्तीस प्रकार के नाटकों में स्वेच्छानुसार नाच और गान करता हुआ, सुखपूर्वक २ क्रीड़ा करता हुआ रहने लगा। प्रावृट्, वर्षा, शरद, हेमन्त, वसन्त, और ग्रीष्म इन छह ऋतुओं में ऐश्वर्य के अनुसार काल को व्यतीत करता हुआ पांच प्रकार के इष्ट रूप रस गन्ध स्पर्श—कामभोगों को भोगता हुआ रहने लगा॥४३॥

मूलम्— तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सयंसंबुद्धे पुरिसुत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए जीवदए दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे वियट्टछउमे जिणे जावए तिन्ने तारए मुत्ते मोयगे बुद्धे बोहए सव्वन्नू सव्वदरिसी सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तिअं सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे अरहा जिणे केवली सत्तहत्थुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे अणुलोमवाउवेगे कंकग्गहणी कवोयपरिणामे सउणिपोसपिट्ठंतरोरुपरिणए पउमुप्पलगंधसरिसनिस्साससुरभिवयणे छवी निरायंकउत्तमपसत्थअइसेयनिरुवमपले जल्लमल्लकलंकसेयरयदोसवज्जियसरीरनिरुवलेवे छायाउज्जो

ट्अगमगे घणनिचियसुबद्धलक्खणुण्णयकूडागारनिभपिं
डियग्गसिरए सामलियाबोंडघणनिचियच्छोडियमिउविसयप
सत्थसुहुमलक्खणसुगंधसुंदरभुयमोयगभिंगनेलकज्जलपहि
ट्ठभमरगणणिद्धणिकुरबणिचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसि
रए दालिमपुप्फप्पगासतवणिज्जसरिसनिम्मलसुणिद्धकेस
न्तकेसभूमी घणनिचिय० छत्तागारुत्तमंगदेसे णिव्वणसम
लट्ठमट्ठचंदद्धसमणिडाले उडुवइपडिपुण्णसोमवयणे अल्लीण
पमाणजुत्तसवणे सुस्सवणे पीणमंसलकवोलदेसभाए आ
णामियचावरुइलकिण्हब्भराइतणुकसिणणिद्धभमुहे अवदा
लियपुंडरीयणयणे कोआसियधवलपत्तलच्छे गरुलायतउ
ज्जुतुंगणासे उवचियसिलप्पवालबिंबफलसण्णिभाहरोट्ठे
पंडुरससिसयलविमलणिम्मलसंखगोखीरफेणकुंदवगरय-
मुणालिआधवलदन्तसेढी अखंडदंते अप्फुडियदंते अवि
रलदंते सुणिद्धदंते सुजायदंते एगदंतसेढी विव अणेगदंते हुय
वहणिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहे अवट्ठिय-
सुविभत्तचित्तमंसू मंसलसंठियपसत्थसदूलविउलहणूए चउ
रंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसग्गीवे वरमहिसवराहसीहसद्दूल
उसभनागवरपडिपुण्णविउलक्खंधे जुगसन्निभपीणरइयपीवर
पउट्ठसुसंठियसुसिलिट्ठविसिट्ठघणथिरसुबद्धसंधिपुरवरफलिह
वट्टियभुए भुअईसरविउलभोगआदाणपलिहउच्छूढदीहबाहू
रत्ततलोवइयमउअमंसलसुजायलक्खणपसत्थअच्छिद्द -
जालपाणी पीवरकोमलवरंगुली आयंबतंबतलिणसुइरुइलणि
द्धणक्खे चंदपाणिलेहे सूरपाणिलेहे संखपाणिलेहे चक्कपा
णिलेहे दिसासोत्थियपाणिलेहे चंदसूरसंखचक्कदिसासोत्थि

सपाणिलेहे कणगसिलातलुज्जलपसत्थसमतलउवचियवि
च्छिण्णपिहुलवच्छे सिरिवच्छंकियवच्छे अकरंडुअकणग-
रुययनिम्मलसुजायनिरुवहयदेहधारी अट्ठसहस्सपडिपुण्णवर-
पुरिसलक्खणधरे सण्णयपासे संगयपासे सुंदरपासे सुजा-
यपासे मियमाइयपीणरइयपासे उज्जुयसमसंहियजच्चतणु-
कसिणणिद्धआइज्जलडहरमणिज्जरोमराई झसविहगसुजा
यपीणकुच्छी झसोदरे सुइकरणे पउमवियडणाभे गंगाव
त्तकपयाहिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणतरुणबोहियअकोसा-
यंतपउमगंभीरवियडणाभे साहयसोणंदमुसलदप्पणणिकरि-
यवरकणगच्छरुसरिसवरवइरवलियमज्झे पमुइयवरतुरग-
सीहवरवट्टियकडी वरतुरगसुजायसुगुज्झदेसे आइण्णहउव्व
णिरुवलेवे वरवारणतुल्लविक्कमविलसियगई गयससणसु
जायसन्निभोरू समुग्गणिमग्गगूढजाणू एणीकुरुविंदावत्तव
ट्टाणुपुव्वजंघे संठियसुसिलिट्ठविसिट्ठगूढगुप्फे सुप्पइट्ठियकु
म्मचारुचलणे अणुपुव्वसुसंहयंगुलीए उण्णयतणुतंबणिद्धण-
क्खे रत्तुप्पलपत्तमउयगयतणुतंबणिद्धणक्खे रत्तुप्पलपत्त-
मउयसुकुमालकोमलतले अट्ठसहस्सवरपुरिसलक्खणधरे न-
गनगरमगरसागरचक्कवरंकमंगलंकियचलणे विसिट्ठरूवे
हुयवहनिद्धूमजलियतडितडियतरुणरविकिरणसरिसतेए -
अणासवे अममे अकिंचणे छिन्नसोए निरुवलेवे ववगयपेम
रागदोसमोहे निग्गंथस्स पवयणस्स देसए सत्थनायगे पइट्ठा
वए समणगपई समणगविंदपरियट्टए चउत्तीसबुद्धवयणाति
सेसपत्ते पणतीससच्चवयणातिसेसपत्ते। आगासगएणं चक्के
णं आगासगएणं छत्तेणं आगासियाहिं सेयवरचामराहिं आ
गासफलिहामएणं सपायपीढेणं सीहासणेणं धम्मज्झएणं पु

**ओ पकड्डिज्जमाणेण(*चउद्दसाहिं समणसाहस्सीहिं छत्तीसा ए अज्जियासाहस्सीहिं) सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चर-माणे गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे हत्थि सीसे नगरे पुप्फकरंडे उज्जाणे वणओ पुढवीसिलापट्ट‌ए वण्ण - ओ तहेव समोसरति॥ ८४ ॥**

**भावार्थ—** उस काल के उसी समय, भगवान महावीर जो कि अरिहत अवस्था में धर्म की आदि करने वाले, चार संघों की स्थापना करनेवाले, स्वयंबुद्ध पुरुषोत्तम पुरुषसिंह पुरुषपुण्डरीक, पुरुषवरगन्धहस्ती, अभयदाता, ज्ञानदाता मोक्षमार्गदाता, अशरण के शरण, संयमदाता, संसार समुद्र में द्वीप की नाईं सहारा देने वाले, सब जीवों के आधार भूत, चक्रवर्ती की तरह तीन समुद्र और हिमवान् पर्वत तक धर्मचक्र चलाने वाले, निरावरण और उत्तम ज्ञान दर्शन को धारण करने वाले, छद्मस्थ (असर्वज्ञ) ता से रहित, रागद्वेष को जीतने वाले, रागद्वेष आदि के स्वरूप कारण और फल को जानने वाले, संसार रूपी समुद्र से तिरने और तारने वाले स्वयं घातिया कर्मों से मुक्त और दूसरों के मुक्त करने वाले, तत्त्वों के ज्ञाता और दूसरों को ज्ञान देने वाले, सिद्ध अवस्था की अपेक्षा सर्वज्ञ और सर्वदर्शी, निरुपद्रव, निश्चल, नीरोग अनन्त, अक्षय, निराबाध, जिसमें वापस न आवें ऐसी सिद्धगति को प्राप्त होने वाले, इन्द्रों से पूज्य, जिन, केवली, सात हाथ लम्बे, समचतुरस्र संस्थान वाले, वज्रऋषभनाराच संहनन वाले, शरीर के अन्दर की अनुकूल वायु के वेग वाले, कबूतर की नाईं नाराग गुदा स्थान वाले, कबूतर की तरह तीव्र जठराग्निवाले, शकुनि पक्षी की तरह मल से निर्लेप अपान (गुदा) वाले, पीठ पसवाड़े और जांघों के विशेष (सुन्दर) आकार वाले थे। भगवान का पद्म, सुगन्धि द्रव्यविशेष) और नीले कमल सरीखी सुगन्ध वाले निःश्वास से सुगन्धित था।

* यह पाठ टीका में नहीं है।

उन के शरीर की छवि निराली थी और त्वचा अति कोमल थी।—
उन का मांस नीरोग उत्तम सफेद और निरुपम था। उनका शरीर मैल, अशुभ तिलकादि, पसीना और धूल आदि की मलिनता से रहित अतएव निर्मल था। उनके अंगोपांग कान्ति से चमकते थे। उनके स्नायुबन्धन शुभ लक्षण वाले और इतने मजबूत थे जैसे लोहे का घन। उनका शिर ऐसा मालूम होता था, जैसे पर्वत के शिखर का पाषाणपिण्ड। उन के सिर के बाल सेमल की रूई की तरह नरम, स्वच्छ शुभ, चिकने और शुभ-लक्षणों से युक्त थे। सुगन्धवाले सुन्दर भुजमोचक रत्न और भृंग (एक तरह का कीड़ा) की तरह, नील की तरह, काजल की तरह और मदोन्मत्त भौंरे की तरह काले काले दक्षिण की ओर घूमे हुए घने और घुँघराले थे। उनके मस्तक की त्वचा (बालों के पैदा होने की जगह) अनार के फूल या तपे हुए सोने का नाई (लाल) निर्मल (स्वच्छ) और चिकनी थी। उनका मस्तक भरा हुआ छत्र के समान उन्नत था। ललाट घाव आदि से रहित, समान मनोज्ञ और दास था, अतः ऐसा मालूम होता था, मानो अर्द्धचन्द्र हो। मुख पूर्ण चन्द्रमा की तरह सौम्य था। कान सटे हुए थे— न छोटे न बड़े—प्रमाणयुक्त थे। वे बड़े भले मालूम होते थे और उनका विषय तेज था। उनके गाल स्थूल और मांसल (पुष्ट) थे। भौंहें थोड़े नमे हुए धनुष की नाई मनोज्ञ या काले बादल की रेखा की तरह काले और स्निग्ध थे। नेत्र खिले हुए सफेद कमल जैसे थे, अतः उनके नेत्र विकसित कमल सरीखे उज्वल और पक्ष्म (पलक) वाले थे। नाक गरुड़ की तरह लम्बी सीधी और ऊंची थी। नीचेका ओठ कामदार सिलारूप प्रवाल (मूंगा) और बिम्बफल सरीखा लाल था। दांतों की पंक्ति स्वच्छ चन्द्र का टुकड़ा, अत्यन्त निर्मल शंख, गाय के दूध के फेन कुन्द पुष्प जल की बूँद और

* आणामियचावरुइलकिण्हाब्भराइसंठियसंगयआययसुजायभमुए। उन के भौंह थोड़े नमे हुए धनुष की तरह सुन्दर और काले मेघ की रेखा के समान काले, सुन्दर आकार के, उचित लम्बे और अच्छे बने हुए थे।

शोभित था। उन का देह मांसल (भरा हुआ) था, अतः पीठ की हड्डी दिखाई न देती थी। सोने की सी कान्ति वाला था। सुन्दर और रोगादि से रहित थे। पुरुष के सम्पूर्ण १००८ लक्षणों से युक्त था। पसवाड़े क्रमशः पतले होते गये थे। शरीर के प्रमाण के अनुसार ही पसवाड़े थे। इसलिए वे सुन्दर और मनोहर थे तथा अच्छे परिमाण वाले मांस और और सुन्दर थे। रोमराजि, सीधी विषमता रहित घनी पतली काली स्निग्ध दर्शनीय लावण्य वाली और रमणीय थी, कुक्षि, मत्स्य (मछली) और पक्षी की तरह सुन्दर भरी पूरी थी। उदर (पेट) मच्छ की तरह था। पांचों इन्द्रियां पवित्र थीं। नाभि, कमल की तरह विकसित थी। तथा गंगा के भँवर की तरह मधुर तथा तरुण (तापहर के) सूर्य से विकसित होनेवाले कमल की नाई गम्भीर और विशाल थी। मध्यभाग, त्रिकाष्ठिका (तिपाई) मुसल, दर्पण पकड़ने के काष्ठ तथा शुद्ध किए हुए सोने की तलवार की मूठ की तरह पतला था और उत्तम वज्र के मध्यभाग की तरह बना हुआ था। अर्थात् जिस तरह तिकठा (तिपाई) के ऊपर का भाग मूसल के बीच का भाग, दर्पण पकड़ने का काठ तलवार की मूठ का मध्यभाग पतला होता है, उसी तरह भगवान का मध्यभाग (कमर) पतला था और वज्र की तरह बना हुआ था। रोम, नीरोग वाले और पतले शरीर की कमर तक था माल था। गुप्त देश घोड़े के गुप्त देश की तरह सुजात (सुन्दर) था। जात्यश्व (उत्तम अश्व) की तरह उनका शरीर मल मूत्र आदि से रहित था। गजराज की तरह पराक्रम और विलास पूर्ण गमन था। जांघ, हाथी की सूंड की तरह पुष्ट थी। घुटने, मांस से भरे हुए होने के कारण पास मिले हुए थे, इस चलाते वक्त ढका और उसका ढक्कन आपसमें मिला रहता है। पिंडली हरिणी की पिंडली और कुरुविन्द (तृण विशेष) की तरह क्रमसे पतली होती गई थीं। घुटिकाएँ सुन्दर आकार वाली, ढकी और मांसल होने से गूढ़ थीं। चरण, सुन्दर और कछुए के समान–

उन्नत थे। अंगुलियां यथायोग्य छोटी बड़ी और एक दूसरी से मिली हुई थीं। पैर के नख, उन्नत पतले तांबे के समान कुछ २ लाल और चिकने थे। नवीन लालकमल के पत्ते सरीखे कोमल और सुन्दर थे। शरीर १००८ पुरुषों के शुभ लक्षणों से युक्त था। चारों नग (पर्वत) नगर, मगर सागर व का पहिया और इन के अतिरिक्त श्रेष्ठ तथा मांगलिक चिन्हों से अंकित थे। विशिष्ट रूपवाले थे। उनका तेज, धुआं रहित अग्नि, बिजली और दो पहर के सूर्य का सा दीप्त था। उनके कर्मों का आश्रव नहीं होता था। ममता रहित थे। अकिंचन ( परिग्रह रहित ) थे। शोक शून्य थे। द्रव्य और भाव परिग्रह से रहित थे। प्रेम (आसक्तिरूप) राग (विषयानुराग) द्वेष और मोह से रहित थे। निर्ग्रन्थ प्रवचन (आगम) के उपदेशक थे। उपदेशकों के नायक और उनकी स्थापना करने वाले थे। साधु सबके अधिपति और साधुओं के समूह की बढ़ाने वाले थे। तीर्थंकर के वचनादि चौंतीस अतिशयों से और पैंतीस सत्य वचन के अतिशयों से युक्त थे। भगवान् के आगे आगे धर्मचक्र आकाश में चलता था। तीन छत्र आकाश में भगवान के ऊपर रहते थे। आकाश में दो चंवर सफेद चंवर ढुलते थे। आकाश की तरह स्वच्छ स्फटिक के सिंहासन पर बैठे हुए थे। धर्मध्वजा (इन्द्रध्वजा) सामने आगे आगे जा रहे थे। चौदह हजार साधु और छत्तीस हजार साध्वियों से घिरे हुए क्रमसे (आगे पीछे) चलते हुए ग्रामानुग्राम (एक ग्राम से दूसरे ग्राम) जाते हुए आनन्द से विहार करते हुए हस्तिनापुर नगर में सहस्राम्र पुष्पकरण्डक उद्यान में पूर्व वर्णित प्रतिरूप [illegible] ॥१४॥

**मूलम्— परिसा निग्गया अदीणसत्तू जहा कोणिए तहा निग्गते। जहा उववाइए जाव तिविहाए पज्जुवास**

णाए पज्जुवासति। तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स त महया जणसद्दं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था। किण्णं अज्ज हत्थिसीसे नगरे इन्दमहेइ वा खंदमहेइ वा मुगुंदमहेइ वा णागमहेइ वा जक्खमहेइ वा भूयमहेइ वा कूवमहेइ वा तडागमहेइ वा नईमहेइ वा दहमहेइ वा पव्व यमहेइ वा रुक्खमहेइ वा चेइयमहेइ वा थूभमहेइ वा ज णं एए बहवे उग्गा भोगा राइन्ना इक्खागा णाया कोरव्वा खत्तिया खत्तियपुत्ता भडा भडपुत्ता सेणावई पसत्थारो ले च्छइ माहणा इब्भा, जहा उववाइए जाव सत्थवाहप्पभिति ए ण्हाया कयवलिकम्मा जाव निग्गच्छति, एव संपेहेति एव संपेहेत्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी, किं णं देवाणुप्पिया! अज्ज हत्थिसीसे नगरे इदमहेइ वा जाव निग्गच्छति? तए णं से कंचुइज्जपुरिसे सुबाहुणा कुमारेण एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स आ गमणगहियविणिच्छिए करयल० सुबाहुकुमार जएणं विज एणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी, णो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज हत्थिसीसे नगरे इदमहेइ वा जाव निग्गच्छति। एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्ज समणे भगवं महावीरे जाव सव्वन्नू सव्वदरिसी हत्थिसीसस्स नगरस्स वहिया पुप्फकरंडे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता णं जाव विहरति ॥४५॥

**भावार्थ**— जनसमूह भगवानको वन्दना करनेके लिये निकला। अदीनशत्रु राजा भी महाराज कोणिक की तरह निकला। औपपातिक (उववाइ) सूत्र के अनुसार (यावत्) मन वचन और काय इन तीन प्रकारों

१भग० श० ९ उ० ३३ श्रा० स० पत्र ४६१-९९ प से।

**भावार्थ—** इसीलिए ये काइ २ उग्रवश के भोगवशक (यावत्) लोग वन्दना क लिए, कइ एक पूजा करने के लिए एव सत्कार करने के लिए, सन्मान करने के लिए दर्शन के लिए, कौतूहल के लिए, सूत्रों के अथ का निश्चय करने के लिए, नहीं सुने को सुनने और सुने हुए का सन्देह दूर करने के लिए,कोइ अर्थ (जातादिद्रव्य) हेतु, कारण और शका समाधान सम्बन्धी प्रश्न पूछने के लिए, कोई सब प्रकार मुडित(द्रव्य की अपेक्षा केशों को अलग करना भाव की अपेक्षा कपायादि स अलग)होकर गृहस्थ से साधु होने के लिए, काइ पचाणुव्रत और सात शिक्षाव्रत(३ गुण व्रत और ४ शिक्षाव्रत) इस प्रकार बारह तरह के गृहस्थधर्मको अगीकार करने के लिए, कोई जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति मे प्रेम होने से, कोई जीत (परम्परागत हमारा आचार) है, इस प्रकार सोच करके स्नान कर, गृहदेवता की पूजा कर, तिलक आदि कौतुक और मागलिक दही अक्षत आदि प्रायश्चित्त स पवित्र होकर, मस्तक और कठमें मालाए धारण करके, मणि और सोने के गहने पहिन कर तथा लटकते हुए लम्बे हार, अर्द्ध हार,तिलड़ा हार सुन्दर२लब लटकते हुए गुच्छोंवाला करधना आदि सुन्द र २ आभूषण पहनकर,बढिया बढिया वस्त्र पहिन कर, चन्दन का शरीर पर लेप कर, कोई घोड़ पर सवार होकर, कोइ हाथी पर सवार होकर, कोई रथ पर सवार होकर, काइ पालखी पर सवार होकर, कोई स्यन्मान (पुरुषाकार सवारी विशेष)पर सवार होकर,कोइ पैदल चलते हुए पुरुषों के समूह के समूह तुमुल हर्ष ध्वनि सिंहनाद बाल (अव्यक्तशब्द) या कलकल (व्यक्त) शब्द से क्षाभित समुद्र के तीव्र शब्द की नाई नगर का क्षाभित करते हुए, हस्तिशीर्ष नगर क बीचोंबीच होकर निकल रहे हैं। सुबाहु कुमार कचुकी स यह बात सुनकर हर्ष ससन्तुष्ट हुआ। फिर अपन सेवकों को बुलाया। बुलाकर बाला-भो देवानुप्रिय! चारघण्टों वाले घोड़ों के रथ का शीघ्र ही लाओ। लाकर मुझ सूचित करो। सुबाहुकुमार के यह कहने

पर मेघकों ने रथ लाकर उन्हें सूचित किया ॥४६॥

**मूलम्—** तए णं से सुबाहुकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति। उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जहा उववाइए परिसावन्नओ तहा भाणियव्व जाव चंदणोव लित्तगायसरीरे सव्वालंकारविभूसिए मज्जणघराओ पडि निक्खमइ, मज्जणघराओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंट आसरहं दुरूहइ। चाउग्घंट आसरहं दुरूहित्ता सकोरंटमल्लदामेण छत्तेणं धारिज्जमाणेणं महया भडचडकरपहकरवंदपरिक्खित्ते हत्थिसीसं नगरं मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छइ। निग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फकरंडे चेइए, तेणेव उवागच्छइ। तेणेव उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ। तुरए निगिण्हित्ता रहं ठवेति। रहं ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहंति। रहाओ पच्चोरुहित्ता पुप्फतंबोलाउहमादिय वाणहाओ य विसज्जेति। विसज्जित्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ। उत्तरासंगं करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए अंजलि-मउलियहत्थे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ। आयाहिणपयाहिणं करेत्ता तिक्खुत्तो २ जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥४७॥

**भावार्थ—** तब वह सुबाहुकुमार स्नान घर की तरफ चला आया। वहां आकर स्नान किया। गृहदेवता की पूजा की (परिषद् सभा का वर्णन उववाई सूत्र के अनुसार जान लेना चाहिए) यावत् चन्दन का शरीर पर लेप किया। समस्त अलंकारों से भूषित हुआ, और स्नानागार से निकला। निकल कर जहाँ बाहर सभाभवन और चार घंटे वाला घोड़ों का रथ था, वहाँ

**पभितिओ मुड भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया अह अण्णणे नो संचाएमि जाव पव्वइयए। अह देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वय सत्तसिक्खावय दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जिस्सामि। अहासुह मा पडिबंध करेह। तए ण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वय सत्तसिक्खावय दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जइ। पडिवज्जित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरूहति। दुरूहित्ता जामेव दिस पाउब्भूते तामेव दिस पडिगते ॥ ४८ ॥**

**भावार्थ—** तदनन्तर श्रमण भगवान् महावीर ने सुबाहुकुमार तथा बहुत विस्तारवाली ऋषियों की यावत् परिषद् (सभा)को धर्मोपदेश दिया। यावत् जब परिषद् लौट गई, तब सुबाहुकुमार श्रमण भगवान् महावीर के पास धर्मोपदेश सुनकर, उस हृदय में धारण कर यावत् हृदयसे सन्तुष्ट होकर उठे। उठकर श्रमण भगवान महावीर को तीन बार प्रणाम (नमस्कार) करके इस प्रकार बोले, हे भगवन्! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचन (जैन मार्ग) पर श्रद्धान करता हूं और बड़े प्रेम से इस पर प्रतीति करता हूं। भगवन्! यह निर्ग्रन्थ मार्ग मुझे बड़ा भला मालूम होता है। हे भगवन्! निर्ग्रन्थ-मार्ग में मैं उद्योग करता हूं। हे भगवन्! निर्ग्रन्थ प्रवचन यही है, जैसाकि आपने उपदेश किया है और यह ऐसा ही है। अन्यथा नहीं है। हे भगवन्! यह सन्देह रहित है। यावत जो आपने कहा है। इतना कहकर फिर इस प्रकार बोले जिस प्रकार देवानुप्रिय (भगवान महावीर) के समीप बहुत से उग्रवंशज, उग्रवंश के कुमार, भोगवंशज, भोगवंश के कुमार, भगवान् के वंशज और भगवान् के वंश के कुमार, इक्ष्वाकु वंशज, इक्ष्वाकु वंशके कुमार, ज्ञातवंशज, ज्ञातवंश के कुमार, कौरव वंशज, कौरव वंश के कुमार, क्षत्रिय वंशज, क्षत्रिय वंश के कुमार, शूरवीर, योद्धा, प्रशास्तार (धर्मशास्त्र के पाठक) मल्लकी (राजविशेष) लेच्छकी (राजविशेष,) तथा अन्य बहुत से राजा, युवराज-

तलवर मडम्बाधिपति, कुटुम्बनायक, इभ्य (जिस के पास इतना सोना हो कि जिस सोने से हाथी ढक सके वह) श्रेष्ठि, सेनापति, और सार्थवाह वगैरह ने मुण्डित होकर गृहत्याग करके मुनि दिक्षा स्वीकार की है। किन्तु मेरा दुर्भाग्य है, कि मैं यावत् दीक्षा लेने के लिए समर्थ नहीं हूं। हे देवानुप्रिय! मैं आप के समीप पांच अणुव्रत (एकदेश अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और परिग्रह परिमाण) और सात शिक्षाव्रत (दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्डव्रत, सामायिक प्रोषधोपवास, भोगोपभोग-परिमाण और अतिथिसंविभाग) इस तरह बारह प्रकार के गृहस्थधर्म को धारण करूंगा। (भगवान ने कहा) जिस प्रकार सुख हो उसमें ढील न करो। तदनन्तर उस सुबाहुकुमार ने, श्रमण भगवान् महावीर के समीप बारह प्रकार के गृहस्थधर्म को— पांच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रतों को— स्वीकार किया। स्वीकार करके उसी चार घण्टों वाले घोड़ों के रथ पर सवार हुआ। सवार होकर जिस दिशा जिस तरफ से— आया था, उसी दिशा— उसी ओर- - वापस चला गया ॥४८॥

**मूलम्— तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नाम अणगारे गोयमगोत्ते णं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसभनारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे, उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे उराले घोरे घोरगुणे, घोरतवस्सी, घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से चोद्दसपुव्वी चउणाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाती समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे, जायसंसए जायकोउहल्ले, उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले**

भग० श० १ उ० १ पत्र ११ पृ० १ प० १ से प्रारम्भ

**समुप्पन्नसड्ढे समुप्पन्नससए समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करेत्ता वदति, णमसति । वदित्ता णमसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे पज्जुवासमाणे एव *वयासी ॥ ८९ ॥**

**भावार्थ—** उसी काल के उसी समय में श्रमण भगवान् महावीर के पट्टशिष्य इन्द्रभूति नामक अनगार– जिनका गोत्र गौतम था । सात हाथ का शरीर था । जो समचतुरस्र सस्थान और वज्रऋषभनाराच सहनन से युक्त थे । शरीर कसौटी पर घिसे हुए सोने या पद्म (कमल) सरीखा गोरा था । उग्र तपस्वी (अचिन्तनीय तप करने वाले) दीप्त तपस्वी (अग्नि के समान कर्मरूपी वन को जलाने वला तप करने वाले) तप्ततपस्वी (कर्म को तपाने वाली तपस्या करने वाले) महातपस्वी (निष्काम तपस्या करने वाले) उदार और घोर (परिषह जातने में निर्दयी) थे । घोर–गुण शाली थे । घोर तप करने वाले थे । घोर ब्रह्मचारी थे । शरीर की सेवा शुश्रूषा से रहित थे । अपनी विपुल तेजोलेश्या को सक्षिप्त करने–काम में न लाने वाले थे । चतुर्दश पूर्व के ज्ञाता थे । चार–मति श्रुत अवधि और मन पर्यय ज्ञानों को धारण करने वाले थे । सर्व अक्षरों के उदात्तादि विकल्पों को जानने वाले थे । व इन्द्र भूति गौतम, श्रमण भगवान् महावीर के पास–न बहुत दूर न बहुत पास– बैठे हुए थे । घुटन ऊपर की ओर तथा शिर नीचे किए हुए ध्यान रूपी कोठे में प्राप्त थे, सयम और तप के द्वारा आत्मा की भावना करते हुए विहार कर रहे थे । उसी समय इन भगवान् गौतम को तत्वों की श्रद्धा होने से, सशय (जिज्ञासा रूप) हुआ, इसी कारण उन्हें कौतूहल पैदा हुआ । इस लिए वहा से उठ कर जहा श्रमण भगवान् महावीर

* भगवती पाठ समाप्त

थ वहां आये । आकर श्रमण भगवान महावीर को दक्षिण दिशा से आ रम्भ कर के तीन प्रदक्षिणा दी । प्रदक्षिणा देकर स्तुति और नमस्कार किया । स्तुति और नमस्कार कर के न बहुत पास और न बहुत दूर से अर्थात् थोड़ी दूर से सामने शुश्रूषा और नमस्कार करते हुए विनय पूर्वक हाथ जोड़ कर सेवा करते हुए, इस प्रकार बोले ॥४६॥

**मूलम्— अहो ण भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणाम रूवे सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे बहुजणस्स वि य णं भंते, सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे जाव सुरूवे, साहुजणस्स वि य णं भंते सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे जाव सुरूवे सुबाहुणा भंते कुमारेणं इमेयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमण्णागया, के वा एस आसी पुव्वभवे किं नामए वा किंवा गोएण कयरंसि वा गामंसि वा सन्निवेसंसि वा किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं सुवयणं सोच्चा निसम्म सुबाहुणा कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुसिड्ढी लद्धा पत्ता अभिस मण्णागया ॥ ५० ॥**

**भावार्थ—** हे भगवन्! यह सुबाहुकुमार बहुत से आत्मियों का इष्ट इष्टरूप वाला, कान्त (सुन्दर), कान्तरूप वाला, प्रिय, प्रियरूप वाला, मनोज्ञ मनोज्ञरूप वाला, मनोहर, मनोहररूप वाला, सौम्य, सुभग (सौभाग्यवान्) प्रियदर्शन (देखने में प्यारा) सुरूप लगता है, और हे भगवन्! यह सुबाहुकुमार साधुजनों का भी इष्ट, इष्टरूपवाला यावत् सुरूप लगता है। हे भगवन्! सुबाहुकुमार को इष्टता, इष्टरूपता यावत् सुरूपता, और हे भगवन् इस तरह की उदार मनुष्य ऋद्धि का लाभ कैसे हुआ है? वह कैसे पाई है?

इसके सामने यह स्वयं हो आई है? पूर्वभव में यह कौन था? इसका नाम क्या था? गोत्र क्या था? किस गांव और किस नगर रहने वाला था? कौनसा दान देकर कौन से भोग भोगकर, कौनसा आचरण करके, किस श्रमण (साधु) या ब्राह्मण के पास, किस आचार सम्बन्धी एक भी वचन को सुनकर और हृदय में रखकर इस सुबाहुकुमार ने इस प्रकार की यह उदार मनुष्य ऋद्धि पाई है? या स्वयं यह सामने आई है? ॥ ५० ॥

मूलम्— एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं, इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नगरे होत्था। रिद्धित्थिमियसमिद्धे वण्णओ। तत्थ णं हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसति। अड्ढे दित्ते वित्थिण्ण विपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णे बहुधणबहुजायरूवरयए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डियपउरभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूए बहुजणस्स अपरिभूए। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा णामं थेरा जातिसंपण्णा जहेव सुहम्मसामी तहेव पंचहिं समणसतेहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणापुरे, जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव संखित्ततेउलेस्से मासंमासेणं खममाणे विहरइ। तए णं से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति। बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ

१ भ श २ उ ५ प सू० १०३ ३५-२ प ४ से प्रारम्भ
२ भग समान

णति । तइयाए पारिसीए धम्मघोसे थेरे आपुच्छति, आपुच्छित्ता हत्थिणाउरे नगरे अणुप्पविट्ठे, उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स अडमाणे सुमुहस्स गाहावतिस्स गिहं अणुप्पविट्ठे । तए णं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जाव आसणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ मुयति, मुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं हत्थेणं विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभिस्सामि त्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे पडिलाभिए त्ति तुट्ठे । तए णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पत्तसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकते मणुस्साउए निबद्धे गिहंसि य से इमाइं पञ्चदिव्वाइं पाउब्भूयाइं । तंजहा—१ वसुहारा वुट्ठा २ दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिते ३ चेलुक्खेवे कते ४ आहयाओ देवदुंदुहीओ ५ अंतरा वि य णं आगासंसि अहोदाणमहोदाणं घुट्ठे य । हत्थिणाउरे सिंघाडगजावपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पन्नवइ, एवं परूवइ, धन्ने णं देवाणुप्पिए सुमुहे गाहावइ सुकयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धे णं मणुस्सजम्मे सुकयत्थरिद्धी य जाव तं धण्णे ॥ ५१ ॥

**भावार्थ**— श्रमण भगवान महावीर बोले — गौतम ! उस काल के उस समय में इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप में भरतक्षेत्र था । उस भ

हुआ और देकर भी सन्तुष्ट हुआ। उस सुमुख गाथापति ने शुद्ध द्रव्य (देय) शुद्ध दाता शुद्ध पात्र होने तथा तीन करण और तीन योगों की शुद्धि पूर्वक सुदत्त अनगार को आहार-दान देकर संसार हलका किया— कर्मकिया— और मनुष्य आयु का बन्ध किया, तथा उस के घर पांच दिव्य प्रगट हुए। वे इस प्रकार हैं १ साढे बारह करोड सुवर्ण दीनारों की वर्षा हुई, २ पांच वर्ण के फूलों की वृष्टि हुई ३ सुगन्धित वस्त्रों की वृष्टि हुई ४ आकाशमें देव दुन्दुभिका शब्द हुआ ५ आकाशमें "अहादान' अहादान" शब्द हुआ। हस्तिनापुर में तिराहों चौरस्तों यावत् सड़कों पर अनेक जगह २ अनेक मनुष्य आपस में इस प्रकार बातचीत करने लगे इस प्रकार भाषण करने लगे इस प्रकार प्रतिपादन करने लगे, इस प्रकार प्ररूपणा करने लगे-- यह देवानुप्रिय सुमुख गाथापति धन्य है! पुण्यवान है। सुलक्षण है। शुभकर्म का लाभ इसे हुआ है। मनुष्यजन्म और उत्तम ऋद्धिवाला यावत् यह धन्य है॥ ५१॥

मूलम्— से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं पालेति। पालित्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे णगरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णो। तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ तहेव सीहं पासइ। सेसं तं चेव जाव उप्पिंपासायवरगते विहरइ। तं एवं खलु गोयमा! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता, अभिसमन्नागया। पहू णं भंते! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए? हंता पभू। तते णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ। वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तए णं से समणे भगवं महावीरे अण्णया

किसी का अविश्वास नहीं था। अथवा उसने दूसरों के भीतर पुर और घर में जाना आना छोड़ दिया था। वह शीलव्रत, गुणव्रत, वेरमण (रागद्वेष आदि की निवृत्ति), प्रत्याख्यान (त्याग आदि) और पोषध उपवास करता था। चतुर्दशी अष्टमी अमावस्या और पूर्णिमा के दिन पूर्ण पोषध अच्छी तरह पालन करता था। निर्ग्रन्थ मुनियों को प्रासुक निर्दोष अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य, तथा वस्त्र, पात्र, कम्बल, रजोहरण, बाजोट, पाटिया, शय्या, और संथारा, तथा औषध भेषज आदि दान करता हुआ स्वीकार किए अनुसार तप आदि क्रियाओं से अपनी आत्मा का चिन्तन करता रहता था ॥५२॥

मूलम्—तते णं से सुबाहुकुमारे अण्णया कयाइ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जति। पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ। पडिलेहित्ता दब्भसंथारं संथरइ। संथरित्ता दब्भसंथारं दुरूहइ। दुरूहित्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हति। पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरति। तते णं तस्स सुबाहुकुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए मणोगते संकप्पे, धण्णा णं ते गामागरनगरखेडकब्बडदोणमुहपट्टणआसमणिगमसंवाहसंणिवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरति। धण्णा णं ते राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभिइओ, जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति। धण्णा णं ते राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभिइओ, जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वयाइं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जंति।

करते है। तथा व राजा राजकुमार तलवर मडबराज कौटम्बिक इभ्य श्रेष्ठी, सेनापति और सार्थवाह वगैरह भी धन्य है जो श्रमण भगवान् महावीर के समीप गृहस्थ धर्म स्वीकार करते हैं। तथा व राजा राजकुमार तलवर मडबराज कौटुम्बिक इभ्य श्रेष्ठी सेनापति सार्थवाह वगैरह भी धन्य हैं,जो श्रमण भगवान महावीर स्वामी के समीप धर्मोपदेश सुनते है। इसलिए यदि श्रमण भगवान महावीर पूर्वानुपूर्वी से चलते हुए ग्रामानुग्राम विहार करते हुए, यहाँ आवेंगे, यावत् विहार करेंगे, तब ही मैं श्रमण भगवान महावीर के समीप, मुण्डित होकर, गृहस्थी त्यागकर मुनि दीक्षा धारण करूँगा ॥५३॥

मूलम्— तते णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णगरे जेणेव पुप्फकरंडगउज्जाणे वण्णओ, कयवणमालप्पियस्स जक्खस्स जक्खायतणे वण्णओ, तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तहेव परिसा राया निग्गता। तते णं से सुबाहुकुमारे त महया जहा पढमं तहा निग्गओ। धम्ममाइक्खइ, तंजहा— सव्वओ पाणातिवायाओ वेरमणं, सव्वओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वओ मेहुणाओ वेरमणं,सव्वओ परिग्गहाओ वेरमणं। तेण सा सा महतिमहालिया मणूसपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोचा तहेव परिसा राया पडिगया ॥ ५४॥

१ उववाइ प ८२–२ प १ से
२ उववाइ समान

**भावार्थ—** तत्पश्चात् श्रमण भगवान् महावीर ने सुबाहुकुमार के इस प्रकार के आध्यात्मिक विचारको यावत् जानकर, अनुक्रम से चलते हुए ग्रामानुग्राम विहार करते हुए हस्तिशीर्ष नगर के, पहले वर्णन किये हुए पुष्पकरण्डक उद्यान में जो कृतवनमालप्रिय यक्ष का यक्षायतन था, उस में -जिसका कि वर्णन पहिले किया जा चुका है- आये। आकर यथोचित आज्ञापूर्वक स्थान लेकर, संयम और तप पूर्वक आत्म चिन्तन करते हुए विहार करने लगे। पहले की तरह परिषद् (जन समूह) और राजा वन्दना करने के लिए निकला। बाद में सुबाहुकुमार बड़े ठाटबाट से पहले की तरह वन्दना करने निकला। भगवान् महावीर ने इस प्रकार धर्मोपदेश दिया—सब प्रकार के प्राणातिपात (हिंसा) से रहित होना, सब तरह के असत्य वचनों का त्याग करना, सब तरह के अदत्तादान से रहित होना, सब प्रकार के मैथुन से विरत होना और सब तरह के परिग्रह से रहित होना ये पांच महाव्रत हैं। अनन्तर वह बहुत बड़ा जन समुदाय और राजा श्रमण भगवान् महावीर से धर्मोपदेश सुनकर पहले की तरह वापस चला गया ॥५४॥

मूलम् — तते णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोचा निसम्म हट्ठ तुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदेइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, एवं पत्तियामि णं, रोएमि णं, अब्भुट्ठेमि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छियपडिच्छियमेयं भंते! से जहेयं तं तुब्भे वदह। जं नवरं- देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि।

१ ज्ञाता अ १ पृ ७६ - २ पृ—१ वाचेस

तत्तो पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामि । अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह ॥ ५५ ॥

**भावार्थ—** तदनन्तर सुबाहुकुमार ने श्रमण भगवान महावीर के समीप धर्मोपदेश सुनकर, उसे हृदय में धारण करके प्रसन्न और सन्तुष्ट होकर, श्रमण भगवान् महावीर को, तीन बार दक्षिण दिशा से शुरू करके प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वन्दना और नमस्कार किया। वन्दना और नमस्कार करके इस प्रकार बोला हे भगवन्! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचन में श्रद्धा रखता हूँ, प्रतीति करता हूँ यह मुझे रुचता भला लगता है। हे भगवन्! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचन को स्वीकार करता हूँ। हे भगवन्! निर्ग्रन्थ प्रवचन यही है, यह इसी प्रकार है जैसा आपने कहा है। यही तथ्य —सत्य— है। हे भगवन्! यह अन्यथा नहीं है। हे भगवन्! यह इष्ट है। हे भगवन्! यह अभीष्ट है। हे भगवन्! यही इष्ट-अभीष्ट है। यह सब ठीक है, जो कि आपने कहा है, किन्तु हे देवानुप्रिय! इतना विशेष है कि मैं अपने माता पिता से पूछता हूँ, और उनसे आज्ञा लेने के अनन्तर आपके पास मुण्डित होकर, गृहस्थी का त्याग कर मुनि दीक्षा स्वीकार करूंगा। भगवान् महावीर बोले— हे देवानुप्रिय! जिस प्रकार सुख की प्राप्ति हो, उस में ढील न करो ॥ ५५ ॥

**मूलम्—** तते णं से सुबाहुकुमारे समणं भगवं महावीरं वदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे, तेणेव उवागच्छइ । उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहति, दुरूहित्ता महया भडचडगरपहकरेणं हत्थिसीसस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे

१ बार बार हर्ष या भाव पूर्वक स्वीकार किया।

तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटाओ आसर हाओ पच्चोरुहइ । पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणा मेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता अम्मापिऊण पायवंदण करेइ, करेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे णिसंते से वि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स अम्मापियरो सुबाहुकुमारं एवं वयासी—धन्नोसि णं तुमं जाया सपुण्णो० कयत्थो० कयलक्खणोसि तुमं जाया,जं णं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे णिसंते से वि य ते धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तते णं से सुबाहुकुमारे अम्मापियरो दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी एवं खलु अम्मयाओ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे णिसंते, सेवि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए त इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अण गारियं पव्वइत्तए । तते णं धारिणी देवी तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुन्नं अमणामं असुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा णिसम्म इमेणं एयारूवेणं मणोमाणसिएणं महया पुत्तदु क्खेणं अभिभूता समाणी सेयागयरोमकूवपगलंतविलीण गाया सोयभरपवेवियंगी णित्तेया,दीणविमणवयणा करयल मलियव्व कमलमाला तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरा लाव न्नसुन्ननिच्छायगयसिरीया पसिढिलभूसणपडंतखुम्मियसंचु न्नियधवलवलयपब्भट्ठउत्तरिज्जा सूमालविकिन्नकेसहत्था मु च्छावसणट्ठचेयगरुई परसुनियत्तव्व चंपगलया, णिव्वत्तमह व्व इंदलट्ठी, विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि सव्वंगेहिं

रसंत्ति पडिया । ततेणं सा धारिणी देवी ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गयसीयलजलविमलधाराए परिसिंचमाणा निव्वावियगायलट्ठी उक्खेवगतालविंटवीयणगजणियवाएणं सफुसिएणं अंतोउरपरियणेणं आसासिया समाणी मुत्तावलिसन्निगासपवडंतअंसुधाराहिं सिंचमाणी पओहरे, कलुणविमणदीणा रोयमाणी, कंदमाणी, तिप्पमाणी, सोयमाणी विलवमाणी सुबाहुकुमारं एवं वयासी ॥५६॥

**भावार्थ—** इसके अनन्तर सुबाहुकुमार ने श्रमण भगवान् महावीर को वन्दना की और नमस्कार किया । वन्दना और नमस्कार करके, जिधर चार घंटोंवाला रथ था, उधर आया । आकरके, चार घंटों वाले रथ पर सवार होकर, बहुत से सुभट और चाकरों सहित, हस्तिशीर्ष नगर के बीचों बीच होकर अपने भवन की तरफ आया । आकर चार घंटेवाले रथ से उतर कर, जिस ओर माता पिता थे, उस ओर आया । आकर माता पिता को प्रणाम करके इस प्रकार कहने लगा — हे माता पिता! मैंने श्रमण भगवान् महावीर के समीप धर्मोपदेश सुना है, उस धर्म की मैं इच्छा करता हूँ, और वार वार इच्छा करता हूँ । मुझे वह रुचता है । यह सुनकर सुबाहुकुमार के माता पिता सुबाहुकुमार से इस प्रकार बोले— हे पुत्र! तुम धन्य हो, पुण्यवान् हो, कृतार्थ हो, और हे पुत्र! तुम शुभलक्षण हो, क्योंकि तुमने श्रमण भगवान् महावीर के समीप धर्म श्रवण किया है, और वह धर्म तुम्हें इष्ट और अभीष्ट तथा रुचिकर हुआ है । अनन्तर सुबाहुकुमार ने माता पिता से दो तीन बार कहा, कि हे माता पिता! मैंने श्रमण भगवान् महावीर के समीप धर्म श्रवण किया है, और वह धर्म मुझे इष्ट, अत्यन्त इष्ट तथा रुचिकर हुआ है। इस कारण हे माता पिता! मैं आपकी आज्ञा लेकर, श्रमण भगवान् महावीर के समीप, मुण्डित हो कर, घर से निकल कर मुनि-दीक्षा लेना चाहता हूँ। धारिणी

देवी इन अनिष्ट, असुन्दर, अप्रिय अमनोज्ञ, अश्रुतपूर्व (जिसे पहले कभी सुना नहीं )और कठोर वचनों को सुनकर और हृदय में धारण कर के, इस प्रकार पुत्र के मानसिक शोक से महादुःखी हुई । रोम रोम से निकलते हुए पसीने से शरीर भीग गया । शोक से शरीर थर थर कांपने लगा, चेहरा फीका पड़ गया, दीन और बेसुध के समान वचन बोलने लगी। वह ऐसे मुरझा गई, जैसे हाथ में मसलने से कमल की माला मुरझा जाती है । "दीक्षा लेना चाहता हूँ" यह सुनते समय ही उसका शरीर निश्चल सा हो गया। उसका शरीर लावण्य शून्य हो गया और उसकी शोभा नष्ट हो गई । दुर्बल होने से भूषण ढीले हो गए । सफेद चूड़ियां धरती पर जा गिरी और टूटकर चूर चूर हो गई । ओढ़ना शरीर से दूर हो गई, कोमल सिर के बाल इधर उधर बिखर गए । मूर्च्छा आने से चेतना नष्ट होगई । शरीर भारी हो गया । फरसे से काटीगई चम्पक लता की नाई और उत्सव समाप्त होने पर इन्द्र स्तम्भ की तरह शोभा रहित हो गई । रानी के शरीर की सन्धियां (जोड़) ढीली होने से सारा शरीर धड़ाम से आंगन में गिर पड़ा अर्थात् वह रानी धरती पर गिर पड़ी । रानी जब व्याकुल चित्त होकर धरती पर गिर गई, तब दासियों ने जल्दी ही सोने की झारी के मुख से निकलती हुई निर्मल शीतल जल की धारा से उसके शरीर को सींचकर ठंडा किया । फिर बांस आदि के पत्ते की डंडी वाले तालवृक्ष के पत्ते के बीजन (पंखी) से पानी की बूंदों सहित हवा करके शान्त किया । शान्त होनेपर मोतियों की पंक्ति जैसी निकलकर गिरते हुए आंसुओं की धाराओं से कुचों का सिंचन करने लगी । लाचार उदास और दीन होती हुई, रोती हुई, चिल्लाती हुई, छाती पीटती हुई, शोक करती हुई, और विलाप करती हुई,सुबाहुकुमारसे इस प्रकार कहने लगी॥५६॥

मूलम्— तुम्हंसि णं जाया अम्हं एगे पुत्ते, इट्ठे, कंते, पिए, मणुन्ने, मणामे, धिज्जे, वेसासिए, सम्मए, बहुमए, अणुमए भंडकरंडगसमाणे, रयणे, रयणभूते, जीवियउस्सासए, हिययाणंदजणणे, उंबरपुप्फं व दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए, णो खलु जाया अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए, तं भुंजाहि ताव जाया! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव, ताव वयं जीवामो। तओ पच्छा अम्हेहिं कालगतेहिं, परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जंमि निरावयक्खे, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि।

तते णं से सुबाहुकुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मताओ जहेव णं तुम्हे ममं एवं वदह "तुममंसि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि" एवं खलु अम्मयाओ माणुस्सए भवे अधुवे अणियए असासए, वसणसउवद्दवाभिभूते, विज्जुलयाचंचले अणिच्चे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे, सज्झब्भरागसरिसे, सुविणदंसणोवमे सडणपडणविद्धंसणधम्मे पच्छापुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे, से के णं जाणति अम्मयाओ! के पुव्विं गमणाए, के पच्छा गमणाए। तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए। तते णं तं सुबाहुकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी॥ ५७॥

भावार्थ— बेटा! हमारे तुम इकलौते लड़के हो और इष्ट कान्त प्रिय मनोज्ञ मनोरम धीरज बंधाने वाले, विश्वास पात्र मानने योग्य बहुत

मानने योग्य सम्मति देनेवाले मनुष्य (कार्य होने के बाद भी मानने योग्य) आभरण के पिटार जैसे, रत्न तथा मनुष्य जाति में रत्न जैसे हो। मर जाने के श्वास हो, हृदय को आनन्द देने वाले हो। ऊमर के फूल की नाई, देखना तो दूर रहा तुम्हारा नाम सुनना भी मुश्किल हो जायगा। अतः हे पुत्र! हम तेरा वियोग, एक क्षण भर भी नहीं सहन करना चाहते। इसलिए बेटा! जब तक हम जीते हैं, तबतक मनुष्यों के अनेक भोगोपभोग भोगो। हमारे मरने के बाद परिपक्व अवस्था पाकर, कुल की वृद्धि करने वाले पुत्र पौत्रों को बढाकर, सब प्रयोजन साधकर श्रमण भगवान महावीर के समीप मुण्डित होकर घर छोड साधुपना लेलेना।

माता पिता के ऐसा कहने पर, सुबाहुकुमार माता पिता से कहने लगा, हे माता पिता! जो आपने कहा है "हमारे तुम इकलौते बेटे हो यावत् हमारे मरने के बाद सब प्रयोजन साधकर श्रमण भगवान् महावीर के समीप यावत् दीक्षा लेना"। सो हे माता पिता! यह मनुष्य भव सदा टिकने वाला नहीं है। नियत नहीं है। एकही क्षण में नष्टहो सकता है। सैकड़ों व्यसनों—जुआ चोरी आदि के उपद्रवों से भरा है। बिजली की नाई चपल है। अनित्य है। पानी के बुलबुले की तरह या दूब के ऊपर ठहरी हुई पानी की बूंद की नाई चचल है। सन्ध्या समय की लालिमा और स्वप्न दशा की तरह क्षणिक है। सड़ना गलना नष्ट होना इस शरीरका स्वभाव है। पहले या पीछे—कभी न कभी इस अवश्य ही छोड़ना होगा। हे माता पिता! यह कौन जानता है कि माता पिता और पुत्र में से कौन पहले या कौन पीछे मरेगा? इसीलिए हे माता पिता! आप की आज्ञा लेकर श्रमण भगवान महावीर के समीप दीक्षा लेना चाहता हूं।

यह सुनकर माता पिता सुबाहुकुमार से कहने लगे ॥ ५७ ॥

**मूलम्— इमाओ ते जाया! सरिसियाओ सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाओ**

सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणिल्लियाओ भारियाओ, तं भुंजाहि णं जाया! एताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि।

तते णं से सुबाहुकुमारे अम्मापियरं एवं वयासी—तहेव णं अम्मयाओ! जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह "सरिसियाओ जाव समणस्स० पव्वइस्ससि" एवं खलु अम्मयाओ! माणुस्सगा कामभोगा असुई, असासया, वंतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा, दुरुस्सासनीसासा, दुरूयमुत्तपुरीसपूयबहुपडिपुन्ना उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणगवंतपित्तसुक्कसोणियसंभवा अधुवा अणितिया असासया, सडणपडणविद्धंसणधम्मा, पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जा, से के णं अम्मयाओ! जाणंति, के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए, तं इच्छामि णं अम्मयाओ! जाव पव्वइत्तए ॥ ५८ ॥

**भावार्थ**— हे पुत्र! यह तेरे सरीखी, तेरी त्वचा के समान त्वचा वाली समान उमर वाली समान लावण्य रूप यौवन और गुणों से युक्त अपने समान राजकुलों से लाई हुई पांच सौ पत्नियों को भोग। हे पुत्र! इन के साथ मनुष्य सम्बन्धी कामभोग भोग करके, भुक्तभोगी होकर, श्रमण भगवान महावीर के समीप यावत् दीक्षा ले लेना।

यह सुनकर सुबाहुकुमार माता पिता से बोला—हे माता पिता! जो आपने मुझे कहा है कि "समान त्वचा वाली इत्यादि विशेषणों सहित स्त्रियों को भोग तथा भुक्त भोगी होकर श्रमण भगवान महावीर के समीप दीक्षा लेना" सो हे माता पिता! मनुष्यों के कामभोग के आधार शरीर आदि अपवित्र हैं। अशाश्वत हैं, इन से वमन उत्पन्न होता है, पित्त

आदि झरते हैं, कफ निकलता है, शुक्र निकलता है, लार निकलता है उच्छ्वास श्वास उच्छ्वास निकलते हैं, घृणित मल मूत्र और पीप निकलता है। इसी शरीरमें मल मूत्र कफ शरीर और नाक का मल वमन पित शुक्र और शोणित पैदा होते हैं। ये शरीर आदि विकारके नहीं हैं। नित्य नहीं हैं। अशाश्वत हैं। सडना पडना और नष्ट होना ही इनका स्वभाव है। इन्हें आगे या पीछे अवश्य ही छोडना पडेगा। सो हे माता पिता! यह कौन जानता है कि कौन पहले मरेगा और कौन पीछे मरेगा? इसलिए हे मातापिता! मैं यावत् दीक्षा लेना चाहता हूँ ॥ ५८ ॥

मूलम्— तते णं तं सुबाहुकुमार अम्मापियरो एवं वयासी—इमे य ते जाया! अज्जयपज्जयपिउपज्जयाऽऽगए सुबहुहिरन्ने य सुवन्ने य कंसे य दूसे य मणिमोत्तियसंख सिलप्पवालरत्तरयणसंतसारसावतिज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं तं अणुहोहि ताव जाव जाया विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं, तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि। तए णं से सुबाहुकुमारे अम्मापियरं एवं वयासी— तहेव णं अम्मयाओ! जन्नं तं वदह—"इमे ते जाया अज्जगपज्जगपि० जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ जाव पव्वइस्ससि"। एवं खलु अम्मयाओ! हिरन्ने य सुवन्ने य जाव सावतिज्जे अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए अग्गिसामन्ने जाव मच्चुसामन्ने सडणपडणविद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे, से केणं जाणइ अम्मयाओ! के जाव गमणाए। तं इच्छामि णं जाव पव्वइत्तए॥ ५९ ॥

**भावार्थ—** इसके अनन्तर सुबाहुकुमार के माता पिता, सुबाहु कुमार से बोले-हे पुत्र! दादा, परदादा और पिता के परदादा से चला आया हुआ बहुत सा हिरण्य, सुवर्ण, कांसा, दूष्यवस्त्र, मणि मोती शंख शिला (राजपट्ट आदि) मूंगा पद्मराग (लाल), रत्न, आदि समस्त विद्यमान द्रव्यों का, जो कि सात पीढ़ीके इच्छानुसार भोगने पर खूब देने पर और कुटुम्बियों का बांट देने पर भी समाप्त न हो,तथा यावत हे पुत्र! मनुष्य सम्बन्धी ऋद्धियोंका और सत्कार सन्मानका भोग करो। इसके अनन्तर कल्याणों (सुखों) का उपभोग करके, श्रमण भगवान महावीर के समीप यावत दीक्षा लेलेना।

यह सुनकर, सुबाहुकुमार मातापिता से बोले हे मातापिता! आपने जो यह कहा है कि "हे पुत्र! दादा आदि से चले आए धन आदि का भोग कर यावत् कल्याणों का अनुभव कर चुकने पर श्रमण भगवान महावीर के पास दीक्षा लेलेना" सो हे माता पिता! हिरण्य और सुवर्ण आदि समस्त वस्तुएं अग्नि से नष्ट हो सकती हैं, चोर चुरा सकते हैं,राजा लूट सकता है, पुत्रादि बँटा सकते हैं और मृत्यु हो जाने से भिन्न हो सकती हैं। यह अग्नि और राजा के लिए साधारण है यावत् मृत्यु के लिए साधारण है, सड़ना गलना और नाश होना ही इनका धर्म है। आगे या पीछे छोड़ना अवश्य पड़ेगा, परन्तु यह कौन जानता है? पहले कौन नष्ट होगा और पीछे कौन नष्ट होगा? इसी कारण से यावत दीक्षा लेना चाहता हूँ ॥ ४६ ॥

**मूलम्— तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति, सुबाहुकुमार बहूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा, सन्नवित्तए वा, विन्नवित्तए वा, ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेयकारियाहिं पन्न**

बहूहि य पण्णवणाहि एवं वयासी एवं णं जाया! णिग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे, सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाण मग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठीए, खुरो इव एगंतधाराए लोहमया इव जवा चावेयव्वा वालुयाकवले इव निरस्साए गंगा इव महानदी पडिसोयगमणाए महासमुद्दो इव भुयाहिं दुत्तरे तिक्खं चंकमियव्वं गरुयं लंबेयव्वं असिधारव्व संचरियव्वं, णो खलु कप्पति जाया! समणाणं णिग्गंथाणं आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा, पायए वा, तुमं च णं जाया! सुहसमुचिए णो चेव णं दुहसमुचिए, णालं सीयं, णालं उण्हं, णालं खुहं, णालं पिवासं णालं वाइय पित्तियसिंभियसन्निवाइयविविहे रोगायंके उच्चावए गामकंटए बावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए, भुंजाहि ताव जाया! माणुस्सए कामभोगे तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स जाव पव्वइस्ससि ॥ ६० ॥

**भावार्थ**—इसके अनन्तर सुबाहुकुमार के माता पिता सुबाहुकुमार को जब, विषय (रूप रस आदि) के अनुकूल सामान्यवचनों से विशेष वचनों से, सम्बोधन वचनों से, विज्ञान वचनों से सामान्यरूप से, विशेषरूप से और सम्बोधन रूप समझाने रूप वचनों से न समझा सके तब विषयों के प्रतिकूल, संयम में भय और उद्वेग पैदा करनेवाले वचनों से इस तरह बोले—

बेटा! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्य सब में प्रधान अद्वितीय या केवली

कायर और कापुरुष ( नीच पुरुष ) का इस लोक सम्बन्धी लालसाओं से बंधे हुए लोगों को और परलोक के सुख की परवाह न करने वालों को कठिन है । किन्तु मेरे जैसे धीर निश्चित व्यवसाय वालों का—कर्म वीरों को—इसका पालन करना क्या कठिन है? इसलिए हे माता पिता! आपकी आज्ञा लेकर श्रमण भगवान् महावीर के समीप (यावत्) दीक्षा लेना चाहता हूं ॥ १ ॥

मूलम्— तते णं त सुबाहुकुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा, ताहे अकामए चेव सुबाहुकुमारं एवं वयासी—इच्छामो ताव जाया! एगदिवसमवि ते रायसिरिं पासित्तए।

तते णं से सुबाहुकुमारे अम्मापियरमणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठति। तते णं से अदीणसत्तू राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सुबाहुस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव ते वि तहेव उवट्ठवेन्ति। तए णं से अदीणसत्तू राया बहूहिं गणणायगदंडणायगेहि य जाव संपरिवुडे सुबाहुकुमारं अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं १ एवं रुप्पमयाणं कलसाणं २ सुवण्णरुप्पमयाणं कलसाणं ३ मणिमयाणं कलसाणं ४ सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं ५ रुप्पमणिमयाणं कलसाणं ६ सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं ७ भोमेज्जाणं कलसाणं ८ सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं सव्वोसहिहि य सिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए सव्वजुतीए

सव्वबलेण जाव दुदुभिनिग्घोसणादितरवेण महया महया रायाभिसेएण अभिसिंचति, अभिसिंचित्ता करयल जाव कट्टु एव वयासी—जय २ नंदा! जय २ भद्दा! जय नंदा! भद्द ते, अजिय जिणाहि जिय च पालियाहि, जियमज्झे वसाहि, अजिय जिणाहि सत्तुपक्ख, जिय च पालेहि मित्तपक्ख, जाव भरहो इव मणुयाण, हत्थिसीसस्स णगरस्स अन्नेसिं च बहूण गामागरनगरजावसन्निवेसाण आहे वच जाव विहराहि त्तिकट्टु जय जय सद्द पउजंति ॥ ६२ ॥

**भावार्थ**— जब के अनन्तर माता पिता जब सुबाहुकुमार को विषयों के अनुकूल और प्रतिकूल बहुत से सामान्य वचनों विशेष वचनों सम्बोधन वचनों तथा विनय वचनों से न समझा सके, तब निराश होकर सुबाहुकुमार से कहने लगे— हे पुत्र! हम कम से कम एक दिन भी तुम्हें पहले राज्यलक्ष्मी भोगते हुए सिंहासनासीन देखना चाहते हैं। जब सुबाहुकुमार माता पिता के कथन को मानकर चुप हो रहा, तब राजा अदीनशत्रु ने सबको को बुलाया। उन्हें बुलाकर कहा —भो देवानुप्रिय! महान् कार्यों में काम आने वाले बहुमूल्य तथा महान् पुरुषों के योग्य (अथवा महान् पुरुषों द्वारा पूज्य) राज्याभिषेक की सामग्री तैयार करो। सेवकों ने भी (यावत्) उसी प्रकार सब सामग्री तैयार की। तदनन्तर बहुत से गणनायकों तथा दण्डनायकों—अर्थात् राजकर्मचारियों— से (यावत्) घिरे हुए महाराज अदीनशत्रु ने एक सौ आठ सोने के कलश, एक सौ आठ चांदी के कलश एक सौ आठ सोने चांदी के— दोनों को मिला कर बनाए हुए— एक सौ आठ मणियों के, एक सौ आठ मणियों से जड़े हुए सोने के, एक सौ आठ मणियों से जड़े हुए चांदी के, एक सौ आठ मणियों से जड़े हुए सोने चांदी के और एक सौ आठ मिट्टी के कलशों में भरे हुए सब नदियों के जल से सब नदियों की मिट्टी से सब तीर्थों के

फूलों से, मब तीर्थों की सुगधित चीजों से, मब तीर्थों की मालाओं से, मब औषधियों से, सरसों आदि से समस्त आभूषण आदि ऋद्धियों से मव कान्ति युक्त पदार्थों से, ममस्त सेना द्वारा (यावत्) दन्दुभि आदि बाजों के घनघोर शब्द से महान महान राज्याभिषेक किया। अभिषेक कर चुकने पर, मब लोगों ने हाथ जोडकर (यावत) इस प्रकार कहना शुरू किया— हे ममृद्ध! तेरी जय हो! जय हो! हे कल्याणकर! तेरी जय हो! जय हो! हे आनन्द देनवाले तेरा कल्याण हो! जय हो! नहीं जीते हुओं पर विजय प्राप्त करो। जीते हुओं का भलीभाति पालन करो। कुलाचार का पालन वाले कुटुम्बियों में निवास करो। नहीं जीते हुओं को जीतो, जीते हुए शत्रुओं का मित्र के ममान पालन करो। जैसेकि मनुष्यों का भरत चक्रवर्ती ने पालन किया था। हस्तिशीर्ष नगर का तथा इस के सिवाय और और गाव, आकर (यावत) मन्निवेश का आधिपत्य करते हुए (यावत) आनन्द से रहो। इतना कह कर फिर जय २ शब्द किया॥ ६२॥

मूलम्— तते ण मे सुबाहुकुमारे राया जाए, महया जाव विहरति, तए णं तस्स सुबाहुस्स रन्नो अम्मापियरो एव वयासी— भण जाया! किं दलयामो किं पयच्छामो, किंवा ते हियइच्छिए सामत्थे (मते)? तते ण से सुबाहू राया अम्मापियरो एव वयासी— इच्छामि ण अम्मयाओ! कुत्तियावणाओ रयहरण पडिग्गहग च आणिय, कासवय च सद्दावेउ। तते ण से अदीणसत्तू राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ। सद्दावेत्ता एव वयासी— गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइं गहाय दोहिं सय सहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरण पडिग्गहग च उवणेह, सयसहस्सेण कासवय सद्दावेह। तए ण ते कोडुंबियपुरिसा

अदीणसत्तुणा रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय कुत्तियावणाओ दोहिं सयसहस्सेहिं रयहरणं पडिग्गहं च उवणेंति। सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेंति। तते णं से कासवए तेहिं कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठे जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगल पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं मंगलाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अदीणसत्तुं रायं करयलमंजलिं कट्टु एवं वयासी—संदिसह णं देवाणुप्पिया! जं मए करणिज्जं? तते णं से अदीणसत्तू राया कासवयं एवं वयासी—गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया! सुरभिणा गंधोदएणं णिक्के हत्थपाए पक्खालेह। सेयाए चउप्फालाए पोत्तीए मुहं बंधित्ता सुबाहुस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि। तते णं से कासवए अदीणसत्तुणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव हियए जाव पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गंधोदएणं हत्थपाए पक्खालेइ। पक्खालेत्ता सुद्धवत्थेण मुहं बंधइ। बंधित्ता परेण जत्तेण सुबाहुस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेइ। तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स माया महरिहेणं हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ। पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ पक्खालित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चाओ दलयति दलइत्ता सेयाए पोत्तीए बंधेति। बंधित्ता रयणसमुग्गयंसि पक्खिवति पक्खिवित्ता मंजूसाए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता हारवारिधारसिंदुवारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी रोयमाणी

**रोयमाणी कंदमाणी कंदमाणी विलवमाणी विलवमाणी एवं वयासी— एस णं अम्हं सुबाहुस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइत्ति कट्टु उसीसामूले ठवेंति ॥ ६३ ॥**

**भावार्थ—**तदनन्तर जब सुबाहुकुमार राजा होकर (यावत्) महाहिमवन्त पर्वत की तरह श्रेष्ठ होकर विचरने लगा, तब राजा सुबाहुकुमार के माता पिता बोले— पुत्र! कहो तुम्हें क्या देवें? तुम्हें क्या इष्ट है जो दिया जाय? तुम इस समय क्या चाहते हो? राजा सुबाहुकुमार माता पिता से बोले—हे माता पिता! मैं कुत्रिक दूकान (देवता से अधिष्ठित होने के कारण जहां तीन लोक की सब चीज मिल सकें उसे कुत्रिक दूकान कहते हैं) से रजोहरण और पात्र मंगवाना चाहता हूं और नाई को बुलाना चाहता हूं। तदनन्तर राजा अदीनशत्रु ने नौकरों को बुलाया और बोले—हे देवानुप्रियो! तुम जाओ और तीन लाख सिक्के खजाने से ले जाकर कुत्रिक दूकान से दो लाख से रजोहरण और पात्र ले आओ तथा एक लाख देकर नाई को बुला लाओ। सेवक लोगों ने राजा अदीनशत्रु की आज्ञा सुनकर हर्षित और सन्तुष्ट होकर खजाने से तीन लाख सिक्के लेकर, कुत्रिक दूकान पर जाकर दो लाख सिक्कों से रजोहरण और पात्र लिया तथा एक लाख सिक्के देकर नाई को बुलाया। सेवकों द्वारा बुलाए हुए नाई ने भी हर्षित और सन्तुष्ट हृदय होकर स्नान किया, कुलदेवता की पूजा की, कौतुक और मांगलिक प्रायश्चित्त (तिलक आदि) किये। राजसभा में प्रवेश करने योग्य शुद्ध मांगलिक श्रेष्ठ वस्त्र पहने, थोड़े किन्तु बहुमूल्य आभरणों से शरीर को भूषित किया, और राजा अदीनशत्रु की ओर गया। वहां जाकर, हाथ जोड़ कर राजा अदीनशत्रु से इस प्रकार बोला—हे देवानुप्रिय! आज्ञा दीजिये, जो मुझे करना

है ? राजा अदीनशत्रु ने नाइ से कहा—हे देवानुप्रिय[1] तुम जाओ और निर्मल सुगन्धित गन्धोदक से हाथ पैर साफ धोकर चार पड (पट्टी) वाले वस्त्र से मुँह बांध कर सुबाहुकुमार के दीक्षा के लायक चार अंगुल छोडकर केशों के अग्रभाग काटो। राजा अदीनशत्रु की आज्ञा सुनकर नाइ ने हर्षित (यावत्) हृदय होकर आज्ञा स्वीकार की, स्वीकार करके सुगन्ध गन्धोदक से हाथ पैर धोए। धोकर शुद्ध वस्त्र से मुह बांधा। मुँह बांधकर बडे ही यत्न से चार अंगुल छोडकर दीक्षा के योग्य, सुबाहुकुमार के केशों के अग्रभाग काटे। सुबाहुकुमार की माता ने बड़े आदमियों के योग्य, हंस जैसे सफेद या हंस के चिन्ह से शोभमान वस्त्र में उन कटे हुए केशों को रख लिए और सुगन्ध गन्धोदक से उन्हें धोया। धोकर बावन चन्दन के छींटे दिये, और उसी सफेद वस्त्र में बांधकर रत्नों के डिब्बे में रख लिए। उस डिब्बे को सदव में धर कर मोतियों की माला जल की धारा या निर्गुण्डी के फूल समान सफेद आंसू डारती हुई, रोती २ आक्रन्दन और विलाप करती हुई इस प्रकार बोली—हमें अभ्युदय के समय, उत्सव में पुत्रादि के जन्मोत्सव में तिथियों में इन्द्रादि के उत्सव के समय, पर्वों में यही दर्शन सुबाहुकुमार का अन्तिम दर्शन होगा ऐसा सोचकर उसने वह बालों की पेटी सिरहाने रख छोडी ॥ ६३ ॥

**मूलम्— तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स अम्मापियरो उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति, रयावेत्ता सुबाहुकुमार दोचंपि तच्चंपि सेयपीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावेत्ता पम्हलसुउमालाए गंधकासाइयाए गायाइं लूहेंति, लूहित्ता सरसेण गोसीसचंदणेण गायाइं अणुलिंपंति। अणुलिंपित्ता नासानीसासवायवोज्झं जाव हंसलक्खणपडगसाडगं नियंसेंति। नियंसित्ता हारं पिणद्धंति, पिणद्धित्ता अद्धहारं पिणद्धंति, पिणद्धित्ता एवं एगावलिं मुत्तावलिं कणगावलिं**

रयणावलिं पालंब पायपलंब कडगाइं तुडिगाइं केऊराइं अंगयाइं दस मुद्दियाणंतयं कडिसुत्तयं कुंडलाइं चूडामणिं रयणुक्कडं मउडं पिणद्धेति, पिणद्धित्ता दिव्वं सुमणदामं पिणद्धेति, पिणद्धित्ता दद्दरमलयसुगंधिए गंधे पिणद्धेति। तते णं सुबाहुकुमारं गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पि व अलंकियविभूसियं करेंति। तते णं से अदीणसत्तू राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी — खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं ईहामिय-उसभतुरगनरमगरविहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं घंटावलिमहुरमणहरसरं सुभकंतदरिसणिज्जं णिउणोवचियमिसिमिसिंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं अब्भुग्गयवइरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहरजमलजंतजुत्तं पि व अच्चीसहस्समालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेस्सं सुहफासं सस्सिरीयरूवं सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं उवट्ठवेह। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा हट्ठतुट्ठ जाव उवट्ठावेंति। तते णं से सुबाहुकुमारे सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने ॥ ६४ ॥

**भावार्थ**—तदनन्तर, सुबाहुकुमार के माता पिता ने उत्तर दिशा में एक सिंहासन रखवाया। पश्चात् सुबाहुकुमार को उस पर बैठा कर दो तीन बार सफेद और पीले (चांदी सोने के) कलशों से स्नान कराया। स्नान करा चुकने पर रूँएदार मुलायम सुगंधित गंधकाषाय वस्त्र से शरीर पोंछा। शरीर पोंछकर सरस बावना चन्दन का लेप किया। लेप करके

नाक के नि श्वास की हवा से उडने वाला—बहुत पतला—(यावत्) हंस जैसा स्वच्छ वस्त्र पहनाया। पहनाकर, हार (अठारह लड़ों का) और अर्ध हार पहनाया, तथा एकावलि मुक्तावलि कनकावलि रत्नावलि हार पहनाए। पैरों तक लटकने वाला लम्बा हार, कड़े तुटिका(बाहु रक्षिका) भुजबन्द दशों अंगुलियों में दश मुद्रिकाएँ, करधनी कुंडल चूड़ामणि (मस्तक में लगाने का रत्न) और रत्न से जड़ा हुआ मुकुट पहनाया। पहनाकर दिव्य फूलमाला पहनाई। पहनाकर मलयपर्वत पर पैदा होने वाले चन्दन का अतर लगाया, तदनन्तर सुबाहुकुमार का सूत आदि में गूंथी हुई फूलों की गेंद सरीखी गूथ कर लपेटी हुई, पूरिम और फूलों के परस्पर संयोग से बनाई हुई इन चार तरह की मालाओं से कल्पवृक्ष की तरह अलंकृत और विभूषित किया। पश्चात् राजा अदीनशत्रु ने नौकरों को बुलाकर कहा—भो देवानुप्रियो! सैकड़ों खंभों वाली, लीला करती हुई अनेक पुतलियों से युक्त मढ़िया बैल घोड़ा नर मगर पक्षी सर्प किन्नर रुरु (मृग विशेष) अष्टापद चमरी गाय हाथी वनलता और पद्म लता के चिन्हों से शोभमान छोटी २ घंटियों के मनोहर शब्दों से शब्दायमान, शुभ सुन्दर और दर्शनीय, चतुर कारीगरों द्वारा बनाई हुई, देदीप्यमान मणि और रत्नों की बनी हुई घंटियों के समुदाय से व्याप्त, वज्र की बनी हुई ऊँची वेदी से युक्त, मनोहर, विद्याधरों की चलती फिरती पुतलियों के जोड़े से युक्त (चित्रित) हजार किरणों वाली और पूरा सत्तर हजार रूपों से युक्त, चमकती हुई—खूब चमकती हुई, अतिशय दर्शनीय, सुन्दर रूप वाली, सश्रीक रूप वाली, शीघ्र—अति शीघ्र चलने वाली, चपल, वेग वाली एक हजार पुरुषों से उठाई जाने वाली पालकी ले आओ। यह सुनकर सेवक लोग हर्षित और सन्तुष्ट होकर (यावत्) पालकी ले आये। सुबाहुकुमार उस पर चढ़ कर पूर्व दिशा की ओर मुँह करके वेदी पर बैठ गया॥ ६४॥

मूलम्—तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स माया ण्हाया कयबलिकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता सुबाहुस्स कुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणंसि निसीयइ। तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स अंबधाई रयहरणं पडिग्गहगं च गहाय सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता सुबाहुस्स कुमारस्स वामे पासे भद्दासणंसि निसीयति। तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगयगयहसियभणियचिट्ठियविलाससंलावुल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसला आमेलगजमलजुयलवट्टियअब्भुन्नयपीणरतियसंठियपयोहरा हिमरययकुंदेंदुपगासं सकोरेंटमल्लदामधवलं आयवत्तं गहाय सलीलं ओहारेमाणी ओहारेमाणी चिट्ठइ। तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुसलाओ सीयं दुरूहंति, दुरूहित्ता सुबाहुस्स कुमारस्स उभओ पासं नाणामणिकणगरयणमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ सुहुमवरदीहवालाओ संखकुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ चामराओ गहाय सलीलं ओहारेमाणीओ ओहारेमाणीओ चिट्ठंति। तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारा जाव कुसला सीयं जाव दुरूहति, दुरूहित्ता सुबाहुस्स कुमारस्स पुरओ पुरत्थिमेणं चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडं तालियंटं गहाय चिट्ठति। तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी जाव सुरूवा सीयं दुरूहति। दुरूहित्ता सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणेणं सेयं रययामयं विमलसलिलपुन्नं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ, तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पिया

कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वदासी खिप्पा मेव भो देवाणुप्पिया! सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं एगाभरणगहियनिज्जोयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं सद्दावेह। जाव सद्दावेंति, तते णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा अदीणसत्तुस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठा ण्हाया जाव एगाभरणगहियनिज्जोया जेणामेव अदीणसत्तू राया तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अदीणसत्तु रायं एवं वदासी— संदिसह णं देवाणुप्पिया! जं अम्हेहिं करणिज्जं। तते णं से अदीणसत्तू राया ते कोडुंबियवरतरुणसहस्सं एवं वयासी-गच्छह णं देवाणुप्पिया! सुबाहुस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं परिवहेह। तते णं ते कोडुंबियवरतरुणसहस्सं अदीणसत्तुणा रण्णा एवं वुत्तं संतं हट्ठतुट्ठ सुबाहुस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं परिवहइ। तए णं सुबाहुस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलयातप्पढमयाए पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया। तं जहा— सोत्थिय १ सिरिवच्छ २ णंदियावत्त ३ वद्धमाणग ४ भद्दासण ५ कलस ६ मच्छ ७ दप्पण ८, जाव बहवे अत्थत्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अनवरयं अभिणंदता य अभिथुणंता य एवं वयासी— जय जय नंदा! जय जय भद्दा! जय नंदा! भद्दं ते, अजियाइं जिणाहि इंदियाइं, जियं च पालेहि समणधम्मं, जियविग्घो वि य वसाहि तं देव! सिद्धिमज्झे, णिहणाहि रागदोसमल्ले, तवेण धितिधणियबद्धकच्छे मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं, अप्पमत्ते पावय, वितिमिरमणुत्तरं केवलं नाणं, गच्छय परमपयं सासयं च अयलं

हत्ता परीसहचमू ण, अभीओ परीसहोवसग्गाण धम्मे ते अविग्ध भवउत्ति कट्टु पुणो पुणो मगलजयजयसद्द पउ— जति। तते ण से सुबाहुकुमारे हत्थिसीसस्स नगरस्स मज्झ-मज्झेण निग्गच्छइ । निग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ । तते ण तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स अम्मापियरो सुबाहु कुमार पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगव महावीर तेणामेव उवागच्छइ । उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेति, करेत्ता वदति नमसति, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—॥ ६५ ॥

**भावार्थ—** तदनन्तर, सुबाहुकुमार की माता स्नान करके गृहदेवता की पूजा करके (यावत) थोड़े किन्तु बहुमूल्य वाले अलकारों से शरीर को अलकृत करके पालकी पर सवार हुई। सवार होकर सुबाहुकुमार की दाहिनी ओर, भद्रासन पर बैठ गई। इसके बाद सुबाहुकुमार को दूध पिलाने वाली धाय रजोहरण और पात्र लेकर पालकी पर चढ़ी और सुबाहु कुमार की बाई ओर भद्रासन पर बैठी। पश्चात् एक उत्तम तरुणी (जवान स्त्री) सुबाहुकुमार के पीछे बैठी । वह ऐसी जान पड़ती, मानो सिंगार का आगार ही हो। उसका वेष सुन्दर था। वह चलने में, हँसने में, बोलने में, चेष्टा करने में, विलास (नत्र के विकार) में, सलाप और उल्लाप में निपुण, तथा लोकव्यवहार में चतुर थी। उसके कुछ २ आपस में मिले हुए, समश्रेणी में रहे हुए दोनों स्तन गोल ऊँचे मोटे सुख देने वाले और विशेष (सुन्दर) आकार वाले थे। वह युवती बर्फ चांदी कुन्द के पुष्प या चन्द्रमा के समान कान्ति वाले कोरटवृक्ष के फूलों के गुच्छों की मालाओं से युक्त, सफेद छत्र को लेकर, उसे लीला पूर्वक धारण किये हुए थी। इसके अनन्तर सिंगार के भंडार के समान सुन्दर वेष वाली दो तरुण स्त्रियाँ—

पालकी पर चढ़कर सुबाहुकुमार की दोनों ओर आकर, नाना मणि सुवर्ण रत्न और बहुमूल्य लाल मान से युक्त उज्ज्वल डंडी वाले, तथा चमत्मा पैदा करने वाले, चमकदार, पतले उत्तम और लम्बे बालों वाले, शंख कुन्द के फूल पानी की छोटी सी बूंद (कण) मथे हुए अमृत के फेन के पुञ्ज की तरह सफेद चॅवरों को लेकर, लीला पूर्वक ढारती हुई ठहरीं। पश्चात् सिंगार के आगार की तरह — खूब सिंगार किये हुए — यावत् कुशल एक उत्तम तरुणी (यावत्) सुबाहुकुमार के समीप पालकी पर सवार हुई। सवार होकर सुबाहुकुमार के सामने, पूर्व दिशा में खड़ी होकर, चन्द्रकान्त मणि और वैडूर्य मणि से जड़े हुए डंडे वाले बीजने को लेकर ठहरी। फिर सिंगार किये हुए एक और सुन्दर तरुणी सुबाहुकुमार के समीप पालकी पर चढ़कर, सुबाहुकुमार से पूर्व दिशा — आग्नेय — दिशा में खड़ी होकर, निर्मल जल से भरे हुए, मदोन्मत्त हाथी के बड़े मुँह के जैसे आकार वाले चांदी के भृंगार (झारी) को लेकर ठहरी। इसके बाद सुबाहुकुमार के पिता राजा अदीनशत्रु ने सेवकों को बुला कर कहा — हे देवानुप्रिय! समान, समान रंग के, समान उम्र के, समान पोशाक (या आभरण) वाले एक हजार जवान सेवकों को शीघ्र बुला लाओ। (यावत्) सेवकों ने उन्हें बुलाया। तब वे अच्छे एक हजार जवान पुरुष राजा अदीनशत्रु के आदमियों के बुलाने पर हर्षित होकर, स्नान करके (यावत्) एक ही तरीके आभरणों को धारण करके, जिस ओर महाराज अदीनशत्रु थे, उसी ओर आये। आकर महाराज अदीनशत्रु से बोले — हे देवानुप्रिय! आज्ञा दीजिए, हम क्या करना है? राजा अदीनशत्रु ने उन एक हजार तरुण सेवकों से कहा — देवानुप्रिय! जाओ, पुरुषसहस्रवाहिनी (एक हजार आदमियों से चलाई जाने वाली) सुबाहुकुमार की पालकी को उठाओ। उन एक हजार आदमियों ने अदीनशत्रु राजा की आज्ञा सुनकर हर्षित और सन्तुष्ट होकर, सुबाहुकुमार की पुरुषसहस्रवाहिनी पालकी उठाई।

कुमुदेति वा पके जाए, जले सवड्ढिए नावलिप्पइ पकरएण, नोवलिप्पइ जलरएण एवामेव सुबाहुकुमारे कामेसु जाए, भोगेसु सवड्ढिए, णोवलिप्पइ कामरएण णोवलिप्पइ भोगरएण, एस ण देवाणुप्पिया! ससारभउव्विग्गे, भीए जम्मण-जरामरणाण, इच्छइ देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए। अम्हे ण देवाणुप्पियाण सिस्सभिक्ख दलयामो। पडिच्छतु ण तुम्हे देवाणुप्पिया! सिस्सभिक्ख। तते ण समणे भगव महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स अम्मापिऊहिं एव वुत्ते समाणे एयमट्ठ सम्म पडिसुणेइ। तते ण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार उम्मुयइ। तते ण से सुबाहुकुमारस्स माया हसलक्खणेण पडगसाडएण आभरणमल्लालकार पडिच्छइ,पडिच्छित्ता हारवारिधार-सिंदुवारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइ असूणि विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी, रोयमाणी रोयमाणी, कदमाणी कदमाणी, विलवमाणी विलवमाणी, एव वयासी— जतियव्व जाया! घडियव्व जाया! परिक्कामियव्व जाया! अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएयव्व। अम्ह पि ण एवमेव मग्गे भवउ त्ति कट्टु सुबाहुस्स कुमारस्स अम्मापियरो समण भगव महावीर वदति नमसति,वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। तते ण से सुबाहुकुमारे पचमुट्ठिय लोय करेइ, करेत्ता जेणामेव समणे भगव महावीर तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी— ॥ ६६ ॥

**भावार्थ—** हे देवानुप्रिय! यह सुबाहुकुमार हमारा इकलौता पुत्र है। यह इष्ट कान्त प्रिय मनोज्ञ मनो म विश्वासपात्र जीवन का श्वास तथा हृदय को आनन्द देने वाला है। ऊमर के फल की नाई देखना तो दूर रहा, इसका नाम सुनना भी दुर्लभ है। जैसे उत्पल कमल (सूर्य विकाशी) कुमुद (चन्द्र विकाशी) कीचड़ में उत्पन्न होकर और जल में बढ़ कर भी जैसे उनमें लिप्त नहीं होते, उसी प्रकार सुबाहुकुमार ने कामों में ही जन्म लिया है, भोगोपभोगों में यह बड़ा हुआ है (इसका लालन पालन हुआ है) किन्तु यह काम और भोगोपभोगों में लिप्त नहीं हुआ है। हे देवानुप्रिय! यह संसार से उद्विग्न और जन्म जरा मरण से डरा हुआ है। इसलिए आपके पास मुण्डित होकर गृहस्थाश्रम त्यागकर मुनि दीक्षा लेना चाहता है, और हम आपको शिष्य की भिक्षा देते हैं। हे देवानुप्रिय! आप शिष्य भिक्षा का स्वीकार कीजिये। सुबाहुकुमार के माता पिता के इस कथन को श्रमण भगवान् महावीर ने अच्छी तरह सुना। सुबाहुकुमार श्रमण भगवान् महावीर के समीप ईशान कोण में आया। वहां आकर अपने आप आभरण फूलमाला और अलंकारों को उतार दिया, और सुबाहुकुमार की माता ने हंस के जैसे स्वच्छ वस्त्र में उन्हें ले लिया। तथा हार जल की धारा सिंदुवार (निगुंडी) के फूलों या हार से टूटे हुए मोतियों की तरह आंसू डालती २ रोती २ क्रंदन करती २ विलाप करती २ बोली—हे पुत्र! संयम में यत्न करना। हे पुत्र! अप्राप्त वस्तु (गुण) का प्राप्त करना। हे पुत्र! संयम में पराक्रम करना और इस विषय में प्रमाद न करना। हमारा भी यही मार्ग होवे। इस प्रकार कह कर सुबाहुकुमार के माता पिता श्रमण भगवान् महावीर को वन्दना नमस्कार करके, जिस ओर से आये थे, उसी ओर वापस लौट गये। उनके लौट जाने पर, सुबाहुकुमार ने अपने हाथों से पंचमुष्टि लोच करके, जिधर श्रमण भगवान् महावीर थे, उसी तरफ जाकर श्रमण भगवान् [illegible] प्रदक्षिणा करके वन्दना,

और नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार करके बोला- --॥ ६६ ॥

**मूलम्—** आलित्ते णं भंते! लोए, पलित्ते णं भंते! लोए, आलित्तपलित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य, से जहा नामए केई गाहावई आगारंसि झियायमाणंसि जे तत्थ भंडे भवति अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमइ, एस मे णित्थारिए समाणे पच्छा पुरा हियाए सुहाए खेमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ, एवामेव ममवि एगे आया भंडे इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे एस मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सइ, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिएहिं सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं सेहावियं सिक्खावियं सयमेव आयारगोयरविणयवेणइयचरणकरणजायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं। तते णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुकुमारं सयमेव पव्वावेइ, सयमेव मुंडावेइ, सयमेव आयार जाव धम्ममाइक्खइ। एवं देवाणुप्पिया! गंतव्वं चिट्ठियव्वं निसीयव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं एवं उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूतेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेण संजमियव्वं, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएयव्वं। तते णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं निसम्म सम्मं पडिवज्जइ। तमाणाए तह गच्छइ तह चिट्ठइ जाव उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेइ ॥ ६७ ॥

**भावार्थ—** हे भगवन्! यह संसार जरा और मरण रूपी अग्नि से जल रहा है, खूब जल रहा है और हे भगवन्! चारों ओर से अत्यन्त जल

१ ज्ञाता० अ० १ प ६० पृ २ प १२ तक

रहा है। जैसे कोई सेठ, घर मे आग लगने पर, घर मे रक्खे हुए थोड़े बोझे वाली किन्तु बहुमूल्य चीजों को लेकर स्वयं एकान्त में जाकर सोचता है— कि मेरे द्वारा निकाला हुई ये चीजें इस लोक में, आगामी काल में हित के लिए, सुख के लिए क्षेम के लिए निश्रेयस (कल्याण) के लिए होगीं, इसी प्रकार मेरा आत्मा भी एक भाण्ड (उपकरण) है, यही इष्ट कान्त प्रिय मनोज्ञ और मनोरम है। मै आत्मा को जलते हुए संसार मे निकालूंगा, तो यह संसार (कर्म सहित अवस्था) का नाश करने वाला होगा। इसलिए मै आप से स्वयं दीक्षा लेना, स्वयं मुण्डित होना, स्वयं प्रतिलेखना आदि क्रियाओं का ग्रहण करना, स्वयं सूत्र अर्थ सीखना, तथा आचार गोचरी विनय विनय का फल कर्म क्षय आदि, चारित्र, करण (आहारादि की शुद्धि आदि) संयम की यात्रा, मात्रा (आहार आदि का परिमाण) धर्म कथा आदि वृत्ति वाले धर्म को धारण करना चाहता हूं।

इसके अनन्तर श्रमण भगवान् महावीर ने सुबाहुकुमार को स्वयं ही दीक्षा दी, स्वयमेव मुण्डित किया, स्वयमेव आचारादि धर्म की इस प्रकार शिक्षा दी— हे देवानुप्रिय! ईर्या समिति से चलना चाहिए, निर्दोष पृथिवी पर ठहरना चाहिए, पृथिवी को प्रमार्जन करके बैठना चाहिए, भुजा को तकिया बना कर, मस्तक के ऊपर एक कपड़ा बिछा कर शरीर की प्रमार्जना करके सामायिक आदि का उच्चारण करके सोना चाहिए, निर्दोष भोजन करना चाहिए, हित मित प्रिय वचन बोलना चाहिए, इस प्रकार प्रमाद और निद्रा का त्याग कर भूत (सब वनस्पति) जीव (पंचेन्द्रिय) सत्त्व (पृथ्वी पानी अग्नि और वायु) की संयम पूर्वक रक्षा करनी चाहिए। सुबाहुकुमार ने श्रमण भगवान् महावीर के समीप इस धर्मोपदेश को सुनकर सम्यक् प्रकार स्वीकार किया। वह पूर्वोक्त आज्ञानुसार ही चलता, उठता बैठता निद्रा और प्रमाद का त्याग कर के प्राण भूत जीव और सत्त्वों की रक्षा करता था॥ ६७॥

मूलम्— तते ण से सुबाहुकुमारे अणगारे जाते इरियासमिए जाव बंभचारी। तते ण से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जेति, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम० जाव तवोविहाणेहिं अप्पाणं भावेत्ता बहूहिं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिभत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे। से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झिहित्ता तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सति। से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए सणंकुमारे देवत्ताए उववन्ने। से णं ताओ देवलोगाओ तहेव माणुस्सं पव्वज्जा, तहेव महासुक्के, ताओ देवलोगाओ तहेव माणुस्सं पव्वज्जा तहेव आणाए ताओ देवलोगाओ तहेव मणुस्सं पव्वज्जा, तहेव आरणाए, ताओ देवलोगाओ तहेव माणुस्सं पव्वज्जा, तहेव सव्वट्ठसिद्धे, से णं देवलोगाओ अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति, कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! महाविदेहे वासे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, अड्ढाइं दित्ताइं वित्ताइं विच्छिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधणबहुजातरूवरययाइं आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिति।

तए ण तस्स दारगस्स माया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं सुरूवं दारयं पयाहिति, जहेव पुव्वं तहेव नेयव्वं जाव*भोग-रएणं नोवलिप्पइ। तहेव मित्तनाइनियगसयणसंबंधिपरिजणेणं, से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिति। केवलं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइस्सति। से णं अणगारे भविस्सति, इरियासमिए जाव सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते। तस्स णं भगवओ अणुत्तरेणं नाणेणं एवं दंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए गुत्तीए मुत्तीए अणुत्तरेणं सव्वसंजमतवसुचरियफलनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे निरावरणे निव्वाघाए केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिति। तते णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ। सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियागं जाणिहिइ पासिहिइ, तं जहा— आगतिं गतिं ठितिं चवणं उववायं तक्कं पच्छाकडं पुरेकडं मणो— माणसियं खइयं भुत्तं कडं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणवयकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ। तते णं से सुबाहू केवली एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता बहूइं भत्ताइं पचक्खाइस्सइ, पचक्खाइत्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदिस्सइ, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे केसलोचे बंभचेरवासे अण्हाणगं अदंतवणं अच्छत्तगं अणुवाहणगं भूमिसिज्जाओ फलहसिज्जा-

* रायप० प० १४० प० ८ में।

ओ परघरपवेसो लद्धावलद्धाइं माणावमाणाइं परेहिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया विरूवा बावीसं परीसहोवसग्गा गामकण्टगा अहियासेज्जन्ति तमट्ठं आराहेइ, आराहित्ता चरमेहिं उस्सासनीसासेहिं सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेहिइ। सेवं भंते! सेवं भंते! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे *विहरति। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ ३८ ॥

पढमज्झयणं समत्तं।

---

**भावार्थ**—अब सुबाहुकुमार मुनि ईर्यासमिति से युक्त (यावत्) ब्रह्मचारी हुआ। तदनन्तर सुबाहुकुमार मुनि ने श्रमण भगवान् महावीर जैसे ईर्यासमिति आदि के पालनेवाले स्थविरों के समीप सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया। अध्ययन करके बहुत से चतुर्भक्त (उपवास) षष्ठभक्त (बेला) वगैरह (यावत्) नाना प्रकार के तपों द्वारा आत्मा का चिन्तन करके, बहुत वर्षों तक श्रामण्यपर्याय (मुनि अवस्था) का पालन करके एक मास की संलेखना करके आत्मचिन्तन करते हुए एक महीने का अनशन करके, आलोचना और प्रतिक्रमण करके, समाधि पूर्वक आयु पूर्ण होने पर काल करके सौधर्मकल्प में (प्रथम देवलोक में) देव होगा। तदनन्तर वह सुबाहुकुमार का जीव पहले देवलोक से आयुक्षय भवक्षय और स्थितिक्षय करके मनुष्य होगा। फिर जैनधर्म को समझकर उसी प्रकार के स्थविरों के समीप मुण्डित

---

*राय० प० २९५ प ६ तक।

होकर (यावत्) दीक्षा लेलेगा। वहां बहुत वर्षों तक साधु-पर्याय को पालकर आलोचना और प्रतिक्रमण करके समाधि-मरण करके सनत्कुमार देवलोक में देव उत्पन्न होगा। फिर वह लान्तक स्वर्ग में उसी प्रकार मनुष्य भव पाकर दीक्षा लेकर देवलोक में देव होगा। फिर उस देव लोक से उसी तरह मनुष्य भव पाकर, दीक्षा लेकर उसी तरह महाशुक्र स्वर्ग में देव होगा। उस स्वर्ग से उसी प्रकार मनुष्य होकर, दीक्षा लेकर आनत स्वर्ग में देव होगा, उस देवलोक से चयकर मनुष्य होकर, दीक्षा लेकर उसी प्रकार आरण स्वर्ग में देव होगा। उससे चयकर मनुष्य भव पाकर दीक्षा ले कर सर्वार्थसिद्धि में देव होगा। उस देवलोक से चय कर सुबाहु कहां जायगा? कहां उत्पन्न होगा? हे गौतम! महाविदेह क्षेत्र में धनादि से परिपूर्ण, प्रतापी, दानादि गुणों से प्रसिद्ध, तथा जिन के विस्तीर्ण और बहुत से भवन शयन आसन यान वाहन हैं और बहुत धन-धान्य-चांदी सोने वाले हैं, जिन के लेन देन या व्याज आदि का काम होता है, भोजन पान का बहुत दान दिया जाता है, बहुत से दासी दास गाय भैंस बैल आदि हैं, बहुत आदमी भी जिनका अपमान नहीं कर सकते—ऐसे कुलों में से एक पुरुष रूप से जन्म लेगा। तदनन्तर उस बालक की माता पुत्र को बहोत्तर (यावत्) सुबाहुकुमार का प्रसङ्ग करेगी। बाल्य आदि का वर्णन जैसा पहले किया था, उसी प्रकार समझ लेना चाहिए। (यावत्) वह बालक भोग-रज से लिप्त नहीं होगा। पहले वह अनुसार मित्र जाति स्वजन सम्बन्धी और नौकर चाकरों में भी गाढ़ित नहीं होगा। तदनन्तर वह सुबाहुकुमार का जीव उसी प्रकार के स्थविरों के समीप केवलि-धर्म को समझकर, मुण्ड होकर गृहस्थावस्था को त्यागकर मुनि-वेश में दीक्षित होगा। वह अनगार होगा। ईर्या आदि समितियों से युक्त होकर (यावत्) ब्रह्मचारी होगा। तरह जाज्वल्यमान अग्नि की तरह तेज से देदीप्यमान होकर

सब—सहन किये जाते हैं, उस पदार्थ (मोक्ष) का आराधन करेंगे, आराधन करके अन्तिम श्वास लेकर सिद्ध ( कृतकृत्य होंगे, बुद्ध होंगे, आठ कर्मों से मुक्त होंगे, निर्वाण ( कर्म रूप अग्नि के शान्त होने से शान्त ) प्राप्त करेंगे और सब दुखों का अन्त करेंगे । गौतम गणधर बोले—हे भगवन्! ऐसा ही है ऐसा ही है । इतना कहकर श्रमण भगवान महावीर को वन्दना और नमस्कार करके संयम और तप से आत्मा की भावना करते हुए विचार करने लगे ।

हे जम्बू! इस प्रकार श्रमण भगवान महावीर ने ( यावत ) मोक्ष जाते हुए सुखविपाक के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ प्ररूपण किया है ।

मैंने ( सुधर्मा स्वामी ने ) जैसा श्री श्रमण भगवान् महावीर से सुना है, वैसा कहा है ॥ ८ ॥

—⁂—

इस प्रकार सुखविपाकसूत्र में सुबाहुकुमार
अनगार का वर्णन करने वाला
प्रथम अध्ययन
समाप्त
हुआ

## द्वितीय अध्ययन।

मूलम्— बिनियरस ण उक्खेवो—

एव खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णगरे थूभकरंडउज्जाणे, धनो जक्खो, धणावहो राया, सरस्सई देवी, सुमिणदसणं, कहणं, जम्मणं बालत्तणं कलाओ य, जुव्वणे, पाणिग्गहणं दाओ पासाद ० भोगा य जहा सुबाहुस्स। णवरं भद्दनंदी कुमारे सिरिदेवीपामोक्खाणं पचसया, सामी समोसरणं सावगधम्मं पुव्वभवपुच्छा— महाविदेहे वासे पुंडरीकिणी णगरी विजयते कुमारे, जुगबाहू तित्थयरं पडिलाभिए माणुस्साउए निबद्धे इह उप्पन्ने सेसं जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति, सव्वदुक्खाणमंत करेहिति॥२॥

भावार्थ— अब दूसरे अध्ययन का अर्थ कहते हैं—

हे जम्बू! उस काल में उस समय में ऋषभपुर नामक नगर था। उसमें स्तूपकरंड उद्यान था। वहां धन्य नामक यक्ष था। धनावह नामक राजा था। सरस्वती रानी थी। स्वप्न का देखना, स्वप्न का राजा से कहना, पुत्र का जन्म होना, बाल्यावस्था, ७२ कलाओं का अध्ययन करना, यौवन अवस्था का वर्णन, पाच सौ स्त्रियों से पाणिग्रहण, दहेज महल महला आदि का देना, भोग भोगना आदि सुबाहुकुमार के समान जानना चाहिए। विशेष यह है कि नाम भद्रनन्दिकुमार था। उसके श्रीदेवी वगैरह पाच सौ स्त्रियां थीं। भगवान् महावीर समवशरण सहित पधारे। उनके समीप उसने श्रावक धर्म स्वीकार किया। गौतम स्वामी ने भद्रनन्दिकुमार के पूर्वभव पूछे। भगवान् महावीर ने कहा— महाविदेह क्षेत्र में पुंडरीकिणी नगरी थी। विजयकुमार नाम था। युगबाहु तीर्थंकर से प्रतिबोधित होकर, मनुष्य आयु बांधा था। फिर यहां (ऋषभपुर नगर में) उत्पन्न हुआ।

शेष सब कथा सुबाहुकुमार समान जानना। (यावत्) महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होगा, बुद्ध होगा, मुक्त होगा, निर्वाण प्राप्त करेगा और सर्व दुःखों का अन्त करेगा ॥ २ ॥

दूसरा अध्ययन समाप्त हुआ ॥

## तृतीय अध्ययन

**मूलम्— तचस्स उक्खेवो—**

**वीरपुर णगर, मणोरम उज्जाणं, वीरकण्हमित्ते राया, सिरीदेवी, सुजाए कुमारे, बलसिरीपामोक्खा पंचसयकन्ना, सामी समोसरणं, पुव्वभवपुच्छा— उसुयारे नयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए मणुस्साउसे निबद्धे। इह उप्पन्ने जाव महाविदेहवासे सिज्झिहिति ॥ ३ ॥**

**भावार्थ—** वीरपुर नगर में मनोरम नाम का उद्यान था। नगर का राजा वीरकृष्णमित्र और श्री नामकी रानी थी। उनका सुजात नामका कुमार था। बलश्री प्रमुख पांच सौ स्त्रियां थीं। वहां भगवान् महावीर स्वामी का समवसरण आया। गौतम स्वामी ने सुजातकुमार के पूर्वभव पूछे। भगवान महावीर ने कहा— इषुकार नगर में ऋषभदत्त गाथापति ने पुष्पदत्त अनगार को प्रतिलाभ दिया था। वहां मनुष्य आयु का बंध करके यहां उत्पन्न हुआ है। (यावत्) महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होगा ॥ ३ ॥

॥ तीसरा अध्ययन समाप्त हुआ ॥

## चतुर्थ अध्ययन ।

**मूलम्— चउत्थस्स उक्खेवो—**

**विजयपुर णगर, णंदणवणं उज्जाणं, असोगो**

वासवदत्ते राया, कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भद्दापामोक्खा
ण पंच सया जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी धणपाले राया,
वेसमणभद्दे अणगार पडिलाभिए इह जाव सिद्धे ॥ ४ ॥
चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥

**भावार्थ—** विजयनगर में नन्दनवन उद्यान था। उसमें अशोक यक्ष रहता था। नगर का राजा वासवदत्त और रानी कृष्णा थी। कुमार का नाम वासव कुमार था। भद्रा प्रभृति पांच सौ रानियां थीं। (यावत्) वह कुमार पूर्व भव में कौशाम्बी नगरी का धनपाल नामक राजा था। वैश्रमणभद्र मुनि ने प्रतिलाभ लिया था। यहां (यावत्) उत्पन्न हुआ और सिद्ध होगा ॥ ४ ॥

वासवकुमार का वर्णन करने वाला
चौथा अध्ययन समाप्त हुआ

## पंचम-अध्ययन

**मूलम्—**पंचमस्स उक्खेवो—सोगंधिया णयरी, नीलासोए उज्जाणे सुकालो जक्खो, अप्पडिहओ राया, सुकन्ना देवी, महचंदे कुमारे, तस्स अरहदत्ता भारिया, जिणदासो पुत्तो तित्थयरागमणं जिणदासपुव्वभवो मज्झमिया णयरी, मेहरहो राया,सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए,जाव सिद्धे ॥५॥

पंचमं अज्झयणं समत्तं

**भावार्थ—**सौगन्धिका नगरी में नीलाशोक उद्यान था। उसमें सुकाल नामका यक्ष था। राजा अप्रतिहत और रानी सुकन्या थी। महचन्द्र

कुमार था। उसकी अरहत्ता स्त्री और जिनदास पुत्र था। तीर्थंकर आये। गणधर भगवान् ने जिनदास के पूर्वभव पूछे। भगवान ने कहा माध्यमिका नगरी में सुधर्म राजा ने मेघरथ अनगार को दान दिया [यावत्] सिद्ध होगा ॥ ५ ॥

पांचवां अध्ययन समाप्त।

## छठा अध्ययन।

**मूलम्—छट्ठस्स उक्खेवो—कणगपुर णगर सेयासोय उज्जाण वीरभद्दो जक्खो, पियचंदो राया, सुभद्दा देवी, वेसमणे कुमारे जुवराया, सिरीदेवीपामोक्खा पंचसयकन्ना, पाणिग्गहण तित्थयरागमण, धनवती जुवरायपुत्ते, जाव पुव्वभवो-मणिवया नगरी, मित्तो राया, सम्भूतिविजए अणगारे पडिलाभिते, जाव सिद्धे ॥ ६ ॥**

छट्ठं अज्झयणं समत्तं।

**भावार्थ**—कनकपुर नगरमें श्वेताशोक उद्यान था। जिसमें वीरभद्र नामके यक्षका यक्षायतन था। नगरका राजा प्रियचन्द्र और रानी सुभद्रा थी। युवराज वैश्रमणकुमार था। श्रीदेवी प्रभृति पांचसो कन्याएं उसे परिणाई गई। तीर्थंकर भगवान् आये। उन्होंने धनपति युवराजके पुत्रके पूर्वभव बताए कि-[यावत्]मणिपदा नगरी में मित्र नामक राजा था। सम्भूति विजय अनगारको दान देकर यहां उत्पन्न हुआ और [यावत्] सिद्ध होगा ॥ ६ ॥

छठा अध्ययन समाप्त हुआ।

## सप्तम- अध्ययन।

**मूलम्—सत्तमस्स उक्खेवो- महापुर णगर, रत्तासोग उज्जाण, रत्तपाओ जक्खो, बले राया, सुभद्दा देवी महब्बले**

कुमारे रत्तवईपामोक्खाओ पचसयकन्नाओ, पाणिग्गहणं, जाव पुव्वभवो — णागदत्ते गाहावती, इंदपुरे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ ७ ॥

॥ सत्तम अज्झयणं समत्तं ॥

**भावार्थ—** महापुर नगर म रक्ताशोक उद्यान था। उसम रक्तपाद नामके यक्ष का यक्षायतन था। राजा का नाम बल था। रानी सुभद्रादेवी थी। महाबल कुमार था। रक्तवती प्रमुख पाच सौ कन्याओंके साथ पाणिग्रहण हुआ। तीर्थंकर भगवान् आए। पूर्वभव बताए— मणिपुर नगर में नागदत्त गाथापति ने इन्द्रपुर अनगारको दान दिया। (यावत्) वह सिद्ध हुआ॥७॥

सातवाँ अध्ययन समाप्त हुआ ॥

## अष्टम- अध्ययन।

मूलम्— अट्ठमस्स उक्खेवो—

सुघोसं णगरं, देवरमणं उज्जाणं, वीरसेणो जक्खो, अज्जुणो राया, तत्तवती देवी, भद्दनंदी कुमारे सिरिदेवी पामोक्खा पचसया जाव पुव्वभवे पुव्वा-महाघोसे णगरे धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥८॥

अट्ठम अज्झयणं समत्तं।

**भावार्थ—** सुघोष नगर म देवरमण उद्यान था। उसम वीरसेन नामके यक्ष का यक्षायतन था। राजा अर्जुन था। रानी तत्ववती थी। भद्रनंदी कुमार था। श्रीदेवी प्रमुख पाच सौ कन्याएं परिणाई गईं। पूर्व भव इस प्रकार है—महाघोष नगर मे धर्मघोष सेठ ने धर्मसिंह अनगार को दान देकर, यहां जन्म लिया है, (यावत्) सिद्ध हुआ ॥८॥

आठवां अध्ययन समाप्त हुआ।

## नववाँ अध्ययन ।

मूलम्— नवमस्स उक्खेवो—

चंपा नगरी, पुन्नभद्दे उज्जाणे, पुन्नभद्दो जक्खो, दत्ते राया, रत्तवई देवी, महचंदे कुमारे जुवराया, सिरिकन्तापामोक्खाणं पंचसया कन्ना, जाव पुव्वभवो तिगिच्छी णगरी जियसत्तू राया, धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥९॥

नवम अज्झयणं समत्तं

**भावार्थ—** चम्पा नगरी में पूर्णभद्र उद्यान में पूर्णभद्र नामक यक्ष का यक्षायतन था। राजा का नाम दत्त और रानी का नाम रक्तवती था। युवराज कुमार महचन्द्र था। श्रीकान्ता वगैरह पांच सौ कन्याओं से विवाह हुआ। पूर्व भव— चिकित्सा नगरी में जितशत्रु राजा ने धर्मवीर्य अनगार को दान दिया था। यह यहां उत्पन्न हुआ, (यावत्) सिद्ध होगा ॥९॥

नवमा अध्ययन समाप्त हुआ।

## दशवाँ अध्ययन

मूलम्— जति णं भंते! दसमस्स उक्खेवो—

एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं साएए णामं णगरं होत्था। उत्तरकुरुउज्जाणे पासमिओ जक्खो मित्तनंदी राया सिरिकन्ता देवी, वरदत्ते कुमारे वीरसेणा(वरसेणा) पामोक्खाणं पंचदेवीसया, तित्थयरागमणं, सावगधम्मं, पुव्वभवपुच्छा सतदुवारे नगरे विमलवाहणे राया धम्मरुचिनामं अणगारं एज्जमाणं पासति। पासित्ता पडिलाभिते समाणे संसारं परित्तीकये मणुस्साउए निबद्धे, इह उप्पन्ने, सेसं

जहा सुबाहुस्स कुमारस्स पासइत्ता जाव पव्वजा, कप्प तरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे । ततो महाविदेहे, जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुचिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमन्तं करेहिति । एवं खलु जम्बू! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते । सेवं भंते! सेवं भंते! सुहविवागा ॥ १० ॥

दसम अज्झयण समत्त ।

**भावार्थ—** हे भगवन्! दशवें अध्ययन का वर्णन कैसा है? हे जम्बू! उस काल में उस समय साकेत नामक नगर था। उस में उत्तर कुरु उद्यान था। पासमिक नामक यक्ष का यक्षायतन था। मित्रनन्दी राजा था। श्रीकान्ता रानी थी। वरदत्त कुमार था। उसके वीरसेना (या वरसेना) प्रमुख पाच सौ रानियां थीं। वहां तीर्थंकर पधारे। वरदत्त ने श्रावकधर्म स्वीकार किया। गणधर महाराज ने उसके पूर्वभव पूछे। भगवान् ने बताया— शतद्वार नगर में विमलवाहन राजा ने धर्मरुचि नामक अनगार को आता देखा। देखकर, विधिपूर्वक दान देकर ससार को हलका किया। मनुष्य आयु बांधकर यहां उत्पन्न हुआ है। शेष सब सुबाहुकुमारकी तरह जानना चाहिए— पौषधमें आध्यात्मिक विचार पैदा हुआ (यावत्) और दीक्षित हो गया। अनुक्रम से कल्पों में (यावत्) और सर्वार्थसिद्धि में देव होगा। पश्चात् महाविदेह क्षेत्रमें दृढ प्रतिज्ञ की तरह (यावत्) सिद्ध बुद्ध मुक्त और परिनिर्वृत होगा तथा सब दुखों का अन्त करेगा।

हे जम्बू! इस प्रकार श्रमण भगवान् महावीर ने (यावत्) मोक्ष को प्राप्त होते हुए सुख विपाक के दसवें अध्ययन में यह अर्थ प्ररूपण किया है। जम्बू स्वामी बोले—

हे भगवन् ! ऐसा ही है, ऐसा ही है!!
दसवां अध्ययन समाप्त हुआ

**मूलम्—** नमो सुयदेवयाए। विवागसुयस्स दो सुयक्खन्धा-दुहविवागो य सुहविवागो य। तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एकासरगा। दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति। एवं सुहविवागो वि। सेसं जहा आयारस्स ॥

इइ सुहविवागसुत्तं समत्तं ।

**भावार्थ—** श्रुत देवता के लिए नमस्कार हो। विपाक सूत्र के दो श्रुतस्कन्ध हैं—एक दुखविपाक और दूसरा सुखविपाक। उनमें से दुखविपाक में दश अध्ययन हैं और वे एक सरीखे हैं। इनका उपदेश दश दिनों में ही दिया जाता है। इसी प्रकार सुखविपाक भी जानना चाहिए। शेष सब आचाराङ्ग की तरह जानना चाहिए।

॥ इस प्रकार सुखविपाक सूत्र समाप्त हुआ ॥

इसे स्वमज्झाय टालकर अध्याय से पढ़ें

(सुखविपाकसूत्र)

# शुद्धि पत्र

| पृ | प | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ५ | २४ | तावणा | तत्वशा |
| ६ | ८ | सुवाहु | सुबाहु |
| ११ | ५ | वहा | वह |
| १३ | १० | मपडिय० | मपिडिय० |
| १७ | २३ | म | वृक्ष |
| १६ | ३ | सुभिक्ख | सुभिक्ख |
| २० | ३ | खजाने | यन खजाने |
| २० | २१ | ० टियहिय० | ०लिहिय० |
| २१ | ३ | पथ गवमाणी | पथण गवमाणी |
| २६ | ५ | उसी | उसी |
| ३८ | २५ | मैडे | पत्ते |
| ४७ | ५ | ० गधम्मलनाल० | ० गधम०नाल० |
| ४७ | २२ | प चात | पश्चात् |
| ४८ | १६ | चमस | चम्पक |
| ६५ | ६ | गाभे | गाभे |
| ६५ | २० | निरूवनेव | निम्बलेय |
| ६६ | २२ | भगवान का पक्ष | भगवान का मुँह पक्ष |
| ६८ | १५ | उठी हुई | उठे हुए |
| ७८ | १३ | और | आर |
| ७९ | १० | वला | नाला |
| ८६ | ७ | विहरा | विहार |
| ६४ | १६ | वास आदिक पत्तेकी | नास की |
| ११० | १ | यावत् | यावत् |
| १२० | १२ | तहारूयाण । थेराण | तहारूयाण थेराण |
| १२६ | १५ | ध य नामक यक्ष था | अन्य नामक यक्ष का यक्षायतन था |